

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पृष्ठिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥



जीवन भाजन संग्रह

-उर्मिला मैदीरत्ता



TWIN PUBLISHERS



जीवन बुक्स

24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

ॐ ॐ

क्र. सं.	विषय	पुष्ट सं.
‘अ’		
1.	अमर आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ	1
2.	अलख धाम की है तू....	2
3.	अंदर सतगुरां दा डेरा	3
4.	अर्जुन से बोले इक रोज	4
5.	अजब प्याला इबादत का	5
6.	अमृत है सतगुरु का नाम	6
‘आ’		
7.	आत्म रस के पीने वाले	7
8.	आवाज देकर प्रभु न बुलाओ	8
9.	आसरां इस जहाँ का मिले	9
10.	आनन्द आ गया जीवन में	10
‘इ’		
11.	इक राम के दो दो रूप मिले	11
12.	इस मैं मेरी नू मार मैं विच....	12
13.	इस माटी में सुन मेहरबां	13
‘उ’		
14.	उठत सुखिया बैठत सुखिया	14
‘ए’		
15.	एक घड़ी आधी घड़ी	15-16
16.	एक से अनेक हर जगह उसका	17
17.	ऐ मेरे प्यारे गुरु	18
‘ऐ’		
18.	ऐ गुरु ऐ गुरु मुझको तेरी कसम	19
19.	ऐ री मैं तो प्रेम दीवानी	20
20.	ऐसा जाम पिला मेरे सतगुरु	21

ॐ ॥ ॐ

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
‘ओ’		
21.	ओम है जीवन हमारा	22
22.	ओम अक्षर बोल	23
23.	ओम जपा करो	24
24.	ओम-ओम जपो	25
‘क’		
25.	किया मैने संतो से व्यापार	26
26.	कौन कहता है के दीदार	27
27.	कलयुग विच तेरा अवतार	28
28.	कुछ ऐसे सतगुरु होते हैं	29
29.	कुछ गिनती के साँसे हैं	30
30.	कुछ न बिगड़ेगा तेरा सतगुरुं	31
31.	के जीवन दा मैनू आनंद	32
32.	किथों ने रंगाईयां अंखा	33
33.	किवे चेहरे तो नजर	34
34.	कन्हैया को इक रोज	35
35.	कन्हैया ले चल परले पार	36
36.	कौन मजिल की कहे	37
37.	कोई श्याम का दीवाना	38
38.	करुणा जो बरसे नैनो से	39
‘ग’		
39.	गुरु के समान नहीं दूसरा	40
40.	गुरुदेव मेरे दाता हमको ऐसा	41
41.	गुरुदेव दया भण्डार भरे	42
42.	गुरु प्रेम रोग है	43
43.	गुरु ने दिया आत्म ज्ञान	44

ॐ

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
44.	गुरु घट-2 वसदा ऐ-2	45
45.	गुरु तेरे प्यार में कुछ ऐसा	46
46.	गुरु महिमा है सबसे बड़ी	47
47.	गाइये महिमा गुरु की	48
48.	गुरु तेरे प्रेम में भीगा	49
49.	गुरा दे घर आन वाल्याँ	50
50.	गर पूछो कैसे पीते हैं	51
51.	गुरु मात पिता गुरु	52
52.	गुरु तेरे दरबार में	53
53.	गुरु मेरी पूजा	54
54.	गुरु वचनों को रखना	55
55.	गुरु तेरे प्रेम में भीगा	56
	‘च’	
56.	चरण कमल तेरे धोये-2	57
57.	चरणों में तेरे रहकर	58
	‘छ’	
58.	छोंप तिलक सब छीन ली	59
	‘ज’	
59.	जब से हम सतगुरु	60
60.	जो मस्ती की मस्ती	61
61.	जब अपने ही घर में खुदाई	62
62.	जहां तक जाती दृष्टि है	63
63.	जब मन में लगन लग जाए	64
64.	जरा जीव विचारों मन में	65
65.	जरा तो इतना बता दो	66
66.	जब मन मीठा होये	67

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
67.	जर्ज जर्ज में ज्ञानकी है	68
68.	जिसके हृदय में हरि	69
69.	जीवन की घड़ियाँ वृथा	70
70.	जो चुप कर जाता	71
71.	जो तू है सो मैं हूँ	72
72.	जो भी आया बिक गया	73
73.	जो आत्मा में टिका दे	74
74.	जीवन मेरा गुलजार	75
75.	जद मैं ज्ञान दा सुरमा	76
76.	जरा आ शरण मेरे	77
77.	जंगल में जोगी	78
	‘त’	
78.	तेरा भाणा मीठा लागे	79
79.	तुम शरणाई आया ठाकुर	80
80.	तू अपने घर में जरूर	81
81.	तेरी शरण में जो आ गया	82
82.	तैनू राम कवा कि मैं कृष्ण	83
83.	तू प्यार का सागर है	84
84.	तेरा दर्श पाने को	85
85.	तेरे दर ते आ गई आ	86
86.	तेरे चरणों की धूल प्रभु	87
87.	तेरे जैसा कौन है सतगुर	88
88.	तेरी मेहरबानी का है बोझ	89
89.	तेरे ऐहसान का बदला	90
90.	तेरे नाम का सिमरन करके	91
91.	तू तो बेमिसाल है सतगुर	92

ॐ ॐ

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
92.	तू मेरा मैं तेरा	93
93.	तेरी खूबियां गैर क्या जाने	94
94.	तू राधे-2 ते गोपाल	95
95.	तू तो इब्बो हुआ	96
96.	तेरे फूलों से भी प्यार	97
97.	तन शाँत है	98
98.	तुम करते हुए भी	99
99.	तेरा परबाना बेहतर है	100
	‘द’	
100.	देखी ज्योति नि० की	101
101.	देखो संतो दिन सुहाना	102
102.	दरबार में मेरे सतगुरु के	103
103.	दस्तुरे मुहोव्वत बस है	104
104.	दुनिया में आके बंदिया	105
105.	दादा के ज्ञान वे बो	106
106.	दिल दे सिंहासन उते	107
107.	दर्शन पायो तेरा जब्से	108
108.	दीवानों का मेला है	109
	‘न’	
109.	न पूछो ये मुझसे	110
110.	ना रख किसी नाल	111
111.	ना मैं मन ही रहा	112
112.	ना कर अब तू मेरा-2	113
113.	ना जाना राम कैसा रे	114
114.	नारायण जिसके हृदय माही	115
115.	ना तुझमै ना मुझमें जुदाई	116

ॐ ॐ

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
116.	नी मैं कमली गुरु	117
117.	नजरो से देख प्यारे	118
118.	नागीनया बन के	119
119.	ना कोई इच्छा	120
	‘प’	
120.	पल-2 संत तुझे समझाए	121
	‘ओ’	
121.	पिला दे आ साहिबा	122
122.	प्रेम नाम दा डड़न खटोला	123
123.	पीले ना हरि नाम	124
124.	पिंयो रे राम रस	125
125.	पीती-3 अज मैं पीती	126
126.	प्रभु प्यारे ने कृपा करी	127
127.	प्यासा कोई मुसाफिर	128
128.	पी के शराब मुर्शिद	129
129.	पूरा ध्यान लगा गुरुकर	130
130.	प्रेम जब गुरु से हो गया	131
131.	प्रेम सुधा बरसा	132
132.	पहचान सके तो पहचान	133
133.	प्रभू आपकी कृपा से	134
	‘फ’	
134.	फलक से आज उत्तरा तू	135
	‘ब’	
135.	ब्रह्म ज्ञान की सीढ़ियों पे	136
136.	बिना राम दे तू किसी नाल	137
137.	बसाएँ आओ प्रेम नगरीया बसाएँ	138

ॐ ॐ

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
138.	बहिश्ती पींगा पाईयां	139
139.	बनवारी रे, जीने का सहारा	140
140.	ब्रज के नन्द लाल	141
141.	बेर चुन-चुन झोली	142
142.	बुतखाने के पद्म में	143
143.	ब्रह्म से ब्राह्मण पधारा	144
	भ	
144.	भीतर है सखा तेरा	145
145.	भक्तो फूल बरसाओ	146
	'म'	
146.	मेरे मन वाली मटकी	147
147.	मन लागो मेरो राम	148
148.	मेहरां वालियां साईया रखो	149
149.	मेरी रसना से प्रभु तेरा	150
150.	मेरी अखियाँ विच श्याम	151
151.	मैं आप ब्रह्मानन्द	152
152.	मैं कण-2 वासी, हर घट	153
153.	मेरा सतगुरु प्यारा भीत है	154
154.	मेहरबान-2 सतगुरु मेरा	155
155.	मेरी जिंदगी में क्या था	156
156.	मैंने ऐसा सतगुरु पाया	157
157.	मुझे मेरी मस्ती कहाँ	158
158.	मना मौज बड़ी हरि	159
159.	मैं तो आई फख्त तेरे	160
160.	मेरे मनवां तू सुन	161
161.	मैं सारी उम्र गुजारां	162

ॐ ३ अ

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
162.	मेरा सतगुरु मेरे नाल	163
163.	मैंनूं लादो श्याम जी	164
164.	मेरी बिगड़ी बना दो नाथ	165
165.	मैं तो बसा तेरे मन में	166
166.	मनां सांवरे नूं किस तरह	167
167.	मजा है जो फकीरी मैं	168
168.	मैं क्या चाहता हूँ	169
169.	मेरे बांके विहारी दा	170
170.	मुरली मोहन दी सखियां	171
171.	मेरे सतगुरु तेरा तकना	172
172.	मुहब्बत की बस्ती	173
173.	मेरे गुरुदेव चरणों में	174
174.	मन मत छुबाये	175
175.	मैं क्या जानूँ	176
176.	मेरे प्यारे गुरु	177
177.	मैंने गुरुवर को देखा	178
178.	मैं तो श्याम संग	179
179.	माही मैं तो गोविन्द के	180
180.	महफिल रुहाँ दी	181
181.	मोपे साहे रंग डाला	182
182.	मेरे नाथ नूं है	183
183.	मैं ओम में ऐसे रम जाऊँ	184
184.	मेरे सतगुरु दीनानाथ	185
185.	मन मत छुबोये	186
186.	मिला हमको प्यारा भगवन्	187
187.	मैं श्याम सुन्दर नाल	188

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
188.	मेरे सतगुरु रंगरेज	189
189.	मेरा दिल तो दीवाना हो गया	190
	'य'	
190.	यह मत कहाँ से पाई रे साधो	191
191.	ये सतसंग वाला प्याला	192
192.	ये भेद सनम मुझे आज	193
193.	ये तन मन जीवन सुलग डठे	194
194.	ये सैर ब्या अजब अनोखा	195
195.	ये मस्तो की महफिल	196
196.	ये जग दीवानों की बस्ती	197
197.	ये मोहब्बत की बातें	198
198.	यहाँ करने उद्धार भगवान	199
199.	ये तो सच है	200
	'र'	
200.	रिमझिम बरसे अमृत धारा	201
201.	रुक सका ना मैं जमाना	202
202.	रहमता करदा ए झोलियाँ	203
203.	रंग वाले देर क्या हैं	204
204.	राजी है हम उसी मैं	205
205.	राम नाम की नैया लेकर	206
206.	रोम-2 मैं लिखवा लो ओंप	207
207.	राम-2 कहते अब तो	208
208.	राधे कौन से पुण्य किए	209
209.	राधिका गौरी से	210
	'ल'	
210.	लोकी कहंदे ने हाँ	211
211.	लगन सतगुरु से ला बैठे	212

ॐ ३३ ॐ

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
212.	लुट लो जिसका जो चाहे	213
213.	लगे जिन्दड़ी नू आन	214
214.	लिखन वाल्या तू होके	215
215.	लौकी मैनू पूछदे ने	216
	‘व’	
216.	वचन गुरु के बोल	217
217.	वृन्दावन चिट्ठियाँ पावांगी	218
	‘श’	
218.	शुक्रानों के गीत हम गाये	219
219.	श्याम दिता मैनूं मस्त बना	220
220.	शुकराने गाये दिल घड़ी	221
221.	श्याम राधा दे छारे	222
	‘स’	
222.	सतगुरु मिले मेरे सारे दुख	223
223.	सतगुरु भगवान को प्यारे	224
224.	सत्संग में आने से ही मेरी दृष्टि	225
225.	सच का सौदा करने वाले	226
226.	सफल हुआ है उसी का जीवन	227
227.	साधो सहज समाधि भली	228
228.	साँवरे से मिलने का	229
229.	सबसे सुंदर सबसे प्यारा	230
230.	सतगुरु मैं तेरी पतंग	231
231.	सतगुरु पाया ते हो गईयाँ	232
232.	सतगुरु तुम लो हो मेरे कुम्हार	233
233.	सुनो मेरे प्यारे	234
234.	स्वासां दी माला नाल	235

ॐ ३ अ

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
235.	संता दे बसीले अंसा राम	236
236.	सतगुरु हो महाराज मोपे	237
237.	साढ़े बेड़े विच पैन लश्कारे	238
238.	सइयो नी सोहनी सूरत वाला	239
239.	सब दे अंदर राम दिल	240
240.	सानु तार देवेगी	241
241.	साधो सोहम सोहम बोलो	242
242.	सत्संग वाली नगरी	243
243.	सारे जहाँ के मालिक	244
244.	सुख आते हैं	245
245.	सदके मैं जावां	246
246.	साधों चुप का	247
247.	संत ज्ञान की निर्मल गंगा में	248
248.	सुख सागर में आय	249
	‘ह’	
249.	है कृपा तेरी मेरे सतगुरु	250
250.	हम तो तेरे दीवाने हैं	251
251.	हर बक्त हँसी, हर बक्त खुशी	252
252.	हो जाये बंद आँखें	253
253.	हमने देखा है प्यार आँखों में	254
254.	हम अपनी झाँकी देख चुके	255
255.	हरि ओम शिवोहम ब्रहास्मि	256
256.	हे गुरु हे दयाल	257
257.	हुक्में अन्दर सब कोई बाहर	258
	‘ज्ञ’	
258.	ज्ञान गुरु का हृदय से न भूलो	259

ॐ शं ख

1

अमर आत्मा सच्चिदानन्द में हूँ

शिवोहम् शिवोहम् शिवोहम् शिवोहम्

1. अखिल विश्व का जो परमात्मा है

सभी प्राणियों का वही आत्मा है

वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँशिवोहम्

2. जिसे शस्त्र काटे न अग्नि जलाये

गलाए ना पानी ना मृत्यु मिटाये

वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँशिवोहम्

3. अजर और अमर जिसको वेदों ने गाया

यही ज्ञान अर्जुन को हरि ने सुनाया

वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँशिवोहम्

4. अमर आत्मा है मरणशील काया

सभी प्राणियों के जो भीतर समाया

वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँशिवोहम्

5. है तारों सितारों में प्रकाश जिसका

है सूरज और चंदा में आभास जिसका

वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँशिवोहम्

6. जो व्यापक है कण-कण में है वास जिसका

नहीं तीन कालों में है नाश जिसका

वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँशिवोहम्

अलंख धाम की है तू धारा जपले ओम-ओम प्यारा

1. पांच तत्व का देखन हारा तीन गुणों का साक्षी प्यारा
चेतन है चमकारा जपले ओम-ओम प्यारा

2. सत्चित आनन्द तेरा रूप तू ही साक्षी ब्रह्म स्वरूप
तेरा तुझ में साई प्यारा जपले ओम-ओम प्यारा

3. जागो-जागो करो विचार अपने ज्ञान की करो संभाल
ऐसा अमोलक श्वास न जाए जपले ओम-ओम प्यारा
हरि ओम हरि ओम हरि ओम बोल

4. मन का मंदिर मन में खोल
मन मंदिर में है भगवान
वही देखे जो श्रद्धावान
हरि ओम

5. मन में तीर्थ गंगा जमना
वो ही नहाए जो है सतकर्मा, हरि ओम

6. ब्रह्म ज्ञान तेरे मन मंदिर में
वो ही पाए जो शरण में आये
हरि ओर

ੴ ਸਤਿਗੁਰ

3

ਅੰਦਰ ਸਤਗੁਰਾਂ ਦਾ ਡੇਰਾ ਅੰਦਰ ਜੋਤ ਜਗਦੀ
ਅੰਦਰ ਪੂਰੇ ਗੁਰਾਂ ਦਾ ਡੇਰਾ ਅੰਦਰ ਜੋਤ ਜਗਦੀ
ਅੰਦਰ ਜੋਤ ਜਗਦੀ ਤੇ ਨਿਰੰਲ ਜੋਤ ਜਗਦੀ
ਅੰਦਰ ਸਤਗੁਰਾਂ

1. ਜੇਡਾ ਜੋਤ ਨੂੰ ਜਗਾਵੇ ਪਹਲੇ ਮਨ ਅਪਨਾ ਸਮਝਾਵੇ
ਪੀਛੇ ਭੇਦ ਗੁਰਾਂ ਦਾ ਪਾਵੇ ਅੰਦਰ ਜੋਤ
2. ਅੰਦਰ ਜੋਤ ਦੇ ਲਈ ਸੂਰਜ ਚਮਕਨ ਕਰ੍ਹ ਹਜ਼ਾਰੇ
ਜਿਸ ਦਾ ਅੰਤ ਨਾ ਪਾਰਾ ਵਾਰ ਅੰਦਰ ਜੋਤ
3. ਨੀ ਤੂ ਅੰਦਰ ਪਾਲੇ ਝਾਤ ਜੋਤ ਜਗਦੀ ਹੈ ਦਿਨ ਰਾਤ
ਅੰਦਰ ਬੈਠੇ ਸਤਗੁਰੂ ਆਪ ਅੰਦਰ
4. ਤੇਰੇ ਅੰਦਰ ਮਾਲ ਖ਼ਜਾਨਾ ਨਾ ਜਾ ਫੁੰਢਨ ਦੇਸ਼ ਬੇਗਾਨਾ
ਅੰਦਰ ਪਾਲੇ ਅਬ ਤੂ ਝਾਤ..... ਅੰਦਰ
5. ਨੀ ਤੂ ਪ੍ਰਭੂ ਨਾਲ ਪਾਲੇ ਧਾਰ, ਤੇਰਾ ਹੋ ਜਾਏ ਬੇਡਾ ਪਾਰ
ਧੇ ਤੋ ਝੂਠਾ ਹੈ ਸ਼ਸਾਰ ਅੰਦਰ ਜੋਤ

अर्जुन से बोले एक रोज मोहन मदन
भक्त संकट में आये तो मैं क्या करूँ
सीधी मुक्ति की राहें चलाई मैंने

वो टेढ़ी राहों में जाये तो मैं क्या करूँ

1. सारी सृष्टि रची संग में माया रची
कर्म करने को बुद्धि और शक्ति रची
मोह यमता में फँसकर तड़पता रहा
फिर मुझे भूल जाये तो मैं क्या करूँ

2. कर्म करना मनुष्यों का कर्तव्य है
उसमें तेरी सफलता मेरे हाथ है
कामयाबी मिले होवे कृपा मेरी
वो दिल में अभिमान लाये तो मैं क्या करूँ

3. राम का नाम दुनिया में अनपोल है
ना जपे तो मनुष्य की बड़ी भूल है
पाप करते सारी जिंदगी ढल गई
पीछे आंसू बहाये तो मैं क्या करूँ

4. अर्जुन वेदो पुराणों में लिखा यही
हरना दुखियों के दुखड़े ये भक्ति मेरी
रात दिन वेद गीता को पढ़ता रहा
फिर अमल में ना लाये तो मैं क्या करूँ

5. कर्म अच्छे करोगे मुझे पाओगे
कुकर्मा बनागे तो पछताओगे
ज्ञान मोक्ष का अर्जुन सुनाया मैंने
कोई माने ना माने तो मैं क्या करूँ।

अजब प्याला इबादत का जो सतगुरु ने पिलाया है
अजब रंगत अजब मस्ती अजब नशा सा छाया है

1. नशा इक बूँद था काफी लबालब पी गए प्याले
मय में झूब गई आंखे तो दुनिया को भूलाया है
2. जुबां गुंगी हुई इस जान के दिल को होश है बाकी
जिधर देखु तू ही तू है जो हर शय में समाया है।
3. खुदी की बेख काटी है दुई का हो गया खातम
हुआ जब साफ आईना अकस अपना दिखाया है
4. जुदाई और वसल यह था के दिल का वहम ही सारा
गई जब होश उड़ सारी तो खुद को खुद में पाया है
5. नशे ने अकल गुप्त कर दी गये जब राम के कूचे
सतगुरु आब में गोता हुबाबों में लगाया है।

अमृत है सतगुरु का नाम पीजा घोल-घोल के

1. अमृत पी गई मीरा बाई हो गई श्याम से प्रेम सगाई
वो तो हो गई मतवाली प्रेम में भीग-भीग के
अमृत है सतगुरु
2. पीके राम नाम दा प्याला नाचे हरदम बजरंग बाला
वो तो दिखलाये सियाराम सीना खोल-खोल के
अमृत है सतगुरु
3. इसका नाम बड़ा अनमोल हमको सिखलाए सतगुरु रोज
हो जा भवसागर से पार मुख से बोल-बोल के
अमृत है सतगुरु
4. सतगुरु नाम के हीरे पोती तेरे दिल में जगा दे ज्योति
देने वाला है दातार, देता भर भर के
अमृत है सतगुरु
5. जितनी पी सकता है पी ले, पी के तू मस्ती मैं जी ले
महिमा रोम रोम गाये, अनुभव ले ले के
अमृत है सतगुरु

ॐ ॐ ॐ

7

आत्म रस के पीने वाले रस तो पीला दे
ब्रह्मज्ञान से मस्त बना दे

1. कौन हूँ मैं और कहां से आई
किसने है ये सृष्टि रचाई येही तो मेरा भ्रम मिटा दे
2. भेद भरम मेरा रहे ना कोई
दुख सुख जग वाला व्यापे न कोई
ऐसी कोई युक्ति बता दे
3. ब्रह्म ही ब्रह्म हर जगह समायो
ब्रह्म बिना कुछ नजर ना आयो
ऐसा शुद्ध रूप मोहे बना दे ब्रह्म ज्ञान
4. स्वर्ण सुशोपति को देखन हारा
जागृत का तुने किया है पसारा
ऐसी अखंड वृत्ति बना दे
5. सुनने से मेरा कुछ नहीं बनता
पढ़ने से मेरा कुछ नहीं बनता
ब्रह्म ही ब्रह्म में गोता लगा दे

आवाज देकर प्रभू ना बुलाओ
है नजदीक नजरों से पर्दा हटाओ

1. है जर्रे-जर्रे में वो ही समाया
मगर वो किसी की न दृष्टि में आया
है आनंद दाता आनंद पाओ

2. नहीं नस व नाड़ी के बंधन में आता
नहीं जन्म पाता नहीं दुख उठाता
अगर मिलना चाहो तो गुरु शरण आओ

3. है अपने ही अंदर कहाँ ढूँढते हो
जमीं पर है क्यों आसमाँ ढूँढते हो
सरे आम देखो जो नजरें झुकाओ

4. न मंदिर में पाया न मस्जिद में पाया
है कण में व्यापक सभी में समाया
अंदर में है व्यापक अंदर में ही पाओ

1. आसरा इस जहाँ का मिले न मिले,
मुझको तेरा सहारा सदा चाहियें
चाँद तारे फलक पर दिखे न दिखे,
मुझको तेरा नजारा सदा चाहिये।

2. मेरी धीमी है चाल और ये पथ है विशाल
हर कदम पर मुसीबत है अब तू सम्भाल
पैर मेरे थके ये चले न चले
मेरे दिल को इशारा तेरा चाहिए। आसरा

3. यहाँ खुशियाँ हैं कम और ज्यादा है गम,
जहाँ देखो वहाँ हैं भ्रम ही भ्रम
मेरी चाहत की दुनिया बसे ना बसे,
मेरे दिल में बसेरा तेरा चाहिये। आसरा

4. कहीं बैराग हैं कहीं अनुराग है
जहाँ बसते हैं माली वहीं बाग है,
मेरी महफिल की शमां जले ना जले,
मेरे दिल में उजाला तेरा चाहिये। आसरा

ॐ ॐ ॐ

10

आनन्द आ गया जीवन में

प्रभू दूजी कोई चाह ना बाकी, आनन्द

1. क्रोध के बदले में करुणा जगी

काम क्रोध लोभ मुझमें नहीं है

गलता है-2 इसमें मोह भी तेरे मनन से

अहम भी शुद्ध है जीवन में, प्रभू दूजी

2. कर्ता कराने वाला तुमको याद है

अपनों के बीच में भी मन में वैराग है

जैसे आये वैसे वापिस जाये

बंधन है नहीं, जीवन में बंधन ही नहीं, प्रभू

3. तेरी छवि देखूँ हर इक रूप में

तेरा ही स्वर सुनूँ हर इक-इक शब्द में

रहे हरदम-हरदम तेरे प्यार में ढूबा

तुम बिन कौन है जीवन में, प्रभू दूजी

4. तूने लगाई है आग ये मन मे

आके तू ही बुझाये सतगुरु देह मे

गुरु गोविन्द इनमें भेद ना कोई

सब कुछ पा गये जीवन में, प्रभू दूजी

इक राम के दो दो रूप मिले
 इक राम गुरु इक रामैया
 जिसे देख के मन का कमल खिले
 इक राम गुरु इक रामैया

1. इक सदियों से चुपचाप खड़ा
 इक मीठे बोल सुनाता है
 सतगुरु बिन इसकी कदर नहीं
 सतगुरु बिन नजर ना आता है
2. अवतार मेरा इक दीपक है
 सतगुरु मेरा इक ज्योति है
 दोनों के बिन ना काम चले
 दोनों की जरुरत होती है।
3. वो राम नजर तब आते हैं
 जब नजर यहां से मिलती है
 जो नजर के पर्दे खोल सके
 इस दर वो दबाई मिलती है

ੴ ੳ ੴ

12.

ਇਸ ਮੈਂ ਮੇਰੀ ਨੂ ਮਾਰ ਮੈਂ ਵਿਚ ਬਡੀ ਜੁਦਾਈ ਏ
ਇਸ ਮੈਂ ਨੁ ਕਰ ਲੋ ਦੂਰ ਅੰਦਰ ਦੀ ਕਰੋ ਸਫਾਈ

1. ਇਸ ਮੈਨੇ ਝਾਗੜਾ ਪਾਯਾ ਸਾਰੇ ਜਗ ਵਿਚ ਸ਼ੋਰ ਮਚਾਯਾ
ਮੇਰੇ ਹਥ ਭੀ ਕੁਛ ਨ ਆਯਾ ਇਸਨੇ ਅੰਧੀ ਮਚਾਈ ਏ
2. ਤੂ ਕਰਦਾ ਮੈਂ ਨਾ ਮੈਂ ਨਾ ਇਸ ਜਗ ਦੇ ਵਿਚ ਸੁਖ ਹੈ ਨਾ
ਕੁਛ ਕਰ ਲੋ ਨੇਕ ਕਮਾਈ ਗੁਰੂ ਨੇ ਬਾਤ ਬਤਾਈ ਏ
3. ਤੂ ਛੋਡ ਸ਼ਾਰੀਕਾਚਾਰੀ ਬਨ ਜਾਯੇ ਜਗਤ ਦਾ ਸਾਈ
ਤੂ ਦਰ-ਦਰ ਨਾ ਭਟਕਾਈ ਗੁਰੂ ਨੇ ਸਾਂਚ ਬਤਾਈ ਏ
4. ਸਥ ਭਾਈ ਬਨਥੁ ਤੇਰੇ ਛੱਡ ਚਲੇ ਨੇ ਸਾਥੀ ਮੇਰੇ
ਚਲ ਦੇਖ ਗੁਰਾਂ ਦੇ ਡੇਰੇ ਗੁਰਾਂ ਨੇ ਸਾਂਗਤ ਲਾਈ ਏ
5. ਮੈਂ ਤੋ ਜਨਮ-ਜਨਮ ਦੀ ਭਟਕੀ ਗੁਰੂ ਵਚਨਾ ਤੋ ਮੈਂ ਅਟਕੀ
ਸਤਗੁਰੂ ਨੇ ਪੂਰ੍ਣ ਕਿਯਾ ਗੁਰੂ ਨੇ ਬਾਤ ਬਤਾਈ ਏ

इस माटी में सुन मेहरबां जब तलक एक भी स्वास हैं
तेरा नाम ना बिसराऊँ मैं, होठों पर ये अरदास है।

1. दुनिया का मेला है रंग भरा
कहीं खो ना जाऊँ मैं भीड़ में
तेरी अंगुली ना छोड़ूं कभी
तू हर जगह मेरे साथ हो
2. ऋतु आयेगी ऋतु जायेगी
पर विनती है मेरे साहिबा
बरसात तेरी मेहर की
जीवन में बारहों मास हो
3. सबको मिले तेरी बख्शीशें
सबको मिले तेरी रहमते
हर एक दिल में हो रोनके
दाता ना कोई उदास हो
4. सत्संग है मेरा आईना
खुद को स्वारूँ मैं प्रीत से
तेरा वचन मेरा हुक्म हो
तेरे बोल मेरे लिबास हो
5. सदगुरु तेरे चरणों में
जनत से ज्यादा सुख कहीं
सिर भी मेरा झुका रहे हर घड़ी
अंदर से दिल भी उदास हो।

ੴ ॥ ੫ ॥

14

उठत सुखिया बैठत सुखिया
भय नहीं लागे जहां ऐसा बुझिया

1. राखा एक हमारा स्वामी
सकल घटा का अंतरयामी-2

2. सोए अचिन्ता जागे अचिन्ता
जहां तहां प्रभू तू वर्तन्ता

3. घर सुख बसया बाहर सुख पाया
कहे नानक गुरु मंत्र द्रढ़ाया-2

एक घड़ी आधी घड़ी आधी से पून आधे रे
संतन सेती गोष्ठी जो किन्हो सो लाभ रे

1. कबीरा मन पंछी भयो, उड़-उड़ दह दिशा जाए
जो जैसी संग करे वैसा ही फल पाए रे
2. कबीरा जिस मरने से जंग डरे मेरे मन आनंद
मरने से ही पाइये पुर्ण परमानन्द रे।
3. कबीरा सुमरनी काठ की क्या दिखलाए राम
हृदय नाम न चेतिये यह स्मिरण क्या होये रे
4. कबीरा कोड़ी-कोड़ी जोड़ के जोड़िया लाख करोड़
चलती बार ना कुछ चले लियां लंगोटी टोड़ रे
5. कबीरा राम नाम की लूट है लूट सके तो लूट
अंत समय पछताएगा जब प्राण जायेंगे छूट रे
6. कबीरा वैद मरा, रोगी मरा, मरा सकल संसार
एक कबीरा मरा जिसे कोई ना रोवन हार रे
7. कबीरा माला काठ की धागा लो पिरोये
अंदर घुण्डी पाप की बाहर राम नाम होये रे

ॐ ॐ

8. कबीरा संगत दो जने एक कबीरा एक राम
राम तो दाता मुक्ति के संत जपावे नाम रे
9. कबीरा वैद कहे मैं हूँ बड़ा दारू मेरे पास
ये तो वश गोपाल के जब भावे ले जाये रे
10. कबीर माया डोलनी पवन झकोर न हार
संतन माखन खाया छाछ पिए संसार
11. कबीरा कुत्ता राम का, पोती मेरा नाम
गले हमारे जेवड़ी ज्यूं खीचें त्यूं जाये
12. कबीरा संगत साध की साहिब आवे याद
लेखे में वो ही घड़ी बाकी सब बरबाद रे
13. कबीरा मैं क्यों चिन्ता करूँ मम चिन्ते क्या होये
मेरी चिन्ता हरि करे मुझे ना चिन्ता होये रे
14. कबीरा कसौटी राम की झूठा टिके ना कोय
राम कसौटी सो साहे जी मर जीवा होय
15. कबीरा चोट सहेली सी लगी लागत लियो
चोट सहाय शब्द की तिस गुरु का मैं दास
16. माया मरी न मन मरा मर मर गए शरीर
आशा तृष्णा ना मरी कहे दास कबीर
17. कबीरा ऐसा व्रत लियो जो ले सके ना कोय
घड़ी एक विसरू राम को तो ब्रह्म हत्या मोहे होय

ॐ ॐ ॐ

16

एक से अनेक हर जगह उसका नजारा है
 वो ही तो इक सहारा है

1. फूल में जैसे खुशबू समाई है, वो सबमें है समाया
 दिल की धड़कन में वो गूंजता हर पल
 वो नस-2 में समाया
 भूल जाते हैं, कि कितना पास वो हमारे है....
2. साथ है अपने वो सामने अपने
 वो है तो हम नहीं है
 ढूढ़ना छोड़ो दुनिया के मेले में
 वो है तो हम नहीं है
 झाँक लो अंदर उसने आज भी पुकारा है.....
3. एक पहेली है गुरु मुख से जानी है
 सब मैं हूं सब मुझमें है
 बूंद सागर है सागर भी बूंद है
 बूंदो से सागर बना है

ਖੁਲ੍ਹੇ ਖੁਲ੍ਹੇ

17

ए मेरे प्यारे गुरु जन्मों से बिछुड़े गुरु
 तुझ पे मैं कुरबान
 तू ही मेरी जिंदगी तू ही मेरी बंदगी
 तू ही मेरी जान.....

1. गुरु के आंचल से जो आये उन हवाओं को सलाम
 गुरु के मुख से निकली वाणी को मेरा शत् शत्
 प्रणाम
 जितनी प्यारी याद तेरी उतना प्यारा तेरा ज्ञान
 तुझ पे मैं कुरबान.....
2. मैंने माँगी तुझ से खुशियाँ तूने दिया आत्म आनंद
 मैंने सुनाया रोग अपना, तूने मुझे निर्मल किया
 द्वैष अब किस से करूँ सब जगह है तेरा धाम
 तुझ पे मैं कुरबान....
3. ज्ञान की ज्योति सदा दिल में मेरे जलती रहे
 एक इच्छा ना रहे ये भावना पलती रहे
 और तो कुछ भी नहीं बस रह गया है
 तेरा प्यार, तुझ पे मैं कुरबान.....

ॐ ॐ

18

ऐ गुरु ऐ गुरु मुझको तेरी कसम
 तेरे वचनों में खुद को मिटा जायेंगे
 फूल क्या चीज है तेरे कदमों में हम
 भेंट अपने सरों की चढ़ा जाएंगे। ऐ गुरु

1. सह चुके हैं सितम बहुत माया के हम
 अब करेंगे हर एक बार का सामना
 रुक सकेगा नहीं कहीं मेरा कदम
 चाहे हो खूनी तलवार का सामना ऐ गुरु
2. सर पे बांधे कफन ले लगा के अगन
 मौत को भी गले से लगा जाएँगे।
 कोई योगी यहां कोई ज्ञानी यहां
 कोई त्यागी यहां कोई वैरागी यहां ऐ गुरु
3. तेरी पूजा की थाली में लाए है हम
 फूल हर रंग के और हर डाल के
 नाम कुछ भी सही पर लगन एक है
 ज्योति से ज्योति दिल की जगा जाएँगे ऐ गुरु
4. जब भी आंधी उठे तेरे जीवन में
 ज्ञान वाले तुम आंसु बहाना नहीं
 पर विषय भोग की आग में जब जलो
 उस घड़ी तुम गुरु को भुलाना नहीं
 ज्ञान ज्योति से मन का अंधेरा गया
 हर कदम से कदम को मिला जायेंगे
 ऐ गुरु.....

ॐ ॐ ॐ

19

ऐ री मैं तो प्रेम दीवानी

मेरा दर्द ना जाने कोय

घायलं की गति घायल जाने

और न जाने कोय

मीरा के प्रभु गिरधर नागर

किस विधि मिलना होय

मीठी पीर तो तब ही मिटेगी

जब वैध सावरिया होय

गगन मंडल में सेज पिया की

ऐसा जाम पिला मेरे सतगुर रहे ना जग दी लोड़
थोड़ी जई होर पिला दे, होर

1. प्रेम प्याला मीरा पीता - 2

प्याले विचों दर्शन कीता

दर्शन करके कहवी मीरा, जय हो नन्द किशोर
थोड़ी जई होर पिला दे होर

2. प्रेम प्याला घने पीता, पत्थरा विचों दर्शन कीता

साग रोटी रब्बा के कहदां, चल खेता दी ओर
थोड़ी जई होर पिला दे

3. प्रेम प्याला भीलनी पिता, बेरा विचों दर्शन कीता

जूठे बेर रब्बा के कहंदी राम है मेरे कौल
थोड़ी जई होर पिला दे

4. अजे भी होश है बाकि मैंनू थोड़ी जई होर पिला दे

प्रेम तेरे विच दौड़ी आवां, रहे ना जग दी लोड़
थोड़ी जई होर पिला दे

5. प्रेम प्याला मैं भी पीता, बसुंरी विचो दर्शन किता

बंसुरी वी आवाज सुन के, मैं अंदरो ही दर्शन किता
थोड़ी जेई होर पिला दे

ओम है जीवन हमारा ओम प्राण आधार है

ओम है कर्ता विधाता ओम पालन हार है

1. ओम है दुख का विनाशक, ओम सर्वानंद है
ओम है बल तेजधारी ओम करुणानंद है।
2. ओम सब का पूज्य है, ओम का पूजन करें
ओम ही के ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करें।
3. ओम के गुरु मंत्र जपने से रहेगा शुद्ध मन
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी धर्म में होगी लगन
4. ओम के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जाएगा
ओम का ये जाप हमको मुक्ति तक पहुँचायेगा

ओम अक्षर बोल, मन में अमृत घोल, ओम

1. मूँद ले आँखें बाहर से भीतर आंखे खोल
उठ माया के सपने से मन में अमृत घोल
2. काम क्रोध जन्मे माया से भेद भाव जन्मे काया से
कर्म न कर ये जान के तु बीज न बो अभिमान के तू
कड़वे बोल ना बोल.....
3. तू हीं नहीं तेरा सब कुछ क्या
तू हीं नहीं तेरा सुख दुख क्या
इंद्र जाल है ये संसार सत्य रूप तेरा प्यार ही प्यार
ज्ञान है ये अनमोल.....
4. करता रहे ये यत्न ऐसा हो जाए मन ये मग्न ऐसा
हो जा एक प्रभु के संग होगी नहीं समाधि भंग
ब्रह्मानन्द में डोल.....

1. ओम् जपा करो, सहारा मिल ही जायेगा
मन्त्र ये महान् है, ध्यान तो धरो
किनारा मिल ही जायेगा, ओम्
2. क्यूँ भटक रहे हो तुम, किस के वास्ते
कौन है यहाँ तुम्हारा क्या तलाशते
मुख पे ये सवाल है कुछ जवाब दो
इशारा मिल ही जायेगा
ओम्
3. कैसे बातों बातों में ढल गई उमर
वक्त वो कहाँ से आये, जो गया गुजर
देर हो गई मगर फिकर न करो
तुम्हारा दर्द जायेगा
ओम्
4. मन है मीन जान ले मोह जालं में
स्वांस है सुखों की आशा सिर पे काल है
जन्म ये अमोल है देर ना करो
दुबारा फिर न आयेगा
ओम्
5. प्रेम के बहाव में तैरते रहो
जीव जीव में हरी को देखते रहो
धैर्य की डगर धरो, डर अभी तजो
सितारा जग मगायेगा
ओम् ओम्

ओम्-ओम् जपो श्वाँस-श्वाँस रटो नाम प्यारा
मन्त्र ऋषियों ने ये है उच्चारा।

1. ओम् धुन में ही तुम खो जाओ
ध्यान इसी ओम् में ही लगाओ
गोता ओम् में लगा
बहती इसमें सदा सुख की धारा।
मन्त्र ऋषियों ने
2. आनन्द इसमें समाया है ऐसा
नहीं आनन्द दुनिया में वैसा
लग जाये इसमें लगन
मस्ती में झूमें भैन, क्या नजारा।
मन्त्र ऋषियों ने
3. इसकी शक्ति है सबकी शांति
उसके नाम की सदा कर भक्ति
मन है मतलब का
दुखों से है भरा, कर किनारा।
मन्त्र ऋषियों ने

किया मैंने संतो से व्यापार
 किया मैंने साधो से व्यापार
 किया मैंने सत्गुरु से व्यापार

1. हो मैं दे के नाम लिया चिंता दे आराम
 झुठा धन कर भेट लिया है धन संतोष अपार
2. मैं-2 दे के तू-तू लिया है हाय-2 दे वाह-2
 धय कर भेट मिली निर्भयता दान देकर दातार
3. छोटे घर के बदले मिला है घर सारा संसार
 पिछला घाटा पूरा करके नफा पाया है अपार
4. एक से प्यार कर मैंने जीता जगत् सारे का प्यार
 सिर देके मैंने साजन पाया मुफ्त में मुक्तिद्वार

कौन कहता है कि दीदार नहीं होता है
 आदमी खुद ही तलबदार नहीं होता है

1. तुम उसे प्यार करो वो ना तुम्हें प्यार करे
 बेखबर इतना तो करतार नहीं होता है
2. तुम पुकारो तो सही हृदय से एक बार उसे
 देखना कैसे वो साकार नहीं होता है
3. जब बुलाते हैं भगत अपनी खुदी को मिटाकर
 तो फिर भगवान् से इंकार नहीं होता है।
4. गर तू अपनी खुदी को नहीं मिटाएगा
 तो फिर भगवान् का दीदार नहीं होता है।

कलयुग विच तेरा अवतार हो गया
 सोहने स्वरूप अंदर, ओ मोहने स्वरूप अंदर
 दुखी जीवा उत्ते तेरा उपकार हो गया.....

1. न्यारी ज्योत जगत विच एहाँ आई ए
 त्रिलोकी विच धूम मचाई ए हाँ मचाई ए
 कौने-कौने विच तेरा अवतार हो गया
2. बैठे प्रेम के भण्डारे खोलके हाँ खोलके
 वेन्दे श्रद्धा ते भाव नाल तोल के हाँ तोल के
 प्रेम भक्ति बाला सच्चा व्यापार हो गया
3. शोभा सुन जीव शरणी आँवदे हाँ आँवदे
 पान्दे दर्शन ते खुशियाँ मनावदे हाँ मनावदे
 कौड़ी छड़ के ते हीरे दा व्यापार हो गया
 सोहने.....

कुछ ऐसे सतगुरु होते हैं जो मंजिल तक पहुँचाते हैं
जो सतगुरु का बन जाता है वो जीवन भर सुख पाता है।

1. दुनिया का झूठा नाता है
दो दिन में ही उड़ जाता है
इक सच का ऐसा नाता है
जो जीवन भर का सहारा है।
बिगड़ा हुआ जीवन चाहे हो
सतगुरु के संग से सुलझ जाता है.....
2. ये ज्ञान का दीपक जलते ही
अंधकार ने कोई रहता है
और प्रेम का दीपक जलते ही
जीवन का मंदिर बन जाता है
जिस दिल में प्रभु की याद उठे
वो दिल दिलबर बन जाता है.....

कुछ गिनती के साँसे है दो पल का नजारा है
बिन तेरे कुछ भी नहीं सब झूठा पसारा है।

1. तू एक खिलाड़ी है, इंसान खिलौना है
ये एक तमाशा है हँसना है या रोना है
मिट्ठी हुई परछाई देती ये ईशारा है.....
2. बचपन है जवानी है मजबूर बुढ़ापा है
जीवन जिसे कहते हैं कई रंग बदलता है
बीता हुआ हर पल ही देता ये ईशारा है....
3. जब तक वो नचाएगा नाचेगी ये कठपुतली
सब खेल खत्म होगा डोरी जिस दिन टूटी
लहरों की तरह फानी जीवन की ये धारा है....

कुछ न बिगड़ेगा तेरा सतगुरु शरण आने के बाद
हर खुशी मिल जाएगी कदमों में झुक जाने के बाद

1. जब तलक है भेद मन में कुछ नहीं बन पाएगा
रंग लाएगी ये मस्ती भेद मिट जाने के बाद
2. प्रेम के मंजिल के राही कष्ट पाते हैं जरूर
बीज फलता है सदा मिट्टी में मिल जाने के बाद
3. फूलों से मत पूछना छाई है उनपे क्यूँ बहार
कब तलक काँटों पर सोया डाल पर आने के बाद।
4. देखके काली निशा को ऐ भंवर मत हो उदास
बंद कलियाँ भी खिलेंगी रात ढल जाने के बाद
5. प्यार कर निष्काम निर्मल निश्चय कर धनश्याम का
सूखी बगियाँ भी खिलेंगी ऋतु बदल जाने के बाद।

के जीवन दा मैंनु आनंद आ गया ए
 के जिस दिन दा ऐ साँवरा आ गया ए

1. मैं कण्डे ते खड़ियाँ नैया मेरी भवर में
 के तारन को मेरे मल्लाह आ गया ए.....
2. छुट्टी जान दुखा तो तंदरुस्त होइया
 मौला मेरी करने दवा आ गया है
3. एं नजरा दे जादू निगाह दे टोने
 ओ मेरी नजर नू नजर ला गया ए
4. मैं सुखा दी सेजा ते मौजा मनावा
 जिस दिन दा ऐ साँवरा आ गया ए
5. लौकी मैंनु कैहंदे ने पागल दीवानी
 के प्रेम वाला नशा मैंनु पिला गया है
 के नशे वाला जीवन मैंनु भा गया ए
6. चिट्ठी मेरी चादर ना दाग लगे कोई
 ओ ऐसा ललारी ओ रंग ला गया ए
7. छड़े गुरु द्वारे ते मंदिर मसीदा
 मेरे मन मंदिर सावरा आ गया
8. मैं ओ बोल बोला जो मुर्शिद बुलावे
 मैं की बोलन जोगी जो बुलवा गया ए
9. रल मिलके देवो सारे बधाइयाँ
 कि असली खजाने नू हथ पा लिया है।

ਕਿਥੋ ਨੇ ਰੰਗਾਈਆ ਅਰਵਾਂ ਪ੍ਰਭਦਿਯਾਂ ਸਾਰਿਧਾਁ
ਜਦੋ ਤੇਰੇ ਨਾਮ ਦਿਯਾ ਚਢੀਆ ਖੁਮਾਰਿਧਾਁ

1. ਸਤਗੁਰੂ ਮੈਰਧਾਨੇ ਕਿਤਾ ਏ ਕਮਾਲ ਸੀ
ਸ਼ਹਨਸ਼ਾਹ ਬਨਾਧਾ ਮੈਨੂ ਧੁਗ ਦੀ ਕਹਾਲ ਸੀ
ਕਿਥੋ ਲਬਾ ਰਾਮ ਮੈਨੂ ਪ੍ਰਭਦਿਧਾਁ ਸਾਰਿਧਾਁ....
2. ਸਤਗੁਰੂ ਮੈਰਧਾਨੇ ਮਿਲਾਧਾ ਸੰਜੋਗ ਸੀ
ਕਟ ਗਏ ਦੁਖ ਸਾਰੇ ਹੋਈਆ ਨਿਰੋਗ ਜੀ
ਜਨਮ-2 ਦਿਧਾਂ ਕਟੀਧਾਂ ਬਿਮਾਰਿਧਾਁ
3. ਸਤਗੁਰੂ ਪੁਰਧਾਨੇ ਚਰਣੀ ਏ ਲਾਧਾਸੀ
ਕਗ ਦੀ ਅਨੇਰੀ ਵਿਚੋ ਦਿਧਾ ਏ ਜਲਾਧਾਸੀ
ਕਗਦੇ ਸਰੋਵਰ ਵਿਚੋ ਲਾ ਲਝਧਾ ਤਾਰਿਧਾਁ
4. ਸਤਗੁਰੂ ਮੈਰਧਾਨੇ ਐਸਾ ਜਾਦੂ ਪਾ ਲਿਧਾ
ਦੁੱਝ ਦਾ ਕੁਪਦਟਾ ਮੇਰਾ ਛੀਨ ਵਿਚ ਫਾਡਧਾ
ਝਧਾਮ ਘਾਰੇ ਕਿਧੋ ਝਲਕਾਨੇ ਮਾਰਿਧਾਁ

किवे चेहरे तो नजर मैं हटावाँ के तेरे विचो रब दिसदा
 दिल करदा-2 मैं तकदी जावा के उठ के ना जावा
 के तेरे विचो रब दिसदा.....

1. तेरी बिनवत तलावद मेरी, कोल बैठी इबाबत तेरी
 हाय कदी वी ना उठ के जावां के तेरे विचो.....
2. इक तू होवे मैं होवा-2 तेनू सब दे विचो खोवाँ
 ओ तैनू अखियां दे विच मैं बिठावा, के तेरे विचो
3. रूप तेरे दी-मै खैर मनावां-2 तुसी तारों ते मैं तर जावाँ
 मैनू मिल गयां सतगुरु दर तेरा
 मैनू मिल गया सब कुछ मेरा
 जी हुन छूटे न ए दर तेरा, के तेरे विचो.....
 दिल करदा मैं तकदी जावां.....

कन्हैया को इक रोज रोकर पुकारा
मैं जैसा भी हूं प्रभु हूँ मैं तुम्हारा

1. वो बोले के साधन हैं तुमने किया क्या
मैं बोला कि साधन से किसको है तारा

2. वो बोले के दुनिया में तुमने किया क्या
मैं बोला कि अब भेजना मत दुबारा

3. वो बोले परेशान हूं तेरी बहस से
मैं बोला कि कह दो तू जीता मैं हारा

4. वो बोले कि जरिया तेरा क्या है मुझ तक
मैं बोला कि दृग बिंदु का है सहारा
कन्हैया को एक

कन्हैया ले चल परले पार
 जहाँ बिराजे राधा रानी अलबेली सरकार
 कन्हैया ले चल

1. गुण अवगुण सब तेरे अर्पण -2

पाप पुण्य सब तेरे अर्पण

बुद्धि सहित मन तेरे अर्पण -2

मैं तेरे चरणों की वासी तू मेरा मल्हार, कन्हैया

2. तेरी आस लगा बैठी हूँ,

लज्जा शर्म गंवा बैठी हूँ, अपना आप लुटा बैठी हूँ

आँखे खूब पका बैठी हूँ

मैं हूँ तेरी प्रेम रागिनी, तू मेरा मल्हार, कन्हैया

3. जगे की कुछ परवाह नहीं है

तेरे सिवा कोई चाह नहीं है, और सुलझी राह नहीं है

बहुत हुई अब हार चुकी मैं, मत छोड़ो मझधार

4. आनन्द धन जहाँ बरस रहा है

पत्ता-पत्ता हर्ष रहा है

पी-पी कर कोई तरस रहा है, अखियों से जल बरस रहा है

मेरे सतगुरु मेरे माझी कर दो परले पार, कन्हैया

कौन मंजिल की कहे, तू जो मेरे साथ नहीं
तू हो, मंजिल न मिले, ऐसी कोई बात नहीं

1. दिल मिला दुनिया में, इन्सान को परसनिश के लिए
दिल तो पत्थर है, जहाँ मुक्ति के जजबात नहीं
2. दर नहीं दर वो, जिस दर पे न खैरात मिले
सर नहीं सर वो, के जिस सर पे तेरा हाथ नहीं
3. रात दिन जिसका, निगाहबान रहे तू मुश्किल
उसकी बाजी को, जमाने में कोई माने नहीं
4. तू मसीहा है, जो गिरतो को उठाने आया
तेरी इस जान से बढ़कर के कोई जान नहीं
5. जिस पे रहमत हो तेरी उसने तुझे जाना है
तुझे पहचान सकूँ, मेरी तो ओकात नहीं
6. दास भटकां था बहुत इश्के हकीकी के लिए
संत सतगुरु के बिना मिलती मगर पात नहीं

कोई श्याम का दिवाना तो बने
दिवाना तो बने, मस्ताना तो बने,

1. जुल्म राणा ने किया मीरा को जहर दिया
जान करके चरणों का अमृत, मीरा ने था पी लिया
सांपों से कटवाना चाहा, हर तरफ से तंग किया
पेश ना कोई चली तो राणा ने यूँ कहा
सुन ले मीरा बात दो है, नाचना तू छोड़ दे
छोड़ दे तू साध संगत, नाम रटना तू छोड़ दे
छोड़कर महलों को मीरा, सुबह ही वृन्दावन चली
रात थी काली अंधेरी, मीरा यूँ गाती चली
कोई श्याम का
2. तप्ते खम्बे से लगाने, जब लगे प्रहलाद को
रो पड़े नौकर सभी, ना तरस आया बाप को
भक्त बच्चा डर ना जाये, जब देखा मेरे राम ने
चींटी बनकर चक्कर लगाये थे, वहाँ धनश्याम ने
जब देखा प्रहलाद ने खम्बे को, था छाती से लगा
तरफ देखा बाप की, मुस्करा कर यूँ कहा
कोई श्याम का

करुणा जो बरसे नैनों से

निश्चय आत्मा का होने लगा, गुरु जी तेरे वचनों से

1. मंदिर मस्जिद गुरुद्वारे, प्रभू का पता ना दे पाये घट-घट वांसी सतगुरु ने, घट में दर्शन करवाये अंदर मन के नैनों से, निश्चय आ. का
2. लेकर तुमने देहध्यास, दिया है हमको आत्मज्ञान राग द्वैष को मिटाकर के, तुमने सजाया है ये मन ज्ञान के सुंदर गहनों से, निश्चय आ. का होने
3. पाकर तुमको सतगुरु जी हुआ है मेरा मन प्रसन्न भटक रहा था दर-दर में किया ना था जब तक दर्शन चैन हुए इन-नयनों से, निश्चय
4. जीते जी मिल गई मुक्ति, भेंट दिया जो तन मन धन शुक्राने प्रभू जी तेरे, तूने मेरा संवारा है जीवन विवेक वैराग के नगीनों से निश्चय आ. का होने लगा गुरु जी तेरे वचनों से

गुरु के समान नहीं दूसरा जहान में

1. येही वेद श्रृति कहते गुरु बिन ज्ञान नहीं
ज्ञान बिना भक्ति कैसे आए तेरे ध्यान में
2. शिव रूप जानो गुरु विष्णु के स्वरूप है
साक्षात् ब्रह्म जानो लिखा है पुराण में
3. सतगुरु की सेवा कीजिए छल कपट सब छोड़ दीजिए
ज्ञान गुरु की शरण लेके मस्त रहो निज ध्यान में
4. काम से छुड़ाए गुरु क्रोध से बचाए गुरु
मोह से छुड़ाए गुरु खेलो जी निर्वाण में।

गुरु देव मेरे दाता हम को ऐसा वर दो
सेवा सुमिरन सत्संग झोली में मेरे भर दो

1. नफरत ज्ञो करे हममे हम उसको प्यार करे
करते जो हमारा बुरा उसका सतकार करे
नफरत को मिटा करके तू प्यार का रंग भर दे
2. मेरे मन मंदिर में गुरुदेव तू बस जाए
जिसको भी देखूँ में तेरा रूप नजर आये
दे ज्ञान का अमृत तू जीवन को सफल कर दे
3. शबरी की तरह सेवा और प्रेम हो मीरा सा
श्रद्धा हो तुलसी सी और बोल कबीरा सा
ये अर्ज करे प्रेमी सतगुरु पूरी कर दो।

गुरुदेव दया भण्डार भरे

गुरुदेव हरे गुरु देव हरे।

1. गुरु घट-घट की तुम जानत हो
और दीनों के प्रति पालक हो
जो प्रेम सहित ये पुकार करे
गुरु देव हो गुरु देव हरे.....
2. जब दया दृष्टि दिखलाते हो
तब तीनों ताप मिटाते हो
दुख सारे पल में दूर करे। गुरु देव हरे.....
3. गुरु भक्ति भाव जगाते हैं
और नाम का रंग चढ़ाते हैं
जिन के हित अवतार धरे। गुरु देव हरे.....
4. मम हृदय माही निवास करो
अंतर में ज्ञान प्रकाश करो
हो तीन ताप से आप परे। गुरु देव हरे.....
5. जो गुरु के चरणों का ध्यान करे
वो जग में सुधा रस पान करें
नहीं पावे जन्म और नाहीं मरे। गुरु देव हरे.....

गुरु प्रेम रोग है-2 जिसे लग गया समझ प्रभु संग योग है।

1. गुरु ज्ञान मिलता नहीं तोल से
गुरु प्रेम मिलता नहीं मोल से
श्रद्धा रहे धीरज रहे तो खुद ही लागे रोग है।
2. गुरु मिल गए मुझको हरि मिल गए
चमन में लगा जैसे फूल खिल गए
हर श्वास में जब वो बसे तो खुद ही लागे रोग है।
3. मेरे सतगुरु मेरे भगवान है तू
मुझी में समाया है बनकर गुरु
तू मुझ में है मैं तुझ में हूँ
तो खुद ही लागे रोग है।
4. गुरु दिव्य दृष्टि जो मुझ पर पड़ी
सुजाग हुई जिंदगी हर पल हर घड़ी
गुरु के संग किया सत्संग
तो छूटे माया रोग है।

गुरु ने दिया आत्म ज्ञान बना मन मंदिर आलीशान

1. गुरु ने जल में गुरु ने थल में
गुरु ने डाल के हर पातन में
लखाया अपना रूप महान
2. गुरु ने प्रेम अमृत बरसाया
कर्ता अहम का भाव मिटाया
कराया निज स्वरूप का ज्ञान
3. गुरु ने सारा भ्रम मिटाया
बेअंत का अंत समझ तब आया
घट-घट बसवा राम ही राम
4. गुरु ने अजर अमर बतलाया
बंधन से मुक्त तभी हो पाया
मिला गुरु चरणों में आनंद धाम।

ਗੁਰੂ ਘਟ-2 ਬਸਦਾ ਏ-2

ਸਤਗੁਰੂ ਪੂਰੇ ਬਿਨਾ ਕੋਈ ਭੇਦ ਨਾ ਦਸਦਾ ਏ

1. ਪੂਰੇ ਸਤਗੁਰੂ ਜਗ ਆਵਦੇ-2

ਭੂਲਿਆ ਭਟਕਿਆ ਤੂ ਸਚਵੇ ਪ੍ਰਭੁ ਵੀ ਰਾਹ ਲਾਵ ਦੇ

2. ਮਾਰਗ ਗੁਰਾਂ ਵਾਲਾ ਭਕਿਤ ਦਾ-2

ਅਜਤ ਨਾ ਪਾਵੇ ਕੋਈ ਸਤਗੁਰਾਂ ਵੀ ਸ਼ਕਿਤ ਦਾ

3. ਦਿਨ ਭਾਗਾਂ ਵਾਲਾ ਆਧਾ ਹੈ-2

ਸਤਗੁਰਲਾਂ ਦੇ ਚਰਣਾ ਵਿਚ, ਸਾਡੀ ਸੂਰਤ ਸਮਾ ਜਾਏ।

4. ਕਈ ਸ਼ਵਾਤਿ ਦਿਯਾਂ ਕਣਿਧਾਂ ਨੇ-2

ਸਤਗੁਰਾਂ ਦੇ ਕਚਨ ਜੇਹੜੇ ਹੀਰੇ ਲਾਲ ਤੇ ਮਣਿਧਾਂ ਨੇ

5. ਪ੍ਰੇਮੀ-2 ਜੋ ਮਿਲਦੇ ਨੇ-2

ਗੁਰਾਂ ਦੇ ਪਾਰ ਅੰਦਰ, ਫੁਲਾਂ ਵਾਗ ਓ ਖਿਲਦੇ ਨੇ

6. ਭੋਲਾ ਮਨ ਏ, ਭੂਲਾਨ ਵਾਲਾ -2

ਤੇਰੇ ਬਿਨਾ ਸਚਵੇ ਸਾਹਿਬਾ ਕੇਡਾ ਇਸ ਤੋ ਬਚਾਨ ਵਾਲਾ

7. ਜਿਨੇ-ਪ੍ਰੀਟਿ ਲਗਾਈ ਹੋਈ ਏ-2

ਪ੍ਰੀਤਮ ਦਾ ਪਾਰ ਇਕੋ ਸਾਰੀ ਦੁਨਿਆ ਭੁਲਾਈ ਹੋਈ ਏ

8. ਗੁਰੂ ਸਥਨਾਂ ਨੂੰ ਜਾਨ ਦੇ ਨੇ-2

ਪਰ ਸਚਵੇ ਸਤਗੁਰਾਂ ਨੂੰ, ਕੋਈ ਵਿਰਲੇ ਪਹਚਾਨ ਦੇਨੇ

9. ਕਈ ਜਮਾ ਦੇ ਲੇਖੇ ਨੇ-2

ਮੈਂ ਕੁਰਬਾਨ ਜਾਵਾਂ ਸਾਡੇ ਅਕਗੁਣ ਨਾ ਵੇਖੇ ਨੇ

ਗੁਰੂ ਘਰ-ਘਰ ਬਸਦਾ ਏ.....

गुरु तेरे प्यार में कुछ ऐसा होता है
क्या कहूँ मैं क्या बोलूँ मुझे कैसा लगता है

1. तेरी मुस्कराहट से भगवान जिंदगी मिली
तेरी नजर पाकर भगवान रहूँ खिली-खिली
प्रेमी आंसू भर-2 के शुक्राना गाता है....
2. पाया युगों का खजाना तेरी शरण में
देखा तेरी कृपा को भगवन कदम-2 में
स्वासं स्वास तेरी महिमा का तराना गाता है.
3. ज्ञान के मोती से भगवान अज्ञान टले
तेरे ही प्यार में सतगुरु हम हैं पले
तेरी रहमत के साये में ही जीवन चलता है....
4. तृप्ति और आनंद से भगवान किया भरपूर
हृदय विराजमान है तू हाजरा हजूर
तेरे याराने से ये दिल भर-भर उठता है.....

गुरु महिमा है सबसे बड़ी गुरु बैठा है अंदर में
 जैसे सूरज अंबर में, जैसे मोती समुंदर में
 गुरु महिमा.....

1. वो दूर नहीं मुझसे, मैं दूर नहीं उससे
 वो साथ में है मेरे मैं साथ में हूँ उसके
 गुरु ज्ञान से निखरी मैं, गुरु प्रेम से संवरी मैं
 जैसे श्याम पीतांबर में, जैसे चाँद नीलांबर में
 गुरु महिमा.....

2. बिन तेरे हे भ० लगती हूँ मैं ऐसी
 जैसे स्वाति बिना चातक जैसे श्याम बिना बंसी
 तुम आये हो जीवन में, और छाये हो तन मन में
 जैसे फूल हो गुलशन में, जैसे रूप हो दर्पण में
 गुरु महिमा.....
 शब्द सूने पड़े हैं सब, कैसे गाऊँ तेरी गाथा
 प्रभु तेरे बिना अब तो इक पल ना रहा जाता
 स्वासों में समाऊँ तुझे अखियों में बसाऊँ तुझे
 जैसे हंस सरोवर में, जैसे घटा हो सावन में
 गुरु महिमा.....

गाइये महिमा गुरु की शुद्ध निर्मल आत्मा
धन्य जीवन हो गया हमको मिले परमात्मा

1. सतगुरु से ज्ञान है, बिन ज्ञान के मंजिल नहीं
ज्ञान के बिन ब्रह्म के दर्शन कभी होते नहीं
आये तुम भ० बनकर काटने अज्ञान को
गाइये महिमा.....
2. मन के मंदिर में गुरु साक्षात है बैठे हुए
सतगुरु ऐसी कृपा की प्यार से मन भर उठे
शुक्रिया प्रभू शुक्रिया मैं जगमगा कर भर उठा
गाइये महिमा.....
3. सतगुरु साकार बनकर तुम जगत में आये हो
हर घड़ी हर पल सदा तुम रहनुपा बन छाये हो
ज्ञान के आलोक से अंतर मेरा भर-भर उठा
गाइये महिमा.....

गुरु तेरे प्रेम में भीगा तेरा हर योगी
गुरु तेरे ज्ञान से जागा तेरा हर योगी

1. शुक्राने दिल से करता तुझको तेरा योगी
वाह साई-2 करता हर योगी
2. मैं ना रहा अब तो मेरा ना कोई
अपने पराए में अब भेद ना कोई
बस एक साई दिखता हर योगी में
3. मन को हरा गुरु ने भी बुद्धि भी गंवाई
अद्वैत ज्ञान की फिर ज्योत जलाई
ज्ञान स्वरूप जगाया हर योगी में
4. हस्ती गंवा के तूने मस्ती सिखाई
होवे वहीं अब जो चाहे मेरा साई
मस्ती ही मस्ती दिखती हर योगी में.....
गुरु तेरे

ਗੁਰਾ ਦੇ ਘਰ ਆਨ ਵਾਲਿਆਂ ਦੀ ਬੇਡੀ ਕਦੇ ਨਾ ਅੜੀ
 ਓ ਬੇਡੀ ਕਦੇ ਨਾ ਆੜੀ ਭਵ ਸਾਗਰ ਤਰੀ
 ਗੁਰਾਂ ਦੇ ਘਰ....

1. ਜਦੋ ਰਾਨਾ ਨੇ ਮੀਰਾ ਨੂ ਸਰਫ ਭੇਜਧਾ
 ਮੀਰਾ ਰਖ ਭਰੋਸਾ ਗਲ ਪਾ ਛਡਧਾ
 ਓ ਬਨ ਗਈ-3 ਕੋਂ ਤੋ ਫੂਲਾਂ ਦੀ ਲੜੀ
 ਗੁਰਾਂ.....
2. ਜਦੋ ਰਾਨਾ ਨੇ ਮੀਰਾ ਨੂ ਜਹਰ ਭੇਜਧਾ
 ਮੀਰਾ ਰਖ ਭਰੋਸਾ ਓਨੂ ਪੀ ਛਡਧਾ
 ਓ ਪੀ ਗਈ-3 ਜਹਰ ਜਾਨ ਨਾ ਚਢੀ
 ਗੁਰਾਂ....
3. ਜਦੋ ਰਾਨਾ ਨੇ ਮੀਰਾ ਨੂ ਘਰਾਂ ਕਡਧਾ
 ਮੀਰਾ ਰਖ ਭਰੋਸਾ ਦਿਲ ਨਿਝੋਂ ਛਡਧਾ
 ਓ ਟੁਰ ਪਈ-3 ਕੁਨਦਾਵਨ ਦੀ ਗਲੀ
 ਗੁਰਾਂ.....
4. ਜੇਡੇ ਗੁਰਾਂ ਦੇ ਢਾਰੇ ਤਤਥੇ ਆਕ ਦੇ ਨੇ
 ਮੁਆਂ ਮਾਂਗੀ ਸੁਰਾਦਾ ਪਾਵ ਦੇ ਨੇ
 ਕੋ ਤੋ ਝੋਲਿਧਾ ਭਰ-ਭਰ ਲੇ ਜਾਨ ਦੇ ਨੇ
 ਓ ਬਨ ਗਈ-3 ਕੋ ਤਾਂ ਮੁਕਿਤ ਦੀ ਲੜੀ
 ਗੁਰਾਂ.....

गर पूछो कैसे पीते हैं तो आज तुम्हें बतायें हम
राम मेरे ही साकी हैं, नैनो से पिलाए जाते हैं

- 1 अरे हम कहें, कुछ रुक जाओ
वो कहे थोड़ी और लो
हम कहें मद में खो गए
वो कहे कुछ और खो, अगर पूछो कैसे-
2. अरे वो तो पिलाए जाते हैं, हँस-2 के गाये जाते हैं
मदिरा ये हम तो पीते हैं, वो जी बहलाये जाते हैं
अगर
3. मुझको बहलाने कारण ही, हर जाम वो भर-2 लाए है
नाम ही है मदिरा सारी, पैमाना भर-2 लाये
अगर
4. अब इस पल मुझको होश नहीं, मदहोश हुई मैं बैठी हूँ
इक करने प्याला नाम तेरा, खामोश हुई मैं बैठी हूँ
अगर
5. राम खड़े हैं सामने, साकी बन भरते जाते हैं
जितना-2 पीयूँ मैं वो पूर्ण करते जाते हैं,
अगर

गुरु मातृ पिता गुरु बंधु सखा-2

तेरे चरणों में सतगुरु मेरा कोटि प्रणाम

1. प्रियतम हो तुम्हीं प्राणनाथ तुम्हीं

तेरे चरणों में.....

2. तुम्हीं भक्ति हो तुम्हीं शक्ति हो

तुम्हीं मुक्ति हो मेरे श्याम शिवाह, गुरु.....

3. तुम्हीं प्रेरणा तुम्हीं साधना

तुम्हीं अराधना मेरे श्याम शिवाह, गुरु....

4. तुम्हीं प्रेम हो तुम्हीं करुणा हो

तुम्हीं मोक्ष हो मेरे श्याम शिवाह

गुरु माता पिता.....

गुरु तेरे दरबार में आते आते
 मेरे मन का सारा भ्रम मिट गया है
 मुझे चाँद तारों की चाहत नहीं है
 मुझे मेरा अनमोल धन मिल गया है

1. गुरु तेरे दरबार में, मेरा आत्म मंथन हुआ
 जगत में था ढूँढ़ा जिसे, हृदय में ही दर्शन हुआ
 यह तेरी ही वाणी का जादू असर है
 मुझे मेरा गोपी किशन मिल गया है। मुझे चाँद.....
2. गुरु तेरी नूरी नजर, करे दिल पर गहरा असर
 जन्म कितने व्यर्थ गये, मिला ना हमें ऐसा दर
 नहीं है नजारों की मुझको तमना
 मेरा मन ही उत्सव भवन बन गया है।
3. तुम्हीं हो मेरी वन्दना, तुम्हीं मेरी आराधना
 तू सत्यम् शिवम् सुन्दरम् तुम्हीं हो मेरी साधना
 नजर को नजर आज आये कन्हैया
 मुझे मेरा सच्चा सज्जन मिल गया है। मुझे चाँद.....
 गुरु तेरे

1. गुरु मेरी पूजा गुरु गोविन्दा
गुरु मेरा पारब्रह्म, गुरु भगवन्ता।
2. गुरु मेरा देव अलख अभेद
सर्वं पूज्य चरणं गुरु देव
3. गुरु मेरा ज्ञान गुरु मेरा ध्यान
जाको सिमरे मिटे अज्ञान।
4. गुरु बिन अपना नहीं कोई और
सतगारु बिन नहीं कोई ठौर
5. गुरु मेरा रत्न असली वतन
गुरु के सत्य वचन
6. गुरु का वचन हृदय का हीरा
परख-परख मिटाओ पीड़ा

गुरु वचनों को रखना सम्भाल के, गुरु वचनों में गहरा राज है
जिसने जानी है महिमा गुरु की, उसका डूबा कभी ना जहाज है

1. दीया ज़ले और तम ना भागे

ऐसा कभी नहीं हो सकता

ज्ञान सुने और विवेक ना जागे, ऐसा कभी नहीं हो सकता
उसकी ज्योति से रोशन जहाना है वो फरिशता बड़ा ही महान है
जिसने जानी है

2. बीज पड़े और अंकुर ना फूटे, ऐसा कभी नहीं हो सकता
कर्म करे और फल ना निकले, ऐसा कभी नहीं हो सकता
कर्म करने में तू होशियार है, फल भोगने में तू लाचार है
जिसने जानी है

3. मैं का दीया जब तक जला है, तब तक प्रभू नहीं मिल सकता
अन्तःकरण की शुद्धि न हो तो, प्रेम कभी नहीं हो सकता
अन्तःकरण की शुद्धि बना तू और प्रेम का दीपक जला तू
जिसने जानी है

4. गुरु को पूर्ण सर्पित हो जा, धोखा कभी नहीं हो सकता
लक्ष्मण रेखा सत्संग की हो तो, रावण कभी नहीं आ सकता
मेरे सदगुरु सदा मेरे साथ है, मुझे ओर किसी की ना आस है
जिसने जानी है

5. ठोकर लगे और गुरु ना सम्भाले

ऐसा कभी नहीं हो सकता

जब तुम पूकारो वो नहीं आये, ऐसा कभी नहीं हो सकता
उसके हाथों में दे अपना हाथ तू और चल उसके ही साथ तू
जिसने जानी है महिमा

गुरु वचनों को रखना सम्भाल के

गुरु तेरे प्रेम में भीगा तेरा हर योगी
 गुरु तेरे ज्ञान से जागा तेरा हर योगी
 शुक्राना दिल से करता तुझको तेरा योगी
 वाह साई-वाह साई करता हर योगी
 प्रभू तेरे

1. मैं ना रहा अब तो मेरा ना कोई - 2
 अपने पराए में अब भेद ना कोई - 2
 बस एक साई दिखता हर योगी मैं
 गुरु तेरे
2. मन को हरा गुरु ने बुद्धि भी गंवाई
 अद्वैत ज्ञान की फिर ज्योत जगाई
 ज्ञान स्वरूप जगाया हर योगी मैं
3. हस्ती गवा के तूने मस्ती सिखाई
 होवे वही-अब जो चाहे मेरा साई
 मस्ती ही मस्ती दिखती हर योगी मैं
 गुरु तेरे

चरण कमल तेरे धोये-2 पीवां मेरे सतगुरु दीन दयाला
सिमर-2 सिमर नाम जींवा, तन मन होये निहाला

1. पार ब्रह्म परमेश्वर सतगुरु, आपे करने हारा
चरण कमल तेरे सेवक मांगे, तेरे दर्शन तो बलिहारा
चरण कमल.....
2. मेरे राम राय ज्यूं रखाये, ज्यो रखायें तिंहु रहिये
तुद भाव ता नाम जपावे, सुख तेरा दीता लहिये
चरण कमल.....
3. मुक्त भुगत जुगत तेरी सेवा, जिस से तू आप कराइये
ताहां वैकुण्ठ जहां कीर्तन तेरा तू आपे श्रद्धा लाइये
चरण....
4. कुर्बान जाये उस बेला सुभागी, जब तुमरे द्वारे आइयाँ
नानक कहे प्रभु भये कृपाला सतगुरु पूरा पाइयाँ
चरण कमल.....

चरणों में तेरे रहकर भ. प्यार ही प्यार मिला,
श्रद्धा से जब पूजा मैंने ब्रह्म का ज्ञान मिला

1. तुम संग कैसी प्रीत लगी कि छूटा जग मुझ से
जादू तूने ऐसा किया कि छूटा जग मुझ से
बंधन सारे टूट गए जब तुमने बांध लिया
श्रद्धा से जब
2. गुजर गया हर पल दुख का,
जब तेरा ध्यान किया
हर मुश्किल आसाना हुई, जब तूने साथ दिया
मोह माया में फँसा हुआ मैं अब आजाद हुआ
श्रद्धा से जब
3. जहर भी पीना कहदे अगर तू वो भी पीलेगे
राजी जिसमे तू है भगवन वैसे जीलेगे
दिल भी यह मदहोश हुआ कैसा जाम मिला
श्रद्धा से जब
4. जीना मरना सीखा भगवन, जग में जी करके
जीते जी मर जाना कैसा, सीखा अब तुझसे
तू ही है अब माँझी मेरा, नैया पार लगा
श्रद्धा से जब

ਛਾਪ ਤਿਲਕ ਸਥ ਛੀਨ ਲੀ ਰੇ ਮੋਸੇ ਨੈਨਾ ਮਿਲਾਇਕੇ
 ਨੈਨਾ ਮਿਲਾਇਕੇ-ਨੈਨਾ ਮੇਂ ਆਇਕੇ
 ਅਪਨੀ ਸੀ ਕਰ ਲੀਨੀ ਰੇ ਮੋਸੇ ਨੈਨਾ
 ਛਾਪ ਤਿਲਕ ਸਥ

1. ਬਲਿ-ਬਲਿ ਜਾਊ ਮੈਂ ਤੇਰੇ ਰੰਗ ਰੇਜਵਾ ਓ
 ਅਪਨੇ ਹੀ ਰੰਗ-ਰੰਗ ਲੀਨੀ ਰੇ ਮੋਸੇ ਨੈਨਾ
 ਨੈਨਾ ਮਿਲਾਇਕੇ, ਨੈਨੋਂ ਮੇਂ ਆਇਕੇ ਅਪਨੀ ਸੀ ਕਰ
2. ਪ੍ਰੇਮ ਬੂਟੀ ਕਾ ਮਦਵਾ ਧੀ ਲਾਈ ਕੇ
 ਮਸ਼ਤਾਨੀ ਕਰ ਦੀਨੀ ਰੇ ਮੋਸੇ ਨੈਨਾ ਮਿਲਾਇਕੇ
 ਛਾਪ
3. ਧਨ-ਧਨ ਭਾਗਧ ਜਗੇ ਮੋਰੀ ਸਜਨੀ
 ਮੋਹੇ ਸੁਹਾਗਨ ਕੀਨੀ ਰੇ ਮੋਸੇ ਨੈਨਾ
 ਛਾਪ

जब से हम सतगुरु तुम्हारे हो गए
 मिल गई खुशियाँ सहारे हो गए

1. पास मंजिल थी मगर हम दूर थे
 मिल गए साहिल किनारे हो गए
2. तोड़ डाला मजहबी दीवार को
 भेदभाव मिटा के हमारे हो गए
3. अब हमें जन्मत मिले या न मिले
 चरणों में स्वर्गी नजारे हो गए
4. हमको हर सौगात बिन मांगे मिली
 तेरी रहमत से गुजारे हो गए
5. बन के गुरु मुख आ गए जो दर तेरे
 उसके तो वारे न्यारे हो गए।

जो मस्ती की मस्ती को पहचानता है
वही मस्त रहना भी खुद जानता है।

1. सहारा मिला जिसको आलम गुरु का
वह खुद ही खुदी को खुदा जानता है
2. ये सब जी रहे हैं तेरे ही रहम पर
तू रोते हुए को हँसा जानता है।
3. तुम्हें कुछ भी बनना बनाना नहीं है
जो तू है उसे प्रभु जानता है।
4. खुदा तेरा तुझे से जुदा ही नहीं है
असल भेद सारा तू ही जानता है।

जब अपने ही घर में खुदाई है
 काबे में सजदा कौन करे
 जब दिल में ख्याले सनम हो बसा
 तो गैर की पूजा कौन करे

1. तू वर्क गिरा मैं जल जाऊं तेरा हूँ तुझ में मिल जाऊँ
 हो मुझसे खता और तू बख्ता दे
 ये रोंज का झगड़ा कौन करे।
2. हम मस्त हुए बेवादा पिये
 साकी की नजर के सदके में
 अन्जाम पे डाले कौन नजर
 पी ली है तो तोबा कौन करे
3. अब उनकी रजा पर छोड़ दिया
 आबाद करे बरवाद करे
 उनका था उनको सौंप दिया
 दिले देके तकाजा कौन करे.....
4. तू सामने आ मैं सजदा करूँ
 तो लुत्फ़ है सजदा करने का
 तू और कहीं मैं और कहीं
 ये नाम का सजदा कौन करे
5. पर्दे ही तलक सब सजदे हैं
 सजदे ही तलक सब पर्दे हैं
 जब पर्दा उठा तो आप हुआ
 फिर आप का सजदा कौन करे।

जहाँ तक जाती दृष्टि है वहाँ तक फैली सृष्टि है
सर्वमम रूप-2

1. मैं हूं सब में और न कोई
मेरी ज्योति सब घट प्रगट होई
ऐसा अदभुत रूप जाने कोई-कोई भूप
2. मुझसे उत्पन्न है संसारा
चन्दा सूरज विद्युत तारा
जगमगाती सृष्टि है सारी आत्म दृष्टि है
3. इंद्र जाली जाल बिछाया
ईश जीव बन देखन आया
आप से आप ही फैला
माया के भ्रम में भूला सर्व ममरूप.....

जब मन में लगन लग जाए, तेरी रसना हरि गुण गाए
 तब इतना समझ लेना, अब हरि से मिलन होगा, प्रभु से मिलन होगा

1. किसी और की दुख पीड़ा जब तेरे मन लागे
 निर्बल को बल देने तेरे हाथ बढ़े आगे
 तेरी आँखें जब भर आए, कोई शक्ति धीर बधाए
 तब इतना समझ लेना
2. कोई बोले कड़वा बोल, तू मिठा-मीठा बोल
 तू बोल भी ऐसे बोल, जो उसको धीर बँधाये
 जो काम न तू कर पाये, तेरी रसना वो ही कर जाए
 तब इतना समझ लेना
3. दुख सुख में भी प्रभु का जब सम आभास हो
 मान और अपमान कभी न मन में वास करे
 झुककर जो आनन्द आए, वो आनंद जहाँ ले जाए
 तब इतना समझ लेना

जरा जीव विचारों मन में तेरी आत्मा का कैसा स्वरूप है
ये देह नहीं है तेरी आत्मा, तू तो सत् चिद् आनन्द रूप है।

1. घट-पट का दृष्टा घट-पट में जैसे जगत् में है सबसे न्यारा
तीन देह का दृष्टा तू है, तीन देह से है न्यारा
तू तो साखी चेतन ब्रह्म रूप है तू तो अजर अमर विभू रूप है।
2. घट उपाधि से महाकाश ही घट आकाश है कहलाता
अन्तःकरण उपाधि से ही, ब्रह्म जीव है कहलाता
तज देह उपाधि ब्रह्म रूप है जैस बिंदु भी तो सिन्धु का ही रूप है।
3. हस्ति भाँति प्रिय नाम रूप, ये पांच अंश जग में दिखते
इन में तीन ही ब्रह्म रूप हैं, और जगत् रूप दो बचते
नाम रूपें जगत् का ही रूप है, तू तो हस्ति भाँति प्रिय रूप है।
4. राजा का लड़का सपने में जैसे, अपने को निर्धन माने
राजेश्वर तू मोह नशा में, अपने को दुखिया माने
तू तो जगत् के भी जगत् का भूप है, अज्ञान से भरा भवकूप है।

जरा तो इतना बता दो भगवन लगी ये कैसी लगा रहे हो
मुझ्मी में रहकर मुझ्मी से अपनी ये खोज कैसी करा रहे हो

1. हृदय भी तुम हो, तुम्हीं हो प्रीतम

प्रेम भी तुम हो, तुम्हीं हो प्रेमी

पुकारता मन तुम्हीं को क्यों फिर तुम्हीं जो मन में
समा रहे हो।

2. प्राण भी तुम हो, तुम्हीं हो स्पन्दन

नयन भी तुम हो, तुम्हीं हो ज्योति

तुम्हीं को लेकर तुम्हीं को ढूँढू

नयी ये लीला बता रहे हो

3. भव भी तुम हो तुम्हीं हो रचना

संगीत तुम हो तुम्हीं हो रसना

स्तुति तुम्हारी तुम्हीं से गाऊँ

नयी ये रीति बता रहे हो....

4. कर्म भी तुम हो तुम्हीं हो करता

धर्म भी तुम हो तुम्हीं हो धरता

निमित कारण मुझे बनाकर

ये नाच कैसा नचा रहे हो।

जब मन मीठा होये तब जग मीठा होये
फिर सुख मीठा और दुख मीठा होये

1. गुरु मुख जो हुआ हर भेद खुला
और प्रेम हुआ और प्रेम हुआ
प्रेम जहा होए, भगवान वहां होय
फिर सुख मीठा और दुख मीठा होये
2. गुरु ने सिखलाया श्रद्धा रखो
और सब्र करो सब्र करो
सब्र जहां होए संतोष वहां होए, ...फिर....
3. जो होता है वो होता रहे
यह खेल-भला यह खेल भला
खेल जहां होए, सुख-दुख न वहां होए....
4. जब भ्रम मिटा तब ब्रह्म दिखा
मैं एक रहा, मैं एक रहा
एक जहां होए फिर द्वैष कहां होए
फिर सुख मीठा....

जर्जे-2 में झाँकी है भगवान की
किसी सूझ वाली आँख ने पहचान ली

1. नामदेव ने पकाई रोटी कुत्ते ने उठाई
पीछे धी का कटोरा लिए जा रहा
बोली रुखी तो न खाओ स्वामी धी तो लगाओ
रूप अपना क्यों मुझसे छिपा रहा
तेरा मेरा एक रूप फिर काहे को हजूर।
तूने शब्द बनाई हे स्वान की मुझे ओढ़ी उड़ा वी इंसान की
2. निगाह मीरा की निराली पी के जहर की प्याली
ऐसा गिरधर बसाया श्वास में
आया जब काला नाग, बोली धन्य मेरे भाग
प्रभु आये आज सांप के लिबास में
आओ-2 बलिहार काले कृष्ण मुरार
बड़ी कृष्ण है कृष्ण निधान की धन्य वारी हूँ आपके अहसान की।
3. इसी तरह सूरदास निगाह जिनकी थी खास
ऐसा नशा था साँवरिया हरि नाम का
नयन हुए जब धंद तब मिला वो आनंद
आया नजर नजारा धनश्याम का
हर जगह वो समाया सारे जग को दिखाया
आई आँखे में वो रोशनी ज्ञान की देखी झूम-झूम झलकियाँ जहान की
4. गुरु नानक कबीर नेक जिनकी नजर
पत्ते-2 में दिखाया निराकार को
नजदीक और दूर वो तो हाजरा हजूर
यही सार समझाया संसार को
आओ-2 मेरे प्यारे खुले भाग्य हमारे
बड़ी-2 मेरहरबानियाँ हैं उस मेरहरबान की
देखी झूम-झूम झलकियाँ जहान की।

जिसके हृदय में हरि सिमरण होगा
 उसका सफल क्यों ना जीवन होगा
 भक्त का भी भगवान को चिन्तन होगा

1. सच्ची धारणा से प्रह्लाद ने जो ध्याया था
 खंबे से श्यामजी का दर्शन पाया था
 जिसका सहारा रघुनन्दन होगा

2. द्रोपदी ने बाँधा केवल चार कच्चे धागों से
 बदले में भेजी हैं हजार गज साड़ियाँ
 जिसका सहारा मनमोहन होगा

3. भक्तों को तारने तारनंहार आए हैं
 जंगलों में झूठे बेर भीलनी के खाए हैं
 कहते थे कभी न कभी दर्शन होगा

4. बन के वैरागी गीत रामजी के गाए जा
 तेरी सारी मुश्किलें आसान बो बनाएगा।
 जिसके हृदय में राम नाम धन होगा।

जीवन की घड़ियाँ वृथा न खो
ओम भजो हरी ओम बजो

1. ओम ही सुख का सार है ओम ही जीवन आधार है
वृत्ति ना उसकी मन से तजो ओम.....
2. साथी बनाले ओम को मन में बैठाले ओम को
चादर लम्बी तान न सो, ओम.....
3. चोला यही है कर्म का करने को सौदा धर्म का
धोना जो चाहे जीवन को धो, ओम.....
4. मन की गति संभालिए भक्ति की ओर डालिए
इसके सिवा मार्ग न कोई, ओम.....
5. घट में हरि पहचान ले, साँसों की कीमत जान ले.
नर तन का पाना हो ना हो, ओम.....

जो चुप कर जाता है उसे प्रभु चलाता है

1. चुपचाप यह धरती और चुप है यह गगन
चुपचाप है सृष्टि सारी प्रभु में सारे ही मगन
हर पल चुपचाप समय में मिलकर खो जाता है।
2. है वाहन तू ईश्वर का तुङ्गमें ईश्वर ही बसा है
और भूल के इस चालक को तू देह में, जीव फँसा है
जो दे दे उसको लगाम जीवन बो चलाता है....
3. जब होगी मौन रे तेरी तो वो ही बोले मुख से
जब शांत हो मन चिंतन से,
वो ही मुक्त करे दुख-सुख से
जब मन छोड़े माया को, आनंद ही पाता है।
4. मन मंदिर में मूरत की, न हो पूजा संकल्पों से
न दे इसको तू पहरा, हर पल-2 विकल्पों से
खाली हो जब यह घर, फिर वो ही सजाता है।

जो तू है सो मैं हूँ, जो मैं हूँ सो तू है
ना कुछ आरजू है, न कुछ जुस्तजू है।

1. बसा राम मुझमें और मैं राम में हूँ
ना इकं है ना दो है, सदा तू ही तू है।
2. उठा जग की माया का परवा ये सारा
किया गम-खुशी ने भी मुझसे किनारा
3. जुबा को ना ताकत न मन को रसाई
मुझे मिल गई है मेरी बादशाई
4. मिला जब से हमको गुरु का सहारा
किया मौत ने भी है मुझसे किनारा

जो भी आया बिक गया, मोहन तेरे दरबार में
भेद कुछ न रह गया, बिकने और खरीददार में

1. एक नजर परम नटवर, जिसपे तुम्हारी हो गई
उसको फिर चिंता रही न, कोई इस संसार में
2. कैसा मीठा फल मिला, हमको तुम्हारी याद में
दुनिया के सब नाते छुटे हैं तेरे इस प्यार में
3. जिसकी दिल और आँखों में मस्ती तुम्हारी छा गई
वो ही शोहरत पां गया, इस प्रेम के बाजार में
4. गुणों को ठुकराया करते, अवगुणों से प्यार है
यही तो आदत भली है, मेरे कृष्ण मुरार में
5. उसे गर्ज अब क्या रही, बीरान और इस चमन में
दुई का पर्दा उठ गया, तो मिल गया करतार से।

जो आत्मा में टिका दे, वो शक्ति तुझी से पाऊँ
 जो सब में ब्रह्म विखा दे, वो वृत्ति तुझी से पाऊँ

1. मैं हूँ रोशनी सङ्क की जो अपनी जगह खड़ी है
 चाहे डोली उठे या जनाजा वो न हिली है न झुली है
 जो दृष्टा मुझे बना दे वो दृष्टि तुझी से पाऊँ
2. कुछ लेना है न देना दुनिया के इस मेले में
 कहीं आना है न जाना आत्मा के इस रेले में
 जो आवागमन से छुड़ा दे वो ज्ञान तुम्हीं से पाऊँ
3. मैं अजर हूँ, मैं अमर हूँ, अचिन्तय हूँ अजन्मा
 कूटस्थ हूँ, तटस्थ हूँ, ज्योतिस्वरूप हूँ ब्रह्म
 जो जीवन मुक्त करा दे वो मंत्र तुझी से पाऊं।

1. जीवन मेरा गुलजार है, मिला जो मुझे तेरा प्यार है
मीरा को श्याम जैसे मिल गया
शबरी को राम जैसे मिल गया
ऐसा ही मेरा दिलदार है, ऐसा ही तेरा मेरा प्यार है

2. दुख सुख के बंधन सारे छूट गये-2
माया के खेल से हम छूट गए
मिथ्या ये सारा संसार है मिला जो मुझे तेरा प्यार है

3. बरसों से अखियां देखो बरसी है-2
प्रभू मिलन को जैसे तरसी है
आज हुआ दीदार है मिला जो मुझे तेरा प्यार है

4. जीने की राह नई दिखलाई है-2
बिना दिया बाती ज्योत जलाई है
दूर हुआ अंधकार है मिला जो मुझे तेरा प्यार है
जीवन मेरा गुलजार है.....

जद मैं ज्ञान दा सुरमा पाया
मेरी अख खुल गई

1. जद मैं आई गुरां दे द्वारे ओथे वेखे अजब नजारे
मेरे बारे हो गये न्यारे मेरी अख खुल गई।
2. जद मैं गई गुरां दी शरणी मथा टेक के डिग पई शरणी
मेरी निर्मल हो गयी काया मेरी
3. जद मैं आई गुरां दे नेडे, मुक गये सारे झगड़े झेड़े
मुक गए आन जान दे फेरे मेरी
4. जद मैं भोग गुरां दा खादा मैनु याद आया भूल्या बादा
मेरा जीवन हो गया सादा मेरी
5. सतगुरु मेहर नजर दी सुटी अंसा झोलियाँ भर-2 लूटी
हुन ते काल दी हो गई छुटी मेरी
6. जद मैं सुनी गुरां दी बाणी ता मैं सही हकीकत जाणी
कदर स्वासा दी मैं जाणी मेरी
7. जद मैं लाया गुरां नाल योग मेरे मिट गये सारे रोग
मैं तां हो गईया निरोग मेरी अख खुल गई
8. जद मैं लाई गुरां नाल प्रित मेरे मन दी हो गई जीत
मैं तां भूल गई अतिन मेरी अख खुल गई

जरा आ शरण मेरे राम की,
मेरा राम करुणा निधान है
घट-घट में वो ही रम रहा,
वो तो सारे जगत का भगवान है। जरा

1. भक्ति में उसकी तू हो मग्न

उसको पाने की तू लगा लगन
तेरे बंधन सब कट जायेंगे
प्रभू नाम इतना महान है, जरा आ शरण

2. पल-पल में तू उसको याद कर

उसको पाने की तू फरियाद कर
तेरे पाप सब कट जायेंगे, प्रभू नाम इतना महान है

3. लिया आसरा जिसने आप का

वो तो बन गया भगवान का
जिसके नाम से पत्थर तेरे
फिर तेरा तरना आसान है, जरा आ शरण

4. लगी भीलनी को ये आस थी,

प्रभू कब बूझेगी प्यास मेरी, जूठे बेर खाये थे राम ने
ये तो जानता सब जहान है, जरा आ शरण

5. तेरी दासी तुझको पुकारती, तेरे चरणों में अर्ज गुजारती
मत भूल जाना रे प्रभू, तेरी दासी बड़ी अनजान है
जरा आ शरण

जंगल में जोगी बसता है वो रोता है ये हँसता है
 दिल उसका कहीं ना फँसता है तन मन में चैन बरसता है
 हरि ओम, हरि ओम, हरि ओम, हरि ओम-2

1. कुछ फिरता नंग मलंगा है नैनों में बहती गंगा है
 जो आं जाये सो चंगा है, मन रंग भरा तन रंगा है
 हरि ओम
2. दाता मौला मतवाला है जो प्रेमी भोला भाला है
 मन मनका उसकी माला है तन उसका एक शीवाला है
 हरि ओम
3. पास उसके पक्षी आते हैं
 और दरिया गीत सुनाते हैं
 बादल स्नान कराने हैं
 वृक्ष उसके रिस्ते नाते हैं
 हरि ओम हरि ओम

- तेरा भाणा मीठा लागे शुक्राना मुस्काना दादा का कहना
 - ना कुछ बनाना ना कुछ करना ना गम से गभराना दादा
 का कहना....

1. ब्रह्म ज्ञान ऐसा हीरे मोती जैसा
 मिलता नसीब से बिना पाई पैसा, ओ....
 ये दाता की दात है हम पर
 अवसर न गवाना, दादा का कहना.....
2. राजी रहे हम उसकी रजा में
 मिले तो ईद होवे नहीं तो रोजा मान ले ओ....
 इच्छा मात्रम् अविधा, इच्छा मार भगाना.....
3. मौन ही सोन है, मैं ना तेरा गहना
 पुरुषार्थ देव तेरा आगे बढ़ते रहना ओ....
 श्रद्धा और विश्वास सहारे जीवन से तर जाना
4. रूप अनेक है लेकिन सब में एक है
 भेद जो ये जानता उसकी बुद्धि नेक है
 कण-2 में है नूर समाया, विरले ने पहचाना
 दादा का कहना.....

तुम शरणाई आया ठाकुर, तुम शरणाई आया

1. उत्तर गया मेरे मन का संसा,
जब तेरा दर्शन पाया
2. दुख नाटे सुख सहज समाए,
आनंद-2 गाया
3. अनबोलत मेरी वृथा जानी,
अपना नाम जपाया ठाकुर
4. बांह पकड़ कढ लीनी आपने,
गृह अंद्य कूप ते माया
5. कहे नानक गुरु बंधन काटे,
बिछड़त आन मिलाया ठाकुर...

तू अपने घर में जर्लर आ जा
खुदी के बदले खुदा को पा जा

1. क्यों इतने अरसे परदेश रहना
जुदाई के गम तू इतने न सहना
तू छोड़ परदेश घर में आजा
2. क्यों छोड़ घर के महल गदेले
क्यों खाक जंगल की छान अकेले
तू बच द्वन्द्व से, घर में आ जा
3. नदी ने ज्यों ही खुदी मिटाई
बनी समुंदर मिटी जुदाई
नदी के बदले बनी वो दरिया।
4. खुदी के जंग को रगड़ के धोना
अभ्यास करना, न गफिल होना
खुदी गई, फिर खुदा को पा जा
5. ये नाम रूप सब मिथ्या है सारा
बना हुआ है सब उसका पसारा
तू हस्ति, भाँति, प्रिय में आ जा....
6. न नूरी किरणों पर मस्त होना
न ठहर रास्ते मंजिल को खोना
तू असली अपने नूर में समा जा
7. तू शीष खो दे और ईश पा ले
तू त्याग सब कुछ और राज्य पा ले
तू बन के राजा महल सजा जा....

तेरी शरण में जो आ गया, भव से उसे छुड़ा दिया
चाहे वो कैसा भी पातकी, पावन उसे बना दिया

1. दर-2 भटकता है वही, जो तेरी शरण गया नहीं
भूले से अगर गया कभी, रस्ता उसे बता दिया
2. भाग्य प्रबल उसी का है, त्याग सफल उसी का है
जीवन सफल उसी का है, जिसको तूने जगा दिया
3. जिसको भरोसा हो गया, बेड़ा ही पार हो गया
अलमस्त फिर वो हो गया, प्याला जिसे पिला दिया
4. जिसकी लगन हो आप से, उद्धार होवे पाप से
छूट जाये जग के ताप से, शीतल उसे बना दिया
5. तुम तो पतित के नाथ हो, भक्त जनों के साथ हो
मुझसे अधम विमूढ़ को, दाता तूने अपना लिया।

तैनू राम कवां कि मैं कृष्ण कवां
 तू ते दोनों दा है पीर गुरु.....
 तेरी इको ही झलक मेरे लखां दी मरज
 यही है अकसीर मेरे सतगुरु

1. श्री राम दे विच बल भारी सी
 पर आखर धनुष वो धारी सी
 ईथे धनुष नहीं कोई बाण नहीं
 तेरी अख शमशीर मेरे सतगुरु
2. श्रीकृष्ण दी बांसरी बजदी सी
 सारी खलकत उठ-2 भजदी सी
 असां बिन मुरली ते बिन तानां
 तेरे बने हैं फकीर मेरे सतगुरु
3. ना जाणां की तू कीता है
 पल भर दे विच लुट लीता है
 मेरे रोम-2 दे नाल छपी
 तेरी इक तस्वीर मेरे सतगुरु.... तैनू राम

तू प्यार का सागर है, तेरी इक बूँद के प्यासे हम
बरसा जो तेरा अमृत, तो तर जाएँगे जहां से हम

1. पर वश था मन पंछी पहले इन्द्रियों के अधीन
गुरु वचनों से मुक्त हुआ मैं आत्म पद आसीन
2. तेरी कृपा है भगवान हुए हैं सत चित आनंद हम
गुरुमुख को ना यम का डर है, काल की क्या हस्ति
3. गुरु के चरणों में आए आनंद, जगत है मौत खड़ी
तेरे नयनों से ये जाना, अमर हैं आदिकाल से हम।

तेरा दर्श पाने को जी चाहता है
खुदी को मिटाने को जी चाहता है।

1. बहे राम जी की मुहोब्बत का दरिया
मेरा डूब जाने को जी चाहता है।
2. ये दुनिया है सारी नजर का ही धोखा
कि जलवा दिखाने को जी चाहता है।
3. हकीकत दिखा दो हकीकत वाले
हकीकत को पाने को जी चाहता है।
4. नहीं दुनिया की दौलत की चाह है मुझको
कि हर शय लुटाने को जी चाहता है।
5. गमें जुस्त देकर जुदा करने वाले
तेरे पास आने को जी चाहता है।
6. पिला दो मुझे जाम भर-2 पिलो दो
कि मस्ती में आने को जी चाहता है।
7. न ठुकराओ मेरी ये फरियाद अब तुम
तुम्हीं में समाने को जी चाहता है।
8. पुकारो मेरा नाम ले-2 पुकारो
अगर फिर बुलाने को जी चाहता है।
9. उठा दो ये मुख से परदा उठा दो
कि जलवा दिखाने को जी चाहता है।

तेरे दर ते आ गईयां दर छड़ेया नहीं जान्दा
पल्ला फड़ेया तेरा दाता पीछे हटेया नहीं जान्दा।

1. बिगड़ी तकदीरां नूं तुसी आप संवारदे हो
हथ दे के कश्ती नूं तुसी पार लगान्दे हो
ए जीवन हुन मेरा चरण विच लग जाये।
2. ए जाम मोहब्बत दा इक बार जो पी लेन्दा
भुल जान्दे ने गम सारे मस्ती विच जी लेन्दा
ए मस्ती उतर दी नहीं, नशा चढ़ के उतर जान्दा।
3. तस्वीर तेरी दाता मेरे दिल विच वस गई ए
मैं कढ़ना सकदी हां रोम-रोम विच वस गई ए
जदों तारां खड़कदियों ने साथो रूकिया नहीं जान्दा।
4. ऐ प्रेम दा सौदा ए सिर धड़ दी बाजी ए
असाँ दुनियाँ तो की लैना साडा सतगुरु राजी ए
असाँ दिल विच वसा लिया सोथो कडिया नहीं जान्दा।

तेरे चरणों की धूल प्रभु चंदन गुलाल बनी
जिसने भी लगाई मस्तक, उसकी तकदीर बनी

1. चरण धूल से बढ़कर जग में चीज कोई अनमोल नहीं
हर वस्तु का मोल है लेकिन इस वस्तु का मोल नहीं
देवता तरसे इस धूलि को ये धूलि कितनी पावन
जन्म-2 के रोग मिटाए सुख से भर दे ये दामन...
2. पार हुई पत्थर की अहित्या चरण धूल के पाने से
निर्मल बन गया पंपा सरोवर शबरी के चरण धोने से
इन चरणों की महिमा गाये युग-2 से सब वेद पुराण
काले कौओं हंस बन गये चरण धुल में करे स्नान
3. जिन चरणों में गंगा बहती उन चरणों में मोक्ष मिले
पड़ा रहे जो चरण धुल में न डोले ना कभी हिले
लाखों पत्थर हीरे बन गये प्यारे इन चरणों को थाम
पूर्ण सत्तुगुरु के चरणों में पाते हैं ये चारों धाम

तेरे जैसा कौन है सतगुरु हर आंख में तेरा नूर है
नजरों से रह कर दूर भी किसी दिल से तू नहीं दूर है

1. तेरे मुख पे है ये गर्जना तू देह नहीं तू है आत्मा
सब नाम रूप ये नाश है बस एक है पर-2
इस राज से था मैं बेखबर हर शब्द में तेरा जहूर है

2. तेरा सच्चिदानन्द रूप है दर्पण में तूने दिखला दिया
तेरे दर पर मैं फकीर था, तूने क्या से क्या है बना दिया
तेरे हाथ से जो पिया मैंने, उसी जाम का ये सरूर है

3. तेरे ज्ञान से ये बहार है, आनंद है मेरी जिंदगी
हर स्वास में तेरी याद है, तेरी याद है मेरी बंदगी-2
तू शमा है तो मैं पतंग हूँ यही प्यार का दस्तूर है।

4. अब मंजिलों की भी चाह नहीं लहरों में साहिल पा लिया
कोई हाल का अब गम नहीं जीना तूने है सिखा दिया-2
चाहे फूल दो चाहे खार दो मुझे सब तेरा मंजूर है।

तेरी मेहरबानी का है बोझ इतना
जिसे मैं उठाने के काबिल नहीं हूँ
मैं आ तो गया हूँ मगर जानता हूँ
कि सिर को झुकाने के काबिल नहीं हूँ

1. ये माना कि दाता हो तुम कुल जहां के
झोली फैलाऊँ कैसे तेरे द्वारे आके
जो पहले दिया वो कुछ कम नहीं है
मैं ज्यादा उठाने के काबिल नहीं हूँ।
2. तुमने अदा की मुझे जिन्दगानी
महिमा तेरी फिर भी मैंने ना जानी
कर्जदार तेरी दया का मैं इतना
जिसे मैं चुकाने के काबिल नहीं हूँ
3. जमाने की चाहत में खुद को भुलाया
विषयों में फँसकर तुझको भुलाया
गुनाहगार हूँ मैं सजावार इतना
तुझे मुँह दिखाने के काबिल नहीं हूँ
4. तमन्ना यहीं है कि सिर को झुका दूँ
तेरा दीदार इक बार जी भर के पा लूँ
सिवा दिल के टुकड़े के ओ मेरे वाता
मैं कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूँ।

तेरे ऐहसान का बबला चुकाया जा नहीं सकता
 जन्म ऐसा दिया तूने भुलाया जा नहीं सकता

1. अगर मुझको न तू मिलता मेरा मुश्किल गुजारा था
 जो पहुँचा है बुलन्दी पर वो इक टूटा सितारा था
 दिलों से तेरी उल्फत को मिटाया जा नहीं सकता

2. मेरी हर सांस पर दाता फक्त अधिकार तेरा है
 मिला जो भी मिला तुझसे मेरा क्या था क्या मेरा है
 तुझे दुनिया की दौलत से रिझाया जा नहीं सकता

3. बड़ी ऊँची तेरी रहमत बड़ी छोटी जुबां मेरी
 तुम्हें दाता समझ पाऊँ ये हस्ती है कहां मेरी
 तेरी रहमत को शब्दों में सुनाया जा नहीं सकता।

4. जगत जीवन यह साया है सदा तेरी इनायत का
 मुझे हो शोक दुनिया में सदा तेरी इबादत का
 बिना तेरे यह जीवन को सजाया जा नहीं सकता।

तेरे नाम का स्मिरन करके
 मेरे मन में सुख भर आया
 तेरी कृपा को मैंने पाया, तेरी दया को मैंने पाया

1. दुनिया की ठोकर खाकर, जब हुआ कभी वेसहारा
 ना पाकर अपना कोई जब मैंने तुझे पुकारा
 हे नाथ मेरे सिर ऊपर तूने अमृत बरसाया।
2. तू संग में था नित मेरे ये नैना देख न पाये
 चंचल माया के रंग में ये नैन रहे उलझाये
 जितनी भी बार गिरा हूँ तूने पल-2 मुझे उठाया
3. भवसागर की लहरों ने भटकाई मेरी नैया
 तट छूना भी मुश्किल था नहीं दिखे कोई खिवर्द्या
 तू लहर का रूप बनकर मेरी नाव किनारे लाया
4. हर तरफ तुम्हीं हो मेरे, हर तरफ तेरा उजियारा
 निर्लेप रमैया मेरे, हर रूप तुम्हीं ने धारा
 हूँ शरण तेरी मेरे दाता, तेरा तुझको ही चढ़ाया

तू तो बेमिसाल है सत्तगुरु तेरे जैसा कौन जहान में
तूने जीवन मेरा पलट दिया " " " "

1. तेरा चाँद तारों में नूर है, हर शैं में तेरा सर्व है
ये नजर-2 का है फासला किसी दिल से तू नहीं दूर है
तेरा जलवा या रब हर जगह तेरा जलवा सत्तगुरु हर जगह
तेरे जैसा
2. हम अमीर है या गरीब है, तेरे दर पर आके फकीर है
हुई जिस पे नजरे करम तेरी
वो जहां में फिर न अकीर है
जिसे तू मिला उसे रब मिला जिसे तू मिला उसे सब
मिला-2
तेरे जैसा कौन

तू मेरा मैं तेरा
कि तेरा मेरा प्यार हो गया मेरे सतगुर

1. तेरे दर्शन की मैं प्यासी
कि तुम स्वीकार तो करो
2. तेरा सुंदर दर्शन पाकर
कि दूर अंधकार हो गया
3. तेरे दर को नहीं मैं छोड़ूं
कि तुमसे इकरार हो गया।
4. तेरी मुहब्बत में मन मेरा
कि दूर संसार हो गया।

1. तेरी खूबियाँ गैर क्या जानता है
तू जैसा है बस जी मेरा जानता है।

2. मुहब्बत तेरी क्यों हुई मेरे दिल में
तेरा दिल इसे बेवजह जानता है

3. तेरे ज्ञान का राज मिलता है उसको
जो अपनी खुदी को मिटा जानता है

4. तेरी मस्तियाँ मस्त पहचानता है
तू सोये हुए को जगा जानता है

5. तेरे प्रेम में जान जाती है जाये
तू ही दर्द ए दिल की दवा जानता है।

तू राधे-2 ते गोपाल होवा मैं
हर दम तेरे नाल होवा मैं....

1. गंगा दा किनारा होवे श्याम प्यारा-2 होवे
तू नाचे-2 ते बलिहार होवा मैं.... हर दम....
2. हरी भरी मेहंदी होवा
बागां दे विच रहदी होवां, तू लावे-2 रंग लाल होवा मैं
3. गंगा जी दा कंडा होवे, पानी ठंडा-2 होवे
तू मछली तेरा जाल होवा मैं हर दम तेरे नाल....
4. फाल्नुन दा महीना होवे, रंग भरी पिचकारी होवे
तू खेले-2 रंग लाल होना मैं....
5. मिश्री दा कुजां होवे, छले उत्थे धरयां होवे
तू खावे-2 ते निहाल होवा मैं, हर दम....
6. यमुना दा किनारा होवे, उत्थे पैंदी रास होवे
तू नाचे-2 कुर्बान होवा मैं, हर दम तेरे....
तू बंसी-2 तेरी तान होवा मैं, हर दम तेरे नाल
तू पायल-2 ते झंकार होवा मैं, हर दम तेरे
तू साकी-2 ते शराब होवा मैं, हर दम तेरे
तू माला-2 तेरा मोती होवा मैं, हर दम तेरे
तू फुलवे-2 ते सुंगधि होवा मैं, हर दम तेरे
तू सुरमा ते सिलाई होवां मैं, हर दम तेरे
तू मोर वे -2 तेरी चाल होवा मैं, हर दम तेरे
तू वाणी-2 ते मुस्कान होवा मैं, हर दम तेरे
तू मिश्री-2 ते मिठास होवा मैं, हर दम तेरे
तू दिल-2 ते तेरी धड़कन होवा मैं, हर दम तेरे
तू पंछी-2 ते उड़ान होवा मैं, हर दम तेरे
तू शिववे-2 तेरा डमरू होवा मैं, हर दम तेरे
तू विष्णु-2 तेरा चक्र होवा मैं, हर दम तेरे

तू तो ढूबो हुआ तर जायेगा
प्यारे ओम-ओम ओम-ओम गाये जा

1. प्यारे मत कर किसी की बुराई
कौन देगा ये झूठी गवाई
प्रभू पूछे तो क्या बतलायेगा
प्यारे ओम-ओम गाये जा।
2. पशु मर कर भी सौ काम आये
तेरा नामो निशान मिट जाये
तू तो अन्त समय पछतायेगा
प्यारे ओम-ओम, ओम-ओम गाये जा
3. ओम नाम का भर ले खजाना
अपना जीवन सफल बनाना
आत्म मस्ती में तू झूम जायेगा
प्यारे ओम-ओम, ओम-ओम गाये जा
4. राम नाम की महिमा है प्यारी
अहिल्या पत्थर से बन गई नारी
तू तो गाता हुआ तर जायेगा, प्यारे ओम-ओम
5. ओम नाम की ऊँची दीवारें
संसार के झूठे सहारे
संग साथी ना कोई जायेगा, प्यारे ओम-ओम
6. ओम नाम से प्रीती लगाले
सत्संग से नाता बढ़ाले
फिर हर पल तू मुस्करायेगा
प्यारे ओम-ओम

तेरे फूलों से भी प्यार,
 तेरे काँटों से भी प्यार
 जो भी देना चाहे दे-दे करतार, दुनिया के पालन हार

1. हमको दोनो है पंसद, तेरी धूप और छाँव
 दाता किसी भी दिशा में ले चल
 जिदंगी की नाव, दाता जिन्दगी की नाव
 चाहे हमे लगा दे पार, चाहे छोड़ हमें मझधार
 जो भी देना चाहे दे-दे करतार, दुनिया
2. चाहे सुख दे या दुख
 चाहे खुशी दे या गम
 मालिक जैसे भी रखेगा वैसे रह लेंगे हम
 चाहे काँटो के हो हार, चाहे हरा भरा संसार
 जो भी देना चाहे, दे दे करतार

तन शाँत हैं मन शाँत है वृति भी शाँत है
शक्ति से ही मेरा उघम शान्ति ही मेरा अन्त है

1. सत ही मेरा निज रूप है, जड़ को मिली मेरी चेतना
सत आज है सबा ही रहा होगा कभी मेरा अंत ना
आनन्द का मैं रूप हूँ यही है मुझे जानना
तन शाँत
2. आया यहाँ किस काम से उलझ गया काहे को तू
सब कुछ मिला फिर भी जीवन तेरा मायूस क्यों
अज्ञान में है सोया रहा जागों है आया गुरु
तन शाँत
3. झरना हूँ में अमृत का फिर भी मैं क्यों प्यासा रहा
तू ही तो है खजाना है जो में ढूँढ रही सारा जहस
तू ही तो है मेरा आसरा भूली में जाने कहाँ
तन शाँत है

तुम करते हुए भी कुछ करते नहीं

भ, ये मेला कैसा है

मेरा जीवन बदल के चुप हो खड़े, ये खेल निराला कैसा है

1. नारायण आया धरती पर

इस युग में हमारे भाग्य जगे

परमानन्द में सब समा जाये, वो गहरे सागर जैसा है

2. माया की चमक तो फीकी है

मिथ्या है हमने जान लिया

जिस नूर से रस्ते रोशन है, वो चमकते सूरज जैसा है, तुम

3. आइने पर धूल थी बरसों की,

पल भर में जो उसने साफ किया

तेरे रूप को देख के जान लिया, मेरा रूप भी तेरे जैसा है तुम

4. है मेरा रोंग दुखों का घर,

छुड़ाना इससे तुम भगवन

तुफानों से पार करेगा रथ, मेरा सारथी सांवरा ऐसा है तुम

5. बस जीवन की डोर उसे दे वो

गुरु प्रेम में पूरे खो जाओ

सब अगला पिछला धो देगा, वो करुणा निधान ऐसा है तुम

तेरा परवाना बेहतर है जी-3

1. वो डाली परं कोयल बैठी है

और इसका उड़ जाना बेहतर है जी

तेरा

2. ये जवान मर्द की औरत है

और इसका खुश रहना बेहतर है जी

तेरा

3. ये बूढ़े मर्द की औरत है

और इसका यहाँ आकर मर जाना बेहतर है जी

तेरा

4. और हम वायदा करके भूल गए

तुम वायदा करके भूल गए

और वायदे का निभाना बेहतर है जी

तेरा

देखी ज्योति निं की इन नाजुक आंखियों में

1. आँखें अलग-2 हैं सभी की मनके तो सबमें एक है देह अलग-2 है सभी की साखी तो सबमें एक है है इत्तलक उसी के प्यार की इन नाजुक आंखियों में
2. जीवन अलग-2 है सभी का जीवन दाता एक है हृदय अलग-2 है बनाया साथ में दिया विवेक है देखी लीला अपरंपार की इन नाजुक आंखियों में
3. एक ही साखी चेतन है पर एक से हुआ अनेक है बूँद समाई सागर में पर सागर समाया बूँद में देखी रचना उस कलाकार की इन नाजुक.....
4. शांति की राह दिखाने वाला मेरा सतगुरु एक है जीवन नौका पार लगाने वाला मेरा माझी एक है देखी महिमा उस दिलदार की इन नाजुक.....
5. जीव जगत यू भासत है पर सबको बनाने वाला एक है पलते अलग-2 है प्राणी पर पालने वाला एक है देखी अद्भुत छवि तेरे प्यार की इन नाजुक

देखों संतों दिन सुहाना आ गया
 खुद खुदा रहमत बरसाने आ गया

1. ढूढ़ते थे हम जिसे वीराने में
 घट में ही हमको खुदा दिखला दिया
2. धर्म कहते हैं जिसे मजहब है क्या
 राज रूहानी बताने आ गया।
3. जल रहे थे अहमता की आग में
 सम्राट का अमृत पिलाने आ गया
4. इसकी वाणी में है सन्तों वो असर
 मुद्रा भी स्वासों की पूंजी पा गया

दरबार में मेरे सतगुरु के दुख दर्द मिटाए जाते हैं
जो तंग आये इस जीवन से इस्तदर पे हँसाये जाते हैं।

1. ये महफिल हैं दीवानों की हर भक्त यहाँ मतवाला है
भर-2 के प्याले अमृत के यहाँ खूब पिलाये जाते हैं।
2. क्यों डरते हो ए जग वालो इस दर पे सीस झुकाने से
इस दर पर तो ए नादानों सर भेंट चढ़ाए जाते हैं।
3. जिनको ठुकराया दुनियाँ ने और ठोकर खाकर गिरते हैं
इक बार जो दर पे आ जाए वो सर पे चढ़ाए जाते हैं।
4. ये मुक्ति का द्वारा है भव बंधन यहाँ कट जाते हैं
भक्तों से भक्तों की बाँह पकड़ यहाँ पार लगाये जाते हैं।
5. सिर धर के तली पर आ जाओ हसरत है जीते जी मरने की
सन्तों के जनाजे नित-2 यहाँ पर खूब सजाये जाते हैं।
6. जिन प्यारों पर ऐ जग वालो है खास इनायत सतगुरु की
उनको ही संदेशा आता है और वे ही बुलाये जाते हैं।

वस्तूरे मुहब्बत खस है यही हस्ती को मिटाना पड़ता है

1. जरा गफलत हुई या नजर झुकी चहुं और सभी ने घेर लिया
गुरु ज्ञान का दीपक मन मन्दिर में हर वक्त जलाना पड़ता है।
2. भ० का पाना आसान सतगुरु का मिलना मुश्किल है
सतगुरु को पाने के लिए सिर भेंट चढ़ाना पड़ता है।
3. मंदिर में गया मस्जिद में गया जंगल में भी उसका पता ना मिला
4. जब समझ आई तो ये समझा सतगुरु को रिझाना पड़ता है।
जब नजरे परम हो सतगुरु की तो मन्जिल भी कोई दूर नहीं
वो नजरे परम पाने के लिए हस्ती को मिटाना पड़ता है।

दुनिया में आके बंदिया भूला तू अपना करार है
तेरे लिए भगवान् ने कौसी रची बहार है।

1. वायदा गर्भ में था किया भूलूंगा तुङ्गको न हरि
फंस के मोह के जाल में भूला तू अपना करार है।
2. जिस हरि ने जन्म दिया उसका कभी न नाम लिया
जिससे प्रति लगा रहा कोई न मददगार है।
3. माया ने तुङ्गको बांवरे अपना दीवाना कर दिया
भक्ति प्रभू की छोड़ कर विषयों से करता प्यार है।
4. लाखों हरि उपकार किये भक्तों के धेढ़े पार किये
सच्चे मन से जो याद करे होता वो मददगार है।

दादा के ज्ञान में वो शक्ति है
 वो ही दर्पण को साफ करती है
 दादा ने बीज जो उगाए हैं
 एक दिन उससे फल निकलते हैं।

1. जब से डोरी गुरु से जोड़ी है
 तब से जीवन गुरु ये तेरा है
 अब तो दूजा नजर नहीं आता
 सब में तेरी ही झलक दिखती है।

2. देह में सब विकार होते हैं
 गुरु देह से भी मुक्त करते हैं
 एक अहंकार जब निकल जाता
 सब विकार खुद ब खुद निकलते हैं।

3. रंग लायेगी सच की ये महफिल
 मिल गई सतगुरु से है मंजिल
 अब तो सच ही हमारा जीवन है
 जिंदगी सच में ही गुजरती है।

दिल दे सिंहासन उते कौन आके बै गया
मैं मेरी मुक गई तू ही तू रह गया

1. दिखा के नजारे मैनु इक नजर नाल लुटया
झलक दिखा के सोनी मैनु मार सुटया
तेरे ही भरोसे जीना तेरे जोगा रह गया।

2. सतगुरु मेरा प्यारा चंद सूरज तो न्यारा ऐ
मिठियाँ ने गला ते गुप्त इशारा है
प्रेम वाली नजर नाल नैना विच वस गया

3. तीरे जिगर लगा के कर गया दिवाना ऐ
वाह मेरे सतगुरु अजब निशाना है
वैद बन निराकार आप देखो आ गया
मैं मेरी

4. प्यार दा की जादू तेरा साड़ी दशा निराली ऐ
रोम-2 रंग तेरा, अखाँ विच लाली ऐ-2
तुँआनू पाके सतगुरु जी-2 मुल जिंदगी दा पा लिया
मैं मेरी मुक गई.....

दर्शन पायो तेरा जबसे

नहीं रीझता और किसी के ऊपर अब मन मेरा

तू मुझमें है मैं तुझमें हूँ

तू मेरा मैं तेरा प्रभु जी.....

दिन उजियारा रात उजाली

उजला रैन सवेरा प्रभु जी.....

देह में है नहीं आना जाना

बन्द हुआ जग फेरा प्रभु जी....

ज्ञान का दीपक प्रेम की बाती

मग्न हुआ मन मेरा प्रभु जी

जित देखू नित तू ही तू है

मैं कछु नाहीं मेरा प्रभु जी....

दीवानों का मेला, है सत्संग बेला
 ये जनत नहीं है तो फिर और क्या है
 यहाँ मेरा आना, आकर ना जाना
 ये किस्मत नहीं है तो फिर और क्या है

1. मिली जब ये महफिल तो कहने लगा बिल

यहाँ से मुझे उठकर जाना नहीं है-2
 जिसे ढूँढता था, यही है वो मंजिल
 कहीं और मेरा ठिकाना नहीं है
 ये तुमसे हमारी, ये हमसे तुम्हारी, मुहब्बत नहीं है
 तो फिर और क्या है, दीवानों

2. नहीं-था, नहीं था, तुम्हारे मैं काबिल

किया मुझको फिर भी अपनों में शामिल
 मिला जब से मुझको दामन तुम्हारा
 ना मरने का डर है ना जीना है मुश्किल
 कहे दुनिया सारी ये मुझपे तुम्हारी
 जो रहमत नहीं है तो फिर और क्या है

3. इन आँखों को ऐसा जलवा दिखाया मुझे तुमने अपना दीवाना बनाया

तुम्हारे सिवा अब नजर कुछ ना आये
 यूं रंग मुझपर अपना चढ़ाया दीवाना बनाया-2
 ये ऐसी तुम्हारी, ये मुझपे तुम्हारी
 इनायत नहीं है तो फिर और क्या है
 दीवानों का मेला

न पूछो ये मुझसे मैं क्या देखता हूँ
मैं तेरी नजर में खुदा देखता हूँ.....

1. तेरी मुस्कराहट मेरी जिंदगी है
यही जिंदगी खुशनुमा देखता हूँ।
2. समझता हूँ खुद को गुनहगार लेकिन
तुम्हीं एक को पारसा देखता हूँ।
3. भले और बुरे की हो पहचान कैसे
मैं हर एक को एकसा देखता हूँ।
4. खुशी और गमी सब बराबर है मुझको
मैं सब में ही तेरी रजा देखता हूँ।
5. किसी से भी नफरत करूँ किस तरह मैं
मैं गैरों में भी आशिया देखता हूँ।
6. न दो बुत परस्ती का इलजाम मुझको
मैं हर बुत में नूरे खुदा देखता हूँ।
7. कहूँ क्या कहाँ पर है तेरा ठिकाना
मैं हर शै में तुझ को छिपा देखता हूँ।
8. बिना जात तेरी है सब कुछ है फानी
तुम्हीं एक को एकसा देखता हूँ।

ਨਾ ਰਖ ਕਿਸੀ ਨਾਲੋ ਵੈਰ ਕਰ ਲੇ ਫੁਲਵਾਰੀ ਦੀ ਸੈਰ
ਰੈਨਕਾ ਦੇਖੀ ਜਾ ਫੂਲਾ ਨੂੰ ਹਥ ਨਾ ਲਾ।

1. ਰੰਗ ਬਿਰੰਗੇ ਫੂਲ ਹੈ ਸਾਰੇ ਸਾਬ ਰੰਗਾਂ ਮੇਂ ਧੋਖਾ
ਮੁਰੱਖ ਲਈ ਮੁਸੀਕਤ ਭਾਰੀ ਸਮਝਦਾਰ ਹੈ ਸੋਖਾ
ਸਕੇਰੇ ਜੀਤ ਸ਼ਾਮ ਨੂੰ ਹਾਰ ਤੈਨੂੰ ਕੀ ਪਰਵਾਹ.....
2. ਝੂਠੀ ਦੁਨਿਆ ਦੇਖਕੇ ਐਤ੍ਥੇ ਦਿਲ ਨਾ ਲਾ ਪਰਦੇਸ਼ੀ
ਇਸ ਦੁਨਿਆ ਦੀ ਤੋਤਾ, ਦ੃ਢ਼ਿ ਦਿਲ ਟੁਕੁਡੇ ਕਰ ਦੇਸੀ
ਐਤ੍ਥੇ ਦੋ ਦਿਨਾ ਦਾ ਜੀਨਾ ਐਤ੍ਥੇ ਘੁੰਟ ਗਮਾ ਦਾ ਪੀਨਾ
ਕੇਲਾ ਹਸਨ ਦਾ, ਫੂਲਾ ਨੂੰ.....
3. ਜੋ-2 ਇਸ ਦੁਨਿਆ ਵਲ ਭਜਂਦਾ
ਦੁਨਿਆ ਜਾਂ ਨਾ ਪਰਵਾਹ ਕਰ ਦੀ
ਜੋ ਇਸਦਾ ਦਾਮਨ ਛੋਡੇ, ਦੁਨਿਆ ਅਗੇ ਪੀਛੇ ਫਿਰਦੀ
ਵਧਾ ਲੇ ਤੂ ਮਜ਼ਿਲ ਵਲ ਪੈਰ ਕਰਲੇ ਫੁਲਵਾਰੀ ਦੀ ਸੈਰ
ਫੂਲਾ ਨੂੰ

ना मैं मन ही रहा ना मैं तन ही रहा
सतगुरु मिलने से झगड़ा खत्म हो गया

1. कुटुम्ब वालों क्यों झगड़ा फैलाते हो
जाल छन्द का अब तो खत्म हो गया
2. नहीं मात पिता सुत दारा मिले
खेल जावू का अब तो भस्म हो गया
3. अगर कुछ भी बनना है तो योगी बनो
फिर बनना बनाना खत्म हो गया।
4. कण योग, पिलाए हरि प्रेम रस
भीतर बाहर हरि ही हरि हो गया।
5. मैंने गर्भ में बायदे किए राम से
सतगुरु की कृपा से पूरे ही गए।
6. प्यारे सतगुरु की महिमा में कैसे गाऊं
दास होना था अब तो वही हो गया।

ना कर अब तू मेरा मेरा, दूटेगा अभिमान जो तेरा

1. दिल में प्रभु का प्यार नहीं है,

जीवन में कुछ सार नहीं है

धर्म कर्म बेकार है तेरा।

2. यह जग है इक झूठा सपना

फिर क्यों इसको माना अपना

छोड़ने पर पड़ेगा रोना

3. यह धन पाप से कमाया जो तूने

यह समाज बनाया जो तूने

सब है प्रभु की अमानत का देना

4. इस जग की तू रीति छोड़ दे

सतगुरु आगे शीश चढ़ा दे

काट ले जन्म मरण का फेरा

ना जाना राम कैसा रे योगी रे योगी
रहत अतीत सर्व रस भोगी

1. दस मास इक मंदिर रचिया
एक खम्बा और दस दरवाजे
उसमें एक योगी जो रहता
करता सकल पसारा रे राम
2. आप ही योगी आप ही भोगी
आप गुरु और चेला हे राम
आप सुने और आप सुनावे
है फिर भी वो अकेला रे राम।
3. पाँचों मार्ग भस्म कर डाले
मन का मूँड मुँडाओ रे राम
मन है सवार पवन के ऊपर
आसन कबीर लगया रे राम।

नारायण जिसके हृदय मांही
सो कुछ कर्म करे ना करे

1. सूर्य का जब प्रकाश होवत है
दीपक जोत जले ना जले रे
2. नाव मिली जिसको जल भीतर
सो बांहो से नीर तरे ना तरे
3. पारस मणि जिसके घट भीतर
सो धन संचय करे ना करे
4. ब्रह्मनंद को जो जन जान्यों
सो काशी में जाये मरे ना मरे.

ना तुमझे न मुझमे जुदाई है
सूरत दोनों की एक है

1. तेरा मेरा एक ही रूप है, सतचित आनंद ब्रह्म
स्वरूप है।

देह का अध्यास है नाम रूप नाश है
ब्रह्म का प्रकाश है सर्व में निवास है
ज्योति सतगुरु ने जगाई है.....

2: माटी के बर्तन कुम्हार बनाये
नाम सभी के भिन्न-2 बताये
कोई मटका मटकी है कोई चिलम सुराई है
कोई छोटा बड़ा कोई घड़ा कोई कड़ा
फर्क एक पाई का ना पाया है

3. सोना तो एक है गहने अनेक है
धेद कर तुझमें भ्रम बहुत है
प्रेमी ये वेदान्त है वेद का सिद्धान्त है
आ. एकान्त है तेरा पद शान्त है
अभ्यास की कमताई है... सूरत दोनों की एक है।

नी मैं कमली गुरु तेरी कमली.....

1. प्यार तेरे ने गुरु कमलीयां कीता
जग सारे नू मैं पीछे कीता
जग छोड़ तेरी होई नी मैं कमली.....
2. सतगुरु मैंनू चरणी लाया-2
प्यार दा ऐसा जाम पिलाया,
सुध-बुध मेरी खोई नी मैं कमली.....
3. सतगुरु मेरा प्यार दा सागर
असां भी भर लेई खाली गागर
जन्मा दा पुन खटया नी मैं कमली.....
4. अखियां दे विच गुरु आन समाया
हृदय विच ओने डेरा लाया
हुन और न दिसदा कोई, नी मैं.....
5. संगत बोले गुरु तू ही तू
तू ही तू गुरु -2
मेरे मालिक तू ही तू
मेरे साहिब तू ही तू नी मैं कमली.....

नजरों से देख प्यारे, प्रभू क्या दिखा रहा है
 सब चीज सब जगह में, ईश्वर समा रहा है

1. प्रभू ने जभी भी चाहा, जग का हुआ पसारा
 चौदह भवन वो न्यारा, मन से बना रहा है
 सब चीज सब जगह में, ईश्वर समा रहा है
2. कहीं नर वो बना नारी, कही देव दैत्यभारी,
 पशु पक्षी रूप धारी, बन-बन के आ रहा है
 सब चीज सब जगह
3. सूरज वही अग्न है, पानी वही पवन है
 भूमि वही गग्न है, निर्गुण गुणा रहा है
 सब चीज सब जगह
4. तंज भेद भाव मन से, तन में वही है मन में
 ब्रह्मानन्द जो स्वप्न में, रचना रचा रहा है
 सब चीज सब जगह में ईश्वर समा रहा है।

नागीनिया बन के डस गई मोहन तेरी बाँसुरिया

1. ओ मेरे कलेजे बिच जिगर में चुभ गई
बाँसुरिया हाय नागनिया
2. और मैं जमना जल भरत जात थी मिल गए सांवरिया
हाय पीछे से कांकड़ मारी, मेरी तो फोड़ी गागरिया
3. रिमझिम-रिमझिम मेघा बरसे चमके बिजुरिया
हाय मैं कैसे आऊँ श्याम मेरी तो भीगी
चुनरिया हाय नागनिया
4. सास भी सोई ननद भी सोई, जागे मेरा सांवरिया
हाय मैं छूम-छाम-छनानन आऊँ सांवरिया
मुझे मेरा मिल गया सांवरियाँ
हाय नागनिया

ਨਾ ਕੋਈ ਝੱਚਾ ਤੇ ਨਾ ਕੋਈ ਚਾਹ
ਹਰ ਕੇਲੇ ਬੋਲੇ ਵਾਹ ਭਈ ਵਾਹ

1. ਸਤਗੁਰੂ ਮੇਰੇ ਹੈ ਮਤਵਾਲੇ-2

ਲਾਨਦੇ ਸਥਨ੍ਹ ਠੀਕ ਨਿਸ਼ਾਨੇ, ਕਹਨਦੇ ਗਾਵਾਂ ਧਹੀ ਗਾਨਾ
ਨਾ ਕੋਈ ਝੱਚਾ

2. ਮਹਖਾਨੇ ਵੀ ਤਾਕੀ ਲਾਈ-2

ਪੀ ਗਏ ਝਕਕੇ ਡੀਕ ਲਗਾਈ-2
ਮਸ਼ਟੀ ਫਿਰ ਸੇ ਐਹੋ ਛਲਕਾਈ, ਨ ਕੋਈ ਝੱਚਾ

3. ਚਾਹੇ ਦੁਖ ਸੁਖ ਭੀ ਆ ਜਾਵੇ

ਕਹ ਮੇਹਮਾਨ ਸਮਝ ਅਪਨਾਲੇ
ਫਿਰ ਭੀ ਧਹੀ ਆਵਾਜ ਲਗਾਵੇ

ਨਾ ਕੋਈ ਝੱਚਾ

4. ਮਿਲ ਗਈ ਸਚਵੀ ਸ਼ਾਹਨਸ਼ਾਹੀ-2

ਪਾਸ ਨਾ ਹੋਵੇ ਧੇਲਾ ਪਾਈ
ਮਸ਼ਟਾ ਐਹੋ ਆਵਾਜ ਲਗਾਈ
ਨਾ ਕੋਈ ਝੱਚਾ

पल-2 सन्त तुझे समझाए

क्यों हीरा जन्म गंवाए

समय क्यों खो रहा है-2

1. ओ भोले प्राणियाँ चार दिनों की तेरी जिंदगी कुछ तो कमाई कर ले, कर मालिक की तू बंदगी घार से संत तुझे समझाए, ज्ञान की राह बताये।
2. कर ले ओ भोले प्राणी, ब्रह्मज्ञानी की तू संगते आत्म निश्चय कर ले, छोड़ दे माया की तू रंगते ब्रह्मज्ञानी का ये फरमाना, क्यों सोया नादान
3. समय अनमोल पाया विषयों में ना तू इसको रोल दे मिलेगा सच्चा सुख अपने में प्रभू को तू टोल ले आत्म ज्ञान को पाकर बंदे, जीवन मुक्ति को पालो।

पल-2 सन्त तुझे समझाए

क्यों हीरा जन्म गंवाए

समय क्यों खो रहा है-2

1. ओ भोले प्राणियाँ चार दिनों की तेरी जिंदगी कुछ तो कमाई कर ले, कर मालिक की तू बंदगी प्यार से सन्त तुझे समझाए, ज्ञान की राह बताये।
2. कर ले ओ भोले प्राणी, ब्रह्मज्ञानी की तू संगते आत्म निश्चय कर ले, छोड़ दे माया की तू रंगते ब्रह्मज्ञानी का ये फरमाना, क्यों सोया नादान
3. समय अनमोल पाया विषयों में ना तू इसको रोल दे मिलेगा सच्चा सुख अपने में प्रभू को तू टोल ले आत्म ज्ञान को पाकर बंदे, जीवन मुक्ति को पाले।

पिला दे ओ साहिबा राम नाम दी मस्ती
इस मस्ती दी खातिर साहिबा असां मिटाई हस्ती

1. एक बूँद दी खातिर साहिबा सीस मंगे ता देवां
जे सिर दित्या बूँद मिले, तावी जाणा सस्ती।
2. रंग मेरे दी रीसन कोई, कोई वी रंग पिला दे
पीवन वाले मूल नहीं पूछदे, मैहंगी हो या सस्ती
3. ऐसी मस्ती पिला दे साहिबा होश बेहोश तू कर दे
जे तेरे कोलो प्याला ना ही बुका नाल पिला दें।
4. नाम प्याला पीवण वाले नहीं मौत तो डरदे,
रंब दी रजा विच राजी रहन्दे, शिकवा कवी न करदे।
5. सारे द्वारे छोड़ के साहिबा मल्या तेरा द्वारा,
वसदा रहे तेरा मेहरवाना बनी रहे तेरी हस्ती।
6. सदके तेरे मेहरवाने तो रज-2 आज पिला दे
पीके मैं सुध-बुध भूल जावां, ऐसी चढ़ जाए मस्ती।

प्रेम नाम दा उड़न खटोला, रब दी सैर करांदा ए
जिथे गम ना चिन्ता कोई, बेगम पुर ले जांदाए
राम नाम दा, प्रेम नाम दा

1. इस नगरी दी रीत निराली, ना जन्मा ना मरना है,
इस किनारे जो लग जाए, ना ढूबना ना तरना है,
इस नगरी वाला जेड़ा वो, यम दे हथ न आंदा है
जिथे गम न चिन्ता
2. एथे अमृत भरियां नदियां फल-फूल भरे बगीचे ने
मेरे गुरां ने अपने हाथी, प्रेम दे बूटे सींचे ने
तती हवा न लगण देवे हर इक फूल मुस्कां दा है
जिथे गम न चिंता.....
3. जेड़ा राम दे द्वारे आंदा, वस्तु अनोखी पांदा है,
तू तू करना सीख लिया, ते मैं तो जान छुड़ांदा है
जेड़ा राम दा सिमरण करदा, राम रूप हो जांदा है,
जिथे गम न चिंता कोई.....

पीले ना, हरि नाम का प्याला, सारे रोग मिट जाएँगे
गुरुदेव-2

1. अमृतवाणी दीनी गुरु ने, सफल किया जीवन मेरा
ऐसे गुरु को दंडवत किजे, सारे रोग मिट जाएँगे....
2. गुरु ही शक्ति, गुरु ही भक्ति, गुरु ही श्रद्धा, विश्वास है
ऐसे गुरु को मन में बसा लो, सारे रोग मिट जाएँगे....
3. गुरु ही अंदर, गुरु ही बाहर, गुरु ही मेरी सृष्टि है।
ऐसी अपनी दृष्टि बना लो, सारे रोग मिट जाएँगे....
4. ऐसी मरती दीन गुरु ने, खुद को मैं तो भूल गई,
तन-मन-धन अर्पण कर दू मैं, सारे रोग मिट जाएँगे.....

पियो रे राम रस है कोई प्यासा, पियो रे राम रस

1. जिस दिल में प्रभु प्रेम नहीं है
वो दिल तो है सूना-सूना
प्रेम बिना दिल रहे उदासा।
2. सतगुरु मेरा प्रेम का सागर
कुएं से भरवी दिल की गागर
तू भी कर ले पूरी आशा
3. जन्मों की है प्यास सभी को
फिर भी है अभिमान सभी को
प्रेम बिना अभिमान न जाता
4. प्रेम तो है खुद ही परमात्मा
हर एक दिल में है जो आत्मा
प्रेम से छूटे देहध्यासा

प्रभु प्यारे ने कृपा करी, मैं सगरी बदल गई

1. ज्ञान का ऐसा दीप जलाया
 जीव से हमको ब्रह्म बनाया
 काया पलट गई, मैं सगरी बदल गई.....

2. मोह माया में फँसी हुई थी
 उसकी भी मुझे खबर नहीं थी
 नईया पार करी, मैं सगरी बदल गई.....

3. कर्त्तापन में थी भरमाई
 कर्मों की गति जान न पाई
 कर्मों से छुड़ाये गई।

4. मैं मेरे का भेद मिटाया
 समता का है पाठ पढ़ाया
 मुक्ति है बरषाई

5. प्रेम भाव से सबको पिलाया
 जीव-2 को है हरषाया
 अपृत की वर्षा करी

प्यासा कोई मुसाफिर, भूले से दर पे आया
बरसा है बन के बादल, तेरी रहमतों का साया

1. रहमों कर्म का कैसे करूँ शुक्रिया अदा मैं
जिसने तुझे पुकारा वहीं दौड़ के तू आया
2. पीरों के पीर मुरशिद, मुरशिद कमाल मेरे
कैसे तुझे भुला दूँ, मुद्दत के बाद पाया
3. तेरे सामने से उठकर, मैं किस तरह से जाऊँ
तुझ सा हसीन दिलबर, अब तक नजर न आया
4. वीरान हो या बस्ती, सेहरा हो या चमन हो
हर गुल में तेरी खुशबू, तेरा ही नूर समाया
5. जब भी मेरा शफीना तूफान से डगमगाया
तूने दिया सहारा, आगे ही बढ़ता आया
6. परवरदिगार तुम हो रहबर हो रहनुमा हो
ठुकुरा दिया जहां ने तुमने गले लगाया
7. फैलाने हाथ जाँऊ, किस दर पे तू बता दे
तुझसा हसीन दिलबर अब तक नजर ना आया
8. जिसने पिया ये प्याला, उसे होश ही न आया
तेरे दर पे जो झुका है, उसने ही लक्ष्य पाया।

पी के शराब मुशिद मस्ताना हो गया हूँ
मन बुद्धि से मैं यारों बेगाना हो गया हूँ

1. कहने को कुछ जुबां से किसको है होश फुरसत
साकी की शमा लौ का परवाना हो गया हूँ
2. यारों बताऊँ कैसे हासिल हुई ये मस्ती
साकी की खाक पाकर नजराना हो गया हूँ
3. जब से पिलाया भर के सतगुरु ने जाम इबादत
उस दिन से गोदा खुद ही मस्ताना हो गया हूँ
4. रंजो आलम यहां अब ढूँढे मिले ना मुझमें
शाहों के साथ मिलकर शाहाना हो गया हूँ
5. लायक नहीं था इसके बख्तीश हुई जो गुरु की
मस्तों के साथ मिलकर मस्ताना हो गया हूँ
पी के शराब.....

पूरा ध्यान लगा गुरुवर दौड़े-2 आयेंगे
 तुम्हें गले से लगायेंगे
 मन की आंखे खोल-2 तुमको वर्णन बो करायेंगे

1. है राम रमैया बो है कृष्ण कन्हैया बो
 बो ही तो ईश्वर है
 सत की राह पर चलना सिखा दे जो
 बो ही तो ईश्वर है
 प्रेम से पुकार तेरे पास चले आयेंगे.....
2. कृपा की छाया में बिठायेंगे तुमको जहां तुम जाओगे
 उनकी दया दृष्टि जब-जब पड़े तुम पर
 भव से तर जाओगे
 ऐसा है विश्वास-2 मन में ज्योत बो जलायेंगे.....
3. ऋषियों मुनियों ने गुरुओं की महिमा का किया
 गुणगान है, गुरुवर के चरणों में
 झुके जो सुष्टि है बो ही तो भगवान है
 महिमा है अपार बेड़ा पार बो लगायेंगे
 तुम्हें गले से लगायेंगे.....

प्रेम जब गुरु से हो गया, समझ खेल शुरू हो गया

1. नाम रस जाने लगा, आत्म रस आने लगा

आँखों से आँसु बहे, वाणी से कुछ ना कहे

प्रेम जब गुरु

2. सुख में तू सोया नहीं

दुख में तू रोया नहीं

हँसते-हँसते रोने लगा

रोते-रोते हँसने लगा

संसार फीका लगे, हरिनाम मीठा लगे।

3. काम क्रोध व्यापे नहीं

राग द्वैष भासे नहीं

ऐसा तुझे जब से हो गया,

समझ खेल शुरू हो गया।

प्रेम सुधा बरसा रहां अमृत वाणी दे रहा
मन की आँखे खोल, सतगुरु वचन अमोल-2

1. तन से हो सेवा जग की, दिल में प्रेम प्यार हो
यही है संदेशा गुरु का, निष्कामी हो उदार हो
सत्संग में नित आये जा, सत-सत वचन उठाये जा
मस्त करे दिन रैन, और कहीं ना सुख चैन
मन की आँखें
2. हस्ती एक साई की है, तेरी है ना मेरी है
उसकी रजा में राजी, फिर नहीं फकीरी है
जागे तो सब अपना है, नहीं तो झूठा सपना है
वृथा रहा क्यों डोल, हर पल है अनमोल
मन की आँखें खोल
3. सब के दिलों में रहता, हाजरा हजूर है
सच्ची लगन हो दिल में, देता भरपूर है
कण-कण में बो रम रहा, झोली भर-भर दे रहा
कोई ना खाली जाये, सच्चा है दरबार
मन की आँखें खोल

पहचान सके तो पहचान, कण-कण में छिपा है भगवान्

1. सूरज की रोशनी, चंदा की चाँदनी
तारों की डिलमिल छाया
पर्वत पहाड़ और नदी ये झरने
सबमें उसी की माया
मिला सृष्टि का ये वरदान, कण-कण में
2. जन्म से पहले जीव मात्र का, तू ही पालन हारा
हाड़ मांस और रुधिर के अंदर, शुद्ध दूध की धारा
डाली माटी के पुतले में जान, कण-कण में
3. अदभुत जगत की लीला देखकर
होता नहीं विश्वास
बिन आधार के धरती खड़ी है
खम्ब खड़ा आकाश
कैसी लीला प्रभू की महान, कण-कण में

प्रभु आपकी कृपा से, सब काम हो रहा है
करते हो आप प्रभू जी, मेरा नाम हो रहा है

1. पतवार के बिना ही, मेरी नाव चल रही है
भाग्य के बिना ही, हर चीज मिल रही है
कृपा है सतगुरु जी, जो कुछ भी हो रहा है
करते हो
2. करता मैं कुछ नहीं हूँ, सब काम हो रहा है
सतगुरु तेरी बदौलत, मेरा नाम हो रहा है
जो करा रहा है मुझसे, सुबह-शाम हो रहा है
3. मेरे पास तो गुरुजी, कोई चीज कम नहीं है
तेरे सिवा ऐ दाता, भाता भी कुछ नहीं है
मेरा तुम्हारा नाता, निष्काम हो रहा है
करते हुए

फलक से आज उत्तरा तू
 इलाही नूर है तेरा
 बता सकती नहीं मैं आज खुद आया खुदा मेरा

1. तड़फाती थी यह रुँह मेरी-1
 तेरे कदमों को पा जाऊँ
 मगर काबिल नहीं इतनी, तेरे कदमों में रहा पाऊँ-2
2. उत्तरा फलक से तुझको, तेरे भक्तों ने रो-रो कर
 नजर आते हैं पैगम्बर, और देवी देवता तुझमें
3. कदम है चूपते तेरे, जर्मों और आसमां मिलकर
 दिशाएं मुँह छुपाती हैं, तेरे जलवे से शरमा कर
4. कसम है तेरे कदमों की नहीं तुझसा मिला कोई
 मिले तुझको बहुत मुझसे, मुझे तुझसा नहीं कोई
5. तू ही तू है, तू ही तू है, तू ही तू है तू ही तू है
 तरसते दरश को तेरे, तीनों लोक हैं तू ही तू

ब्रह्म ज्ञान की सीढ़ियों पे कोई-2 विरला चढ़े,
जो चढ़ जाये सीढ़िया चौरासी लख उस दी कटे।

1. मानुष तन मिला अनमोला, मैंने माटी में उसको रोला
सतगुरु ने कृपा करके, विवेक का ताला खोला
कि माटी से कंचन करे, जो चढ़ जाये....
2. मैं जब से जगत में आया था अपना आप भुलाया
गुरु ने मेरे मन मंदिर मैं, है ज्ञान का दीप जलाया
कि कागा से हँसा करे, जो चढ़ जाए.....
3. गुरु काम क्रोध से बचाए, और राम द्वेष को मिटाए
ये प्रेम का सागर बनके, खुद पिए और सबको पिलाए
कि सबसे प्रेम करे, जो चढ़ जाए.....
4. मैं गुरु पर जाऊँ वारी जाऊँ लाख-2 बलिहारी
स्वरूप का पता बताके, मेरी ढूबती नैया तारी
कि आत्म रूप लखे, जो चढ़ जाए.....
5. गुरु आया बन अवतार है, इसकी महिमा अपरंपार है
कोई माने या न माने, ये तो वो ही कृष्ण मुरार है
कि गोपियों के भाग्य जगे, जो चढ़ जाए.....

बिना राम दे तू किसी नाल प्यार न करी
 ओ मना याद रखी,
 सोना छड़ के तू मिट्टी वा व्यापार ना करी
 ओ मना याद रखी।

1. कोई मन्दा बोल बोले अगो बोली ना, हाँ बोली ना
 देखी बन्दा हो के गन्दगी फरोली न, हाँ फरोली ना
 कोड़ी तकदीर नाल तकरार ना करी ओ मना.....
2. जे तू नेड़े जाना चाहे भगवान दे, हाँ भगवान दे
 पंजा पैरीयाँ नू नेड़े बी ना आन दे, हाँ ना आन दे
 काम क्रोध लोभ मोह ते अहंकार ना करी ओ मना..
3. गेड़े मुड़ के चौरासियाँ दे खाई ना, हाँ खाई ना,
 यही वेला है सुनहरा चुक जाई ना, हा चुक जाई ना,
 देखी अपनी उद्धार वा उधार ना करी ओमना.....

बसाएँ आओ प्रेम नगरीया बसाएँ,

भगाएँ सब वैर को दूर भगाएँ

1. जात-पात और ऊँच नीच को

प्रेम का रंग चढ़ाएँ, आओ.....

2. हित अनहित सब मिलकर सोचे

ध्रेद की मीन को ढाएँ, आओ.....

3. पर अवगुण और निज गुणगन को

मन से शीघ्र भगाएँ, आओ.....

4. माया के सब तार तंबूरे

ब्रह्म के सुर से मिलाएँ, आओ.....

5. अतःकरण की शुद्ध भूमि पर

प्रेम का बरुआ उगाएँ, आओ.....

6. ज्ञान का दीपक प्रेम की बाती,

सत् चित् ज्योति जलाएँ, आओ.....

7. शहनशाह और रंक सभी मिल

सोया भाग्य जमाएँ आओ.....

ਬਹਿਸਤੀ ਪੰਗਾ ਪਾਈਆਂ ਏਨਾ ਫਕੀਰਾ ਨੇ
ਧਾਰਿਆਂ ਰਬ ਨਾਲ ਲਾਇਆਂ ਏਨਾ ਫਕੀਰਾ ਨੇ

1. ਏਨਾ ਨੇ ਰਬ ਨੂੰ ਕੈਦੀ ਬਨਾਯਾ
ਪ੍ਰੇਮ ਦਾ ਜਾਲ ਫੈਲਾਯਾ ਰੇ
ਅਖਿਆਂ ਰਿਬ ਨਾਲ ਲਾਇਆਂ ਏਨਾ ਫਕੀਰਾ ਨੇ.....
2. ਜਾਲਿਮ ਰੋਗ ਝਿਕ ਦੇ ਰੋਗੀ, ਹਰ ਵਮ ਧਾਰ ਦੀਦਾਰ ਦੇ ਧੋਗੀ
ਤਲਿਤਿਆਂ ਤਾਰਿਆਂ ਲਾਇਆਂ ਏਨਾ.....
3. ਨਾਲ ਸਾਈ ਦੇ ਅਖਿਆਂ ਲਾਨਦੇ, ਅਨਵਰਾਂ ਬਾਹਰਾਂ ਇਕ ਹੋ ਜਾਵੇ
ਇਲਾਹੀ ਧਾਰਿਆਂ ਲਾਇਆਂ ਏਨਾ ਫਕੀਰਾ ਨੇ.....
4. ਗੋਦਡੀ ਦੇ ਨਾਲ ਨਾ ਘਾਰ ਏਨਾ ਨੂੰ ਨਾ ਕੋਈ ਡਰ ਨਾ ਖੌਫ ਏਨਾ ਨੂੰ
ਨੈਨਾ ਝਾਡਿਆਂ ਲਾਇਆਂ ਏਨਾ ਫਕੀਰਾ ਨੇ.....
5. ਅਪਨੇ ਮੇਂ ਹੈ ਮਸਤ ਆਸ਼ਿਕ, ਮਸਤੀ ਮੌਜ ਏਨਾ ਦਾ ਰੰਗ
ਕਾਮਨਾ ਸਕਲ ਮੁਕਾਇਆਂ ਏਨਾ ਫਕੀਰਾ ਨੇ.....

बनवारी रे, जीने का सहारा तेरे नाम रे
मुझे दुनिया वालों से क्या काम रे

1. झूठी दुनिया, झूठे बंधन, झूठी है ये माया
झूठा स्वांस का आना जाना, झूठी है ये काया,
सांचो तेरो नाम रे
2. रंग में तेरे रंग गई गिरिधर, छोड़ दिया जग सारा
बन गई तेरे प्रेम की जोगन, लेकर मन इकतारा
प्यारो तेरो धाम रे.....
3. दर्शन तेरा जिस दिन पाऊँ, हर चिन्ता मिट जाए
जीवन मेरा इन चरणों में, आस की ज्योति जलाए
बाँह पकड़ लो, श्याम रे.....

ब्रज के नन्द लाला राधा के सांवरिया
सब दुख दूर हुये जब तेरा नाम लिया

1. मीरा पुकारे प्रभू गिरधर गोपाला

ढल गया अमृत में, विष का भरा प्याला

कौन मिटाये उसको, जिसको बचाए नन्दलाल

सब दुख दूर हुये

2. नैनों में श्याम बसे, मन में बनवारी

सुध बिसराई गई, मुरली की धुन प्यारी

मन के मधुकन में रास रचाये रसिया

सब दुख दूर हुये

3. जब तेरे गोकुल में आया दुखः भारी

एक इशारे पर, सब विपदा टारी

मुड़ गया गोर्वधन, जहाँ तूने मोड़ दिया

सब दुख दूर हुये

ਬੇਰ ਚੁਨ-ਚੁਨ ਝੋਲੀ ਵਿਚ ਪਾਧੇ ਭੀਲਨੀ
ਕਨਡੇ ਚੁਭਨ ਤੇ ਰਾਮ-ਰਾਮ ਗਾਧੇ ਭੀਲਨੀ

1. ਜਦੋ ਸਨ੍ਤਾ ਦੇ ਦਿਲ ਅਭਿਮਾਨ ਆ ਗਿਆ
ਓਦੋ ਭੀਲਨੀ ਤੇ ਦਿਲ ਵਿਚ ਜਾਨ ਆ ਗਿਆ
ਛੋਡ੍ਹ ਬਾਂਗਲਾ ਨ੍ਹੂ, ਜਾਂਗਲਾ ਚ ਜਾਏ ਭਿਲਨੀ
ਬੇਰ ਚੁਨ
2. ਜਦੋਂ ਸਨ੍ਤਾ ਨੇ ਭਿਲਨੀ ਨ੍ਹੂ ਧਕਕਾ ਮਾਰਿਆ
ਓਦੋਂ ਰਾਮ ਕੋਲੋਂ ਦੁਖ ਨਾ ਗਿਆ ਸਹਾਰਿਆ
ਕਹਦੇਂ ਰਾਮ ਤੇਰੀ ਕੁਟਿਆ ਤੇ ਆਕਾ ਭਿਲਨੀ,
ਬੇਰ ਚੁਨ
3. ਭਿਲਨੀ ਰਾਮ ਦੇ ਮਿਲਨ ਦੀ ਆਸ ਰਖਦੀ
ਰੋਜ ਝਾਡੂ ਦੇ ਨਾਲ ਰਸਤਾ ਸਾਫ਼ ਕਰ ਦੀ
ਹੁਣ ਸਾਂਗਤਾ ਨ੍ਹੂ ਦਰਸ਼ਾ ਕਰਾਧੇ ਭਿਲਨੀ,
ਬੇਰ-ਚੁਨ
4. ਦੇਖਿਆਂ ਭਿਲਨੀ ਦੇ ਨਾਲ ਕੀ ਕਮਾਲ ਹੋ ਗਿਆ
ਰਾਮ-ਰਾਮ ਰਟਦੀ ਦਾਂ ਬੇਡਾ ਪਾਰ ਹੋ ਗਿਆ
ਹੁਣ ਚਢਕੇ ਵਿਮਾਨ ਤਜੇ ਜਾਧੇ ਭਿਲਨੀ
ਬੇਰ ਚੁਨ

बुतखाने के पर्दे में काबा नजर आता है
हर बुत में भी या रब तेरा जलवा नजर आता है

1. ए प्रेम कहीं ले चल दहरों धर्म छूटे
इन दोनों मकानों में झागड़ा नजर आता है
हर बुत में
2. प्रेम के रुतबे को मुशरम कोई देखे
अल्लाह भी मजनू को लैला नजर आता है
हर बुत में
3. साकी की मुहब्बत में दिल पाक हुआ दिल साफ हुआ
अब जितना सिर झुकाता हूँ शीशा नजर आता है
हर बुत में
4. जब से साकी ने एक कतरेमय पिलाया
उस रोज से हर कतरा दरिया नजर आता है
हर बुत में

ब्रह्म से ब्राह्मण पृथारा, महावाक्य कहते ये मीठा
ओम-ओम, ओम-ओम, ओम-ओम

1. गर्भ में भी ज्ञान चचा, अर्थ ओहम् का सुनूँ
कुरुक्षेत्र में युद्ध लिए आऊँ, ओम

2. तपोवन में तपस्वी भी
आवाज करते ये सदा, हैवान होते सब शांत हैं
महावाक्य सुनते ये मीठा, ओम

3. अर्थ ओहम् के यज्ञ में
स्वाहा कर्स्त तन मन सारा
सफलता के कुण्ड से अमृत निकला ये मीठा ओम

4. अहं आत्मा मम माया
निश्चय हुआ है दिल अन्दर
आनन्द में बढ़ता जाऊँ, महावाक्य कहते ये मीठा ओम

5. थकता कभी निज खेल से
सृष्टि समेटू अन्त में
लीन हो निर्माण में, महाकाव्य कहते ये मीठा ओम

भीतर है सखा तेरा सखा मन लगा के देख
अन्तःकरण में ज्ञान की ज्योति जला के देख

1. है इन्द्रियों की शक्तियाँ बाहर की ओर जो
बाहर से तोड़कर इन्हें अंदर से जोड़ दो
कर सकल द्वार बंद समाधि लगा के देख
2. निज आत्मा में अपनी रचना का ध्यान कर
निश्चय ही झूम जाएगा महिमा का गान कर
श्रद्धा की रुठी हुई देवी मना के देख
3. साखी पवित्र देव है बिंगड़ी बने न क्यों
जीवन ये मेरा भक्ति के रस में भिगे न क्यों
आत्मा के आंनद का जीवन बना के देख

भक्तों फूल बरसाओ मेरे गुरुदेव आये हैं, मेरे

1. दुखों का नाश होता है गुरु के दर्श पाने से
गुनाहों तुम न शरमाओ बक्षण हार आये हैं
भक्तों फूल
2. जिधर को नजर आती है, नजारे ही नजारे हैं
मेरे दाता के चरणों में सहारे ही सहारे हैं
चरण रज शीश पर लाओ मेरे गुरुदेव आये हैं
3. गुरु बहम गुरु विष्णु गुरु महेश है मेरे
गुरु मालिक गुरु स्वामी गुरु है देवता मेरे
भक्तों रागिनी गाओ मेरे गुरुदेव आये,
4. दौलत ज्ञान भक्ति की लुटाने आप आये हैं
ये मार्ग प्रेम भक्ति का दिखाने आप आये हैं
झोलियाँ भर लेके जाओ मेरे गुरु देव आये हैं
भक्तों फूल

मेरे मन वाली मटकी टूट गई रे
टूट गई टूट गई, टूट गई रे

1. भला होया मेरी मटकी टूट गई-2
मैं दही बिलौन तो छूट गई.....
2. भला होया मेरी माला टूट गई
मैं राम जपन तो छुट गई
3. भला होया मेरी गागर टूट गई
मैं पानी भरन तो छूट गई....
4. चंगा होया मेरी चुनरी फट गई
मैं लोक लाज तो छूट गई.....
5. चंगा होया मैं ऐत्थे आ गई
मैं निंदा चुगली तो छूट गई.....
6. चंगा होया गुरु शरणी लाया
मैं घर दे कमां तो छुट गई....रे
7. मेरे श्याम दी ज्योतां देखो जी
ओ हर दिल दे विच बस गई....रे
8. चंगा होया मैं अखियां लाइया
मैं प्रेम गली विच लुट गई-3...रे
9. चंगा होया, मैं सत्संग आई
मैं मैं मेरे तो छुट गई-3 रे

मन लागो मेरो राम फकीरी में

1. जो सुख पायो मैंने राम भजन में
सो सुख नाहीं अमीरी में, मन
2. भला बुरा सब का सुन लीजे
कर गुजरान गरीबी में, मन.....
3. प्रेम नगर में रहनी हमारी
बले बनी आई सबूरी में, मन.....
4. हाथ में पोथी बगल में सोटी
चारों ओर जगीरी में, मन.....
5. आखिर यह तन खाक मिलेगा
काहे फिरत मगरुरी में.....
6. भाई बंधु कुटुम्ब कबिलों
बांध्यो मोहे जंजीरी में
7. कहत कबीर सुनो भई साधो
साहिब मिलेंगे सबूरी में

ਮੇਹਰਾਂ ਵਾਲਿਆਂ ਸਾਇੰਧਾ ਰਖੀ ਚਰਣਾ ਦੇ ਕੋਲ-2
ਰਖੀ ਚਰਣਾ ਦੇ ਕੋਲ.....

1. ਦਰ ਤੇਰੇ ਫਰਿਯਾਦ ਕਰਾਂ ਮੈਂ ਹੋਰ ਸੁਨਾਵਾ ਕੈਨ
ਖੋਲ ਨ ਦਫਤਰ ਏਥਾ ਵਾਲੇ ਦਰ ਤੋ ਧਕ ਨ ਮੈਨੂ
2. ਤੇਰੇ ਜਿਆ ਮੈਨੂ ਹੋਰ ਨ ਕੋਈ ਮੇਰੇ ਜਥੇ ਲਖ ਤੇਨੂ
ਜੇ ਮੇਰੇ ਵਿਚ ਏਥਾ ਨ ਹੌਂਦੇ ਤੂ ਬਖ਼ਸ਼ੀਂਦਾ ਕੈਨੂ
3. ਔਗਣਹਾਰ ਦੀ ਬੇਨਤੀ ਤੁਮ ਸੁਨ੍ਹੋ ਗਰੀਬ ਨਵਾਜ
ਜੇ ਮੈਂ ਪੂਰਤ ਕਪੂਰ ਹਾਂ ਤੋ ਬੌਹੜ ਪਿਤਾ ਕੋ ਲਾਜ
4. ਓਖੇ ਵੇਲੇ ਕੋਈ ਨਹੀਂ ਨ ਬਾਬੂਲ ਬੀਰ ਨ ਮਾਂਵਾ
ਸਭੈ ਧਕਕਾ ਦੇਵਦੇ ਕੋਈ ਨ ਫਡ਼ਦਾ ਬਾਹਵਾ
5. ਏਕ ਏਥਾ ਮੇਰਾ ਬਾਬੂਲ ਦੇਖ ਦੇਂਦਾ ਦੇਸ਼ ਨਿਕਾਲਾ
ਲਖ ਏਥਾ ਮੇਰਾ ਸਤਗੁਰ ਦੇਖੋ, ਕੇਖ ਕਰਦਾ ਟਾਤ
6. ਜੇਤੇ ਸਾਗਰ ਨੀਰ ਭਰਯਾ ਤੇ ਅਕਗੁਣ ਹਮਾਰੇ
ਦਿਆ ਕਰੋ ਕੁਛ ਮੇਹਰ ਤਪਾਕੋ ਛੁਵਦੇ ਪਤਥਰ ਤਾਰੇ।

मेरी रसना से प्रभू तेरा नाम निकले
हर घड़ी हर वेले, ओम-२ निकले

1. मन मंदिर में ज्योति जगाऊँगी
प्रभु तेरे मैं सदा गुण गाऊँगी
मेरे रोम-२ विच तेरा नाम निकले....
2. मेरे अवगुण चित्त से भुला देना
मेरी नैया पार लगा देना
तेरी याद विच सुबह और शाम निकले
3. तेरी महिमा का सदा गुणगान करूँ
तेरे वचनों का नित मैं ध्यान धरूँ
तेरी याद विच जीवन तमाम निकले।

मेरी अखियां विच शाम मेरा आन बसिया
नैन खोला किवें

1. नैन खोल ती ते लोकी मैनू बेखदे
कहदें किथो लब्बा लाल, सानु भेद दे
ऐना सुन के मैं पलकां नु होर कसया, नैन
2. सइयों पूछो न गल इस लाल दी
पहले पाल करो जी दलाल दी
सतगुरु है दलाल जिन्हें भेद दसया, नैन खोला
3. राती सपने विच शाम मेरे आ गए
मेरी मांग विच सुवा रंग पा गये
मैं तां हो गई सुहागन अंग-2 रसिया, नैन
4. मैंनू सतगुरु साडी दीती ज्ञान दी
मैं तो ला लई किनारी उते ध्यान दी
सखी जग बल मन हुन नइयो नसदा
नैन खोला.....

मैं आप ब्रह्मनंद मैंनू वेद गांवदा
 समदृष्टि करके देखो प्यारा नजर आंवदा
 मत भूलो भटको प्यारे वेला हथ न आवंदा।

1. प्रभू को खोजन मैं चली मैं आपा भूल गयी
 तन मन में मेरे व्यापक जैसे दूध में वही
2. प्रभु को ढूँढन मैं चली मथुरा द्वारिका
 देही में उसका वास उद्घम करो विचार का
3. मैं पाँच कोष से दूर मेरा साखी स्वरूप है
 मैं आंदि मध्य अन्त मेरा यही स्वरूप है
4. तिलो में जैसे तेल है, मेहंदी में जैसे रंग
 मैं सर्वव्यापक आत्मा रहता हूं सबके संग।

मैं कण-2 वासी, हर घट में बसा हूँ
 कहे आत्मा मुझको मैं परमात्मा हूँ
 है कोई जगह वो जहां मैं नहीं हूँ
 जहां देखता हूँ वहां मैं ही मैं हूँ
 मैं ही था, मैं ही हूँ, रहूँगा।

1. मैं करता हुआ कुछ भी करता नहीं हूँ
 मैं जग का हूँ धाता कुछ धरता नहीं हूँ
 मैं रचना रचा कर कुछ रचता नहीं हूँ
 सम वृष्टि से देखो वहां मैं ही मैं हूँ, मैं ही था...
2. मैं बचपन जवानी बुढ़ापा नहीं हूँ
 न कटता न जलता न गलता कभी हूँ
 अजर हूँ अमर हूँ मैं वो आत्मा हूँ
 मैं देखूँ सभी को पर दिखता नहीं हूँ
4. मेरे तत्त्व को जाना है मुझ को पहचाना
 वह भ० स्वयं है मुझे जिसने जाना
 मैं उस में वह मुझ में समाया हुआ है
 मैं पहले ही था, अब प्रगट हुआ हूँ, मैं ही था-
5. मेरा रूप न रंग न आकार कोई
 मैं बन गया साकार नि० मैं ही
 है सत चित्त आनन्द रूप है मेरा
 मैं ही वह ब्रह्मा हूँ, मुख जग ने है फेरा मैं ही था...

मेरा सतगुरु प्यारा मीत है

मीतों से प्यारा मीत है.....

1. सतगुरु शब्द उचारदे जीवे अमृत वर्षा हो रही
जन्म-2 दी बिछड़ी मैं तो रंक से राजा हो गयी
मेरा सतगुरु परम पुनीत है, मीतों से प्यारा....

2. मोह माया के जाल में मैंने अपना आप गंवाया सी
पूरे गुरां ने कृपा करी, बांह पकड़ के पार लगाया सी
ये तो महापुरुषों की रीत है, मीतों से.....

3. आपे खेल खिलाड़ी, मोहन आपे खेल रचांवदा
महापुरुषों के वाक्य द्वारा भेद सारा खुल जांवदा
वो तो छुप-छुप करते प्रीत है, मीतों.....

4. मैं प्रीतम की प्रीतम मेरा दोनों एक स्वरूप है
जल थल व्यापक पूरन सारे सोहम ब्रह्मा स्वरूप है
मेरा वेद भी गाते गीत है, मीतों से प्यारा....

मेरहबान-२ सतगुरु मेरा मेरहबान
 सकल जगत को देवे ज्ञान सतगुरु मेरा मेरहबान
 तुम सतगुरु हऊ तुम्हारा चेला
 बड़े भाग्य हुआ तुम संग मेला

1. जब से आया मैं शरण तिहारी
 तब से मैने पायी नजरें निहारी
 आया मैं सुनन-मनन को वाणी
 पाया मैंने सतगुरु पूरण ब्रह्म ज्ञानी
2. सतगुरु ने मेरी दृष्टि संवारी
 सतगुरु ने मेरी हो मैं मारी
 दुखः नाठे सुख सहज समाये
 आनन्द भया तुद शरणी आये।
3. काँम क्रोध लोभ मोह मन हर लीना
 बंधन काट मुक्त गुरु कीना
 भूले मारग जिस बतलाया
 ऐसा गुरु बड़भागी पाया
4. मान अपमान दौ सम कर जाने
 तन मन मेरा सतगुरु हवाले
 सतगुरु मेरा बड़ा समरथा
 शांत भई मेरा दुखः रोग लथा

मेरी जिन्दगी में क्या था तेरी कृपा से पहले
मैं बुझा हुआ दीया था तेरी कृपा से पहले

1. मैं था खाक एक जर्जा और क्या थी मेरी हस्ती
यूं थपेड़े खा रहा था तूफां में जैसे कश्ती
दंर बदर भटक रहा था तेरी कृपा से पहले
2. मैं था इस तरह जहां में जैसे खाली सीप होती
मेरी बढ़ गई है कीमत तूने भर दिए हैं मोती
मुझे कौन पूछता था तेरी कृपा से पहले
3. यूं तो है जहां में लाखों तेरे जैसा कौन होगा
तेरे जैसा बंदा परवर भला ऐसा कौन होगा
मेरा कौन आसरा था तेरी कृपा से पहले....
4. तू जो मेहरबान हुआ तो ये जहां मेहरबान है
ये जमीन मेहरबान है, आसमां मेहरबान हैं
मेरा खुद तलक जुदा था तेरी कृपा से पहले
5. तेरी रहमतें बड़ी हैं तू भी सतगुरु बड़ा हैं
तेरी रहमतों को ठाकुर कौन दास गा सका है
न ये गीतें न गला था तेरी कृपा से पहले....

मैंने ऐसा सतगुरु पाया, मेरा रोम-2 खिल आया

1. ऐसी ज्ञान की ज्योति जगाई
अज्ञानता की उतरी काई
हरि नाम ही मोहे भाया..... मेरा.....

2. मोह माया के बंधन छूटे
मेरे तेरे के भ्रम भी छूटे
मैंने सबमें प्रभू को पाया

3. ऐसी लगन है लागी मोहे
जहां भी देखूँ तू ही तू है
मोहे और कछु ना भाया..... मेरा.....

4. नैया छोड़ी आप हवाले
आप संभाले या न संभाले
मैंने छुटकारा है पाया.... मेरा....

1. मुझे मेरी मस्ती कहां लेके आई
जहां मेरे अपने सिवा कुछ नहीं है
लगा अब पता मुझको हस्ती का मेरी
बिना मेरे अपने, जहां कुछ नहीं है।
2. सभी में सभी से परे मैं ही मैं हूं
सिवाएँ मेरे अपने कहां कुछ नहीं है
न दुख है न सुख है नहीं शोक मुझको
अजब है ये मस्ती, पिया कुछ नहीं है।
3. ये सागर ये लहरें, ये झाग और बुदबुदे
कल्पित् है जल के सिवा कुछ नहीं है
अरे मैं हूं आनन्द, ये आनन्द है मेरा
है मस्ती ही मस्ती पिया कुछ नहीं है।
4. भरम ये द्वन्द्व का जो मुझमें पड़ा था
मिटाया जो मैंने खफा कुछ नहीं है
ये पर्दा दुई का हटाकर जो देखा
सभी एक मैं हूं, जुदा कुछ नहीं है।

ਮਨਾ ਮੌਜ ਬਡੀ ਹਰਿ ਨਾਮ ਅੰਦਰ

1. ਜਿਨ੍ਹੂ ਨਾਮ ਦਾ ਰੰਗ ਚਢ ਜਾਂਦਾ ਹੈ
ਓਨੁ ਪ੍ਰੀਤਮ ਹੀ ਪ੍ਰੀਤਮ ਨਜ਼ਰ ਆਂਦਾ ਹੈ
ਓਧਾ ਕਮ ਕੀ ਹੈ ਇਸ ਜਹਾਂ ਅੰਦਰ
2. ਓ ਤੇ ਸਾਰੇ ਜਗ ਦਾ ਵਾਲੀ ਏ
ਓ ਤੇ ਸ਼ਹਨਸ਼ਾਹ ਹੋ ਸ਼ਵਾਲੀ ਏ
ਚਾਁਦ ਸੂਰਜ ਨੇ ਓਧੀ ਸ਼ਾਨ ਅੰਦਰ
3. ਓ ਤੇ ਵਾਪਕ ਡਾਲੀ-ਡਾਲੀ ਏ
ਕੋਈ ਜਗਹ ਨ ਉਸਤੋ ਖਾਲੀ ਏ
ਓਧਾ ਜਲਵਾ ਹੈ ਸਾਰੇ ਜਹਾਨ ਅੰਦਰ
4. ਓਥੇ ਗੁਣਾ ਦਾ ਕਿਸ ਤਰਹ ਮੈਂ ਗਾਨ ਕਰਾ
ਓਦੀ ਲੀਲਾ ਦਾ ਕਿ ਮੈਂ ਬਖਾਨ ਕਰਾ
ਏਨੀ ਤਾਕਤ ਨਹੀਂ ਇਸ ਜੁਬਾਨ ਅੰਦਰ
5. ਜੇਡਾ ਨਾਮ ਦੇ ਪਾਲੇ ਪੰਦਾ ਏ
ਓ ਤੇ ਸਦਾ ਹੀ ਮਰ-2 ਜੀਂਦਾ ਏ
ਏਸੀ ਸ਼ਕਿਤ ਹੈ ਪ੍ਰਭੂ ਦੇ ਨਾਮ ਅੰਦਰ

मैं तो आई फख्ज तेरे दीदार को
 क्या खबर थी कि आते ही लुट जाऊँगी
 फूल लाई थी पेश करने के लिए
 क्या खबर थी कि दिल अपना दे जाऊँगी

1. उनकी महफिल की रौनक कहूँ क्या अजी
 सारी जनत नाचा करती रही
 घूंट मैंने अभी एक-दो थे पिये
 क्या खबर थी कि पीते ही बहक जाऊँगी
2. उनकी नजरों में ऐसा जादू भरा
 देखती रह गई एक बुत की तरह
 मैं तो आई थी 1-2 लम्हे के लिए
 क्या खबर थी कि हमेशा को बन्ध जाऊँगी
3. उनका मयेखाना चलता ही रहता सदा
 पीते रहते हैं हर दम प्याला नया
 चैन पाने को आई थी खोया हुआ
 क्या खबर थी कि ज्यादा तड़प जाऊँगी

मेरे मनवां तू सुन अंदर ओम की धुन
मैं पुकारा हथ जोड़ के अर्ज गुजारा-2

1. ओम अमृत बेला जो होया तू क्यों गहरी नींद में सोया
पक्षी करन पुकार मुख नाल ओम पुकार मैं पुकारा
हथ जोड़ के अर्ज गुजारा....
2. तूने मानुष चोला जो पाया इसनूँ माटी विच क्यों है रूलाया
दाग लग जायेगा फिर तू पछतायेगा मैं पुकारा.....
3. इस चोले नू रंग लगा ले, इतना गूढ़ा तू रंग चढ़ा ले
रंग चढ़ जायेगा फिर तू खिल जायेगा.....
4. जिसने प्रभू संग प्रीत लगाई उसने कीती है बहुत कर्माई
मेरे प्रभु दीनदयाल, वो है करुणानिधान मैं पुकारा.....
हथ जोड़ के अर्ज गुजारा-

मैं सारी उम्र गुजारां तेरे चरणा विच

मैंनू लगयां ने मौज बहारा तेरे चरणा विच

1. दुनिया चाहे कहे दीवाना, लौकी मारन भावे ताना

मैं मन विच मंदिर बनावा तेरे चरणा विच

2. मोह माया दियां पाइयां जंजीरा

कढ़ नहीं सकियां बाझ फकीरा

मै ताइयों झाती मारा तेरे चरणा विच

3. स्वर्ग दी मैनू लोड न कोई

मुक्ति दे नाल मेरा जोड न कोई

मैं तन मन अपना वारा तेरे चरणा विच...

4. तेरे बगैर कोई होर ना मेरा

इको सहारा सतगुरु तेरा

मैं ताइयाँ करा पुकारा तेरे चरणा विच

ਮेरਾ ਸਤਗੁਰੂ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਰੋਜ ਦੀਵਾਲੀ ਏ

ਡਿਗਾ ਤੇ ਕਾਰੇ ਸੰਭਾਲ, ਰੋਜ.....

ਸੋਹਨਿਆਂ ਸੱਗਤਾ ਦਾ ਸੋਨਾ ਵਾਲੀ

ਸੋਹਨਾ ਹੈ ਦਰਬਾਰ, ਰੋਜ.....

ਜਾਨ ਦਾ ਅਮ੃ਤ ਪਿਲਾਵਨ

ਪ੍ਰੇਮ ਪਾਰ ਦਾ ਪਾਠ ਪਢਾਵਨ

ਚੇਹਰੇ ਤੇ ਚਮਕਦਾ ਨੂਰ, ਰੋਜ.....

ਕੋਈ ਕਹਿੰਦਾ ਗੋਰਾ ਤੇ ਕੋਈ ਕਹਿੰਦਾ ਕਾਲਾ

ਮੇਰਾ ਸਤਗੁਰੂ ਚਾਁਦ ਚਕੋਰ, ਰੋਜ.....

ਮੇਰਾ ਸਤਗੁਰੂ

ਕੋਈ ਕਹਿੰਦਾ ਮਹੱਗਾ ਤੇ ਕੋਈ ਕਹਿੰਦਾ ਸਸਤਾ

ਮੇਰਾ ਸਤਗੁਰੂ ਹੈ ਅਨਮੋਲ, ਰੋਜ.....

ਮੇਰਾ ਸਤਗੁਰੂ

ਕੋਈ ਕਹਿੰਦਾ ਨੇਡੇ ਤੇ ਕੋਈ ਕਹਿੰਦਾ ਵੂਰ ਹੈ

ਮੇਰਾ ਸਤਗੁਰੂ ਹਾਜ਼ਿਰ ਹਜੂਰ, ਰੋਜ.....

ਮੇਰਾ ਸਤਗੁਰੂ

मैंनू लादो श्याम जी अपने नाम वाली मेहंदी-2

नाम वाली मेहंदी अपने नाम वाली मेहंदी

1. इस मेहंदी दी चमक अनोखी, ऐना मिलदी सबनूं सोसी
लगन लगानी पेंदी, अपने नाम वाली.....
2. ऐ मेहंदी ना मिलदी बाजारां ना मिलदी ऐ लख ते हजारां
जान गवानी पेंदी, अपने नाम वाली.....
3. ऐ मेहंदी सारी संगत नू ला दो जन्म-2 दी प्यास बुझा दो
जन्मां तक जो रेहंदी, अपने नाम वाली....
4. ऐसी मेहंदी लगाओ सावरियां जो ना उतरे सारी उमरियां
ऐयो गोपी कहंदी, अपने नाम वाली....
5. मैंनू लग गई श्याम जी तेरे नाम वाली मेहंदी
मैंनू रच गई श्याम जी तेरे प्यार वाली मेहंदी।

मेरी बिगड़ी बना दो नाथ, नाथ मैं क्यों डोलूँ
 जब मिल गया तेरा साथ, नाथ मैं क्यों डोलूँ
 जब हृदय में तेरा वास, नाथ मैं क्यों डोलूँ
 तेरे पथ से मैं कभी न डोलूँ, नाम सदा तेरा मुख से बोलूँ
 मेरी विनती यही रघुनाथ, नाथ मैं

मेरी बिगड़ी बन गई बात, नाथ मैं

जब से पकड़ा दर प्रभु तेरा, दूर हुआ है भ्रम अंधेरा
 मेरे अंदर हुआ प्रकाश, नाथ मैं मेरी बिगड़ी

जब-2 मुझ पर छाई निराशा तुम्हीं ने बँधाई आनन्द आशा
 कभी सखा कभी भ्रात नाथ मैं क्यों डोलूँ

जब सिर पर तेरा हाथ, नाथ मैं

मैं तो बसा तेरे मन में, तू ढूँढे वृन्दावन में

1. जहाँ तहाँ मैं हाजिर हूँ
जड़ और चेतन में भी हूँ
काजल बसे जैसे अखियन में, तू ढूँढे.....
2. अपनी मौज से खेल किया
भरम के कारण भेद पड़ा
धागा पड़ा, जैसे मोतियन में, तू ढूँढे.....
3. प्रेमी तू देख अंदर बैठके
ध्यान लगाओ एकांत बैठ के
तुम्हें मिलूँ मैं पल छिन में, तू ढूँढे
4. पूरे गुरु ने हमको कहा
झाँकी मार के देख जरा
वो आनन्द है तेरे अंदर, तू ढूँढे वृन्दावन में

मनां साँवरे नू किस तरह पायवा
पहले अपना आप गंवाई दा
मनां साँवरे नू इस तरह पायवा

1. फूल कहवां मैनू माली ने तोड़या
सुई थागे विच पाके पिरो लिया, मैं फिर वी मुँह नहीं बोल्या
हार बन के ते श्याम अगे जायदा
मैनू साँवरे ने गले विच पा लिया
मैनू साँवरे ने हां नाल ला लिया, मनां साँवरे.....
2. दूध कहवां मैनू ग्वाले ने चौ लिया
चाटी विच पाके बिलो लिया
मैं फिर वी मुँह नहीं बोल्या, मक्खन बन के ते श्याम
आगे जायदा, मैनू साँवरे ने भोग लगा लिया
मैनू साँवरे ने प्यार नाल खा लिया, मनां.....
3. बांस केन्दा मैनु जंगल विचो कुटया
छेद कर के ते खाली कर सुव्या, मैं फिर वी मुँह
नहीं बोल्या, बन्सरी बन के ते श्याम अगे जायेदा
मैनूं साँवरे ने होठों नाल ला लिया, मैनू साँवरे ने प्यार नाल
बजा लिया, मना साँवरे.....
4. सोना कहवां मैनु भद्ठी विच सुटया मार-2 के
हथोड़े नाल कुव्या, मैं फिर वी मुँह नहीं बोल्या
मुकुट बन के ते श्याम अगे जाइदा।
मैनू साँवरे ने सिर ते सजा लिया
मैनू सिर वा ताज बना लिया
मना साँवरे.....

मजा है जो फकीरी में, अमीरी क्या समझ पाये
उसे हरदम खुशी रहती, उसे हरदय दम लगी आहें।

1. नहीं जंगल में जाने से, नहीं बसती में रहने से
गृहस्थ आश्रम से क्या मतलब, न संयासी कहलाने से
पलटती है मनोवृत्ति, वो ही निहाल हो जाये, मजा....
2. दीवाने उसकी महफिल के, नहीं बेचैने होते हैं,
वो सोने पर भी जगते हैं, वो जगने पर भी सोते हैं
पड़ा अंदर में जो रस है वो ही हर वक्त छलकता है।
3. नहीं परवाह कांटो की, न फूलों से मुहब्बत है।
सभी में इक खुदाई है जो कि मेरी ही शोहरत है।
हटाया दिल को विषयों से, वो ही नुकसा आजमाया है।
4. किसी से न शिकायत है न खुद करता शरारत है
जो मंजिल पर पहुंच जाता, मिट्टी भटकन की आदत है
इसी आनंद की लहरों में नशे में झूमता रहता....

मैं क्या चाहता हूँ-2 इन चाहों से होना जुदा चाहता हूँ

1. ये चाहे मेरी मंजिलों की रुकावट
इन चाहों से होना जुदा चाहता हूँ
2. है चाहों का आलम गुलामी की दुनिया
मैं चलना ही जिसके न राह चाहता हूँ
3. शहनशाह रुहानी का हौके मैं बेटा
न ख्वाहशों का बनना गधा चाहता हूँ
4. वफा चाहता न जफा चाहता हूँ
तेरी मेहर की बस निगाह चाहता हूँ।

ਮेरੇ ਬਾਂਕੇ ਬਿਹਾਰੀ ਵਾ ਦਰਬਾਰ ਬੜਾ ਸੋਨਾ ਏ

ਏਥੇ ਪ੍ਰੇਮੀ ਮਿਲਦੇ ਨੇ ਪਰਿਵਾਰ ਬੜਾ ਸੋਹਨਾ

ਏਥੇ ਦਰਸ਼ਨ ਹੋਵੇ ਨੇ, ਕੀਵਾਰ ਬੜਾ ਸੋਹਨਾ ਏ

1. ਮੈਨੂ ਸਾਰੇ ਪ੍ਰਛਦੇ ਨੇ ਮੇਰੇ ਸਾਂਗੀ ਤੇ ਸਾਥੀ

ਜਿਨਕੇ ਇਕ ਵਾਰੀ ਦੇਖ ਲਈ-ਬਾਂਕੇ ਬਿਹਾਰੀ ਦੀ ਝਾਂਕੀ
ਕਿਥੋ ਢੂਢ ਕੇ ਲੇ ਆਂਦਾ ਏ-ਏ ਲਾਲ ਬੜਾ ਸੋਹਨਾ ਏ

2. ਏ ਮਾਨ ਸਰੋਵਰ ਹੈ- ਏਥੇ ਮੋਤੀ ਮਿਲਦੇ ਨੇ

ਕਈ ਜਨਮਾ ਦੇ ਬਿਛੁੰਡੇ ਪ੍ਰੇਮੀ ਇਸ ਦਰ ਤੇ ਮਿਲਦੇ ਨੇ
ਏ ਘਾਟੇ ਵਾ ਸੌਵਾ ਨਹੀਂ ਵਾਪਾਰ ਬੜਾ ਸੋਹਨਾ ਏ

3. ਮੈਨੂ ਆਪੇ ਨਹੀਂ ਮਿਲਧਾਂ ਸਤਗੁਰਾਂ ਨੇ ਮਿਲਾਧਾ

ਏਹਦੇ ਮਿਲਦੇ ਵਾ ਮੈਨੂ ਗੁਰੂ ਰਸਤਾ ਦਿਖਾਧਾ ਏ
ਮੇਰੇ ਸਤਗੁਰੂ ਪਾਰੇ ਵਾ ਤੁਪਕਾਰ ਬੜਾ ਸੋਹਨਾ

4. ਮੇਰੇ ਬਾਂਕੇ ਬਿਹਾਰੀ ਦੀ ਬੜੀ ਸ਼ਾਨ ਨਿਰਾਲੀ ਏ

ਏਥੇ ਰੋਜ ਦਸ਼ਾਹਰਾ ਏ ਏਥੇ ਰੋਜ ਦੀਵਾਲੀ ਏ
ਏਥੇ ਤਜ ਮਨ ਰੰਗ ਦੇ ਨੇ ਰੰਗਦਾਰ ਬੜਾ ਸੋਹਨਾ ਏ

5. ਜੇਡਾ ਏਥੇ ਆ ਜਾਂਦਾ ਓਹਦੀ ਬਿਗਡੀ ਸੰਵਰ ਜਾਂਦੀ

ਜੇਡਾ ਦਰਸ਼ਨ ਪਾ ਲੇਂਦਾ ਓਹਦੀ ਕਿਸਮਤ ਖੁਲ ਜਾਂਦੀ
ਮੇਰੇ ਸਤਗੁਰੂ ਪਾਰੇ ਵਾ ਦੀਵਾਰ ਬੜਾ ਸੋਹਨਾ ਏ

6. ਮੇਰੇ ਬਾਂਕੇ ਬਿਹਾਰੀ ਦੀ ਪਹਚਾਨ ਨਿਰਾਲੀ ਏ

ਸਿਰ ਮੁਕੁਟ ਸੋਹੇ ਸੋਨਾ ਹਥ ਬਾਂਸਰੀ ਪਾਰੀ ਏ
ਜਦੋ ਬਾਂਸਰੀ ਬਜਾਦੇ ਨੇ ਸੁਰਤਾਲ ਬੜਾ ਸੋਹਨਾ ਏ

ਮੇਰੇ ਬਾਂਕੇ ਬਿਹਾਰੀ ਵਾ ਦਰਬਾਰ ਬੜਾ ਸੋਹਨਾ ਏ

ਦਰਬਾਰ ਬੜਾ ਸੋਹਨਾ ਏ-ਪਰਿਵਾਰ ਬੜਾ ਸੋਹਨਾ ਏ

ਮुरलੀ ਮੋਹਨ ਦੀ ਸਖਿਆਂ ਤੇ ਜਾਦੂ ਕਰ ਗੱਈ
ਕੇ ਮੁਰਲੀ ਮੋਹਨ ਦੀ.....

1. ਕੇ ਮੁਰਲੀ ਦੀ ਧੁਨ ਸੁਨ ਕੇ ਝੰਡ ਵਾ ਸਿੰਹਾਸਨ ਡੋਲਿਆ
ਕੇ ਝੰਡ ਵਾ ਸਿੰਹਾਸਨ ਡੋਲਿਆ ਸ਼ਿਵਾ ਦੀ ਸਮਾਧਿ ਖੁਲ ਗੱਈ
ਕੇ ਮੁਰਲੀ ਮੋਹਨ ਦੀ.....
2. ਕੇ ਮੁਰਲੀ ਦੀ ਧੁਨ ਸੁਨ ਕੇ ਤੱਡੇ ਪੱਥੀ ਠਹਰ ਗਏ
ਕੇ ਤੱਡੇ ਪੱਥੀ ਠਹਰ ਗਏ ਸੋਰਾਂ ਨੂੰ ਚਾਲ ਭੁਲ ਗੱਈ
ਕੇ ਮੁਰਲੀ ਮੋਹਨ ਦੀ.....
3. ਕੇ ਮੁਰਲੀ ਦੀ ਧੁਨ ਸੁਨ ਕੇ ਗੜਾ ਨੇ ਘਾਸ ਛਡਿਆ
ਕੇ ਗੜਾ ਨੇ ਘਾਸ ਛਡਿਆ ਧਮੁਨਾ ਦੀ ਲਹਰ ਰੁਕ ਗੱਈ
ਕੇ ਮੁਰਲੀ ਮੋਹਨ ਦੀ.....
4. ਕੇ ਮੁਰਲੀ ਦੀ ਧੁਨ ਸੁਨ ਕੇ ਰਾਸ ਮਣਡਲ ਰਚਿਆ
ਕੇ ਇਕ-2 ਝਾਇ ਤੇ ਸਖੀ ਸਬਨਾ ਜੀ ਝੋੜੀ ਰਲ ਗੱਈ
ਕੇ ਮੁਰਲੀ ਮੋਹਨ ਦੀ.....
5. ਕੇ ਮੁਰਲੀ ਦੀ ਧੁਨ ਸੁਨ ਕੇ ਨਾਰਦ ਦੀ ਕੀਣਾ ਰੁਕ ਗੱਈ
ਕੇ ਨਾਰਦ ਦੀ ਕਿਣਾ ਰੁਕ ਗੱਈ ਲਕਸ਼ਮੀ ਦੀ ਸਮਾਧਿ ਲਗ ਗੱਈ
ਕੇ ਮੁਰਲੀ ਮੋਹਨ ਦੀ.....

मेरे सतगुरु तेरा तकना क्या बात है
 तेरा मीठा-मीठा हसँना क्या बात है
 तेरा मेरे बल तकना क्या बात है
 क्या बात है (2)

1. क्यों ना मान करो मैं सतगुरु, तू अंग-संग मेरे वसदा
 जदो बुलावा सतगुरु मेरा आवे नसदा नसदा
 तेरी मतवाली चाल है क्या बात है
 तू तो हर बेले नाल क्या बात है-क्या बात है-(2)
2. सब दे दिला विच सतगुरु वसदा रंग है इसदा गुलाबी
 जेहड़ा इस बल बेख लवे हो जाए शराबी
 तेरा भोला भाला मुखड़ा क्या बात है
 मुक जाए सारा झगड़ा-क्या बात है....क्या बात है (2)
 मेरे सतगुरु
3. सोहणे सोहणे जलवे तेरे सोहणियाँ तेरियाँ अदावाँ
 तेरा रूप निराला सतगुरु मैं सदके बारी जावाँ
 तेरा पाया नहीं पार तेरी क्या बात है
 तेरी लाला अपरम्पारं-तेरी क्या बात है
 तेरी वाणी बेमिसाल तेरी क्या बात है-क्या बात है-(2)
 मेरे सतगुरु
4. प्रीत लगाई तेरे नाल श्यामा
 देना न हुण धोखा
 प्रीत लगानी सोखी है पर
 तोड़ निभाणा ओखा
 तेरी ऊँची है हस्ती क्या बात है
 चढ़े नाम वाली मस्ती क्या बात है

मुहब्बत की बस्ती बसाता चला जा

के मस्ती के गीत गाता चला जा

1. मुहब्बत के कितने बड़े काम है

न सोने दे इनको जगाता चला जा

2. सुख दुख की हद से आजाद होकर

मुहब्बत की हद को बढ़ाता चला जा

3. मुहब्बत -4

कोई धुन ही यही गीत गाता चला जा

4. महोब्बत के दरिया का तूफान बन कर

के हर शय को अब तू बहाता चला जा

5. महोब्बत की गहराइयों में समाकर,

नशे गीत प्रेम के गाता चला जा

6. बन के मयखाना खुद ही प्रेमानन्द

शराबे मुहब्बत पिलाता चला जा

मेरे गुरुदेव चरणों में सुमन श्रद्धा के अर्पित है
तुम्हारी देन जो भी है वो ही चरणों में अर्पित है

1. ना रीति है ना प्रीति है नहीं पूजन की शक्ति है
मेरा यह तन, मेरा यह मन मेरा जीवन सर्मपित है
2. मेरी इच्छाएँ हो तेरी मेरे सब कर्म हो तेरे
बना लो यंत्र अब मुझको मेरा कण-कण सर्मपित है
3. तू ही है भाव में, मेरे विचारों में, पुकारो में
तेरे चरणों में है गुरुवर मेरा सर्वस्व अर्पित है।

मन मत डुबाये, गुरु मत तारे

तू चलना मेरे मन, गुरु के इशारे, मन

1. गुरु के वचन पर चलना है मुश्किल
मगर चलने वालों ने पाई है मंजिल
जो माने गुरु की बात वो बाजी ना हारे, मन
2. बड़ी सीधी साधी है, बातें गुरु की
हर एक वचन में है करामात गुरु की
जो माने गुरु की बात वो प्रेमी ना हारे, मन
3. जहाँ मन की मानी धोखा ही खाया
सही रास्ता तो गुरु ने दिखाया
कोई भाग्यशाली ये समझे इशारे, मन मत
4. रावण को दुनिया में कमी कुछ नहीं थी
सभी कुछ था, लेकिन गुरु मत नहीं थी
जिज्ञासु का जीवन गुरु ही संवारे
मन मत

मैं क्या जानूँ तेरी रघुराई, तू जाने मेरी किसमें भलाई
सहारा तेरा रे ओ साई-साई

1. सारे जगत को देने वाले मैं क्या तुझको भेट-चढ़ाऊँ
जिसकी सांसो से आये खुशबू, मैं क्या उसको फूल चढ़ाऊँ
अपरमपार है महिमा तेरी, कोई ना जाने पार, सहारा
2. सारे द्वारे छोड़ भगवन आज मैं तेरे द्वारे आई
बाँह पकड़ ली अब तो ठाकुर तो जानी तेरी ठकुराई
इस दुनिया की भीड़-भाड़ में, तेरा ही आधार
सहारा तेरा रे
3. तू वो पारस जिसको छूकर लोहा भी सोना हो जाये
तेरी शरण में जो भी आये वो पापी पावन हो गए
बीच भंवर में नाव है, मेरी अब तो लगा दो पार
सहारा तेरा रे
4. तू ही सुखदाता तू ही ज्ञाता
तुझ बिन कोई नजर न आता
झुका जो सिर अब तेरे आगे, झुका रहेगा सबके आगे
मंजिल हमको मिलती यहाँ पर, ढूँढे अब कौन सहारा
सहारा तेरा रे ओ साई

मेरे प्यारे गुरु मेरे सोणे गुरु जद् मैं आंवा
जी नहीं करदा ऐ वापिस जाँवा

1. तेरे नाम दा अमृत पीता, भूल गईयाँ मैं मात् ते पिता
रिश्तेदारी तेरे नाल, मेरा करी तू ख्याल, जद
2. तेरे नाम दी किती कमाई भूल गए मैंनू बहना ते भाई
मैंनू अपना बना मैंनू चरणा नाल थे ला
जद मैं आंवा
3. तेरे नाम दा बनाया मैं गाना, ताने मारदा सारा जमाना
मेरा प्यारा बड़ा मैंनू अपना बना
जद मैं आवा
4. तेरे नाम दी चढ़ गई खुमारी मैंनू भूल गई ये दुनिया सारी
दुनियादारी तेरे नाल मेरा करी तू ख्याल
जद मैं आवा
5. तेर दर तो मैं एयाँ कुछ मँगा
सेवा स्मिरण ते शांति मंगा
मैंनू चरणों ते ला, मैंनू दर ते बूला
जद मैं आवा

मैंने गुरुवार को देखा तो ऐसा लगा

1. जैसे विष्णु स्वरूप, जैसे ब्रह्म का रूप जैसे मंदिर की धूप
जैसे गंगा का जल, जैसे पूजा स्थल, जैसे मस्ती का पल
जैसे ज्योति से ज्योति जलाता हुआ, मैंने गुरुवार
2. जैसे राधा का श्याम, जैसे सीता का राम, जैसे भक्ति निष्काम
जैसे कोयल का गीत, जैसे मीरा का गीत, जैसे राधा की प्रीत
जैसे राम जी की गाथा सुनाता हुआ, मैंने गुरुवार
3. जैसे गुणों का सागर, जैसे ज्ञान भरी गागर,
जैसे शांत महासागर, जैसे पूजा उत्कृष्ट,
जैसा गीता का पृष्ठ, जैसे मोह माया नष्ट
जैसे माधव ने अर्जुन को कुछ हो कहा, मैंने गुरुवार
4. जैसे शीतल पवन, जैसे खिलता चमन
जैसे राम जी का मन
जैसे घटा घनधोर, जैसे दिलों में हिलोर
जैसे श्याम चित्तचोर,
जैसे पर्वत से झरना सा आता हुवां, मैंने गुरुवार

मैं तो श्याम संग नेहा लगायो रे

1. कान्धे पे ओढ़े काली कमरिया
सावरी सुरनियाँ मोहनी मुरलीया
मैं तो हृदय बीच समायो रे, मैं तो श्याम
मैं तो श्याम संग अखियाँ मिलायो रे
2. अब तो भयी मैं अपने श्याम की
और श्याम भये प्रभू मोर
मैं तो लाज का पर्दा हटायो रे
मैं तो श्याम संग
3. लोग कहे मीरा भई रे बावरी
मैं तो अविनाशी वर पायो रे
मैं तो श्याम संग

माही मैं तो गोविन्द के रंग राची

1. पचरंगी चोला पहन, सखी झिरमिट खेलन जाती
वहाँ झिरमट में मिलो सांवरो, खोल मिले पन दासी
माही मैं तो
2. जिनके पिया परदेश बसत है, लिख-लिख भेजे पाती
मेरे पिया मेरे हृदय बसत है, ना कहू आती ना जाती
माही मैं तो
3. प्रेम हटी का तेल मंगाया, मन सागर लिए बांती
सूरत निरत का दिवड़ा जोया जगा रही दिन राती
माही मैं तो
4. चंदा भी जायेगा सूरज भी जायेगा
जायेगा धरनी आकाशी
पवन और पानी दोनों ही जायेंगे, अटल रहे अविनाशी
माही मैं तो
5. सतगुरु मिलया संशय छूटा घट पाया प्रकाशी-2
मोह माया दोनों की झूठे, गाये मीरा दासी
माही मैं तो

ਮहफिल रुहां दी मेरे सतगुरु लाई ऐं
जेड़ा आ जान्दा, ओनू मस्ती छाई ऐ

1. आओ सइयों नी घुट पी के देखो जी
पहले पी के, ते फिर जी के देखो जी
जेड़ा पी लेन्दा, ओने होश गंवाई ऐ
महफिल रुआ दी
2. लोहा पारस लग सोना बन जान्दा ऐ
मेरा सतगुरु, अपने जेहयां बनांदा ऐ
युक्ति दे नाल, सतगुरु घुट पिलाई ऐ
महफिल रुहां दी
3. जेड़ा पी लेन्दा, ओदी दशा अनोखी ऐ
लेकिन सइयों नी ऐ पीनी ओखी ऐ
जेड़ा पी लेन्दा ओने मुक्ति पाई ऐ, महफिल
4. सतगुरु मर्म ने जेडे भर-भर देन्दे ने
दुनिया मतलब दी पर कोई विरले लेन्दे ने
आशिक प्रेमी ने इक डीक लगाई ऐ
महफिल रुहां दी

मोपे साईं रंग डाला सतगुरु ओ महाराज

मोपे साईं रंग डाला

1. शब्द की चोट लगी मोरे मन में

भेद गया तन सारा, साईं रंग डाला

2. औषद्य मूल कछु नाहीं लागे

क्या करे वैद्य विचारा मोपे साईं

3. सुर नर मुनि जन पीर ओलिया

कोई ना पावे पारा, मोपे साईं रंग डाला

4. साहिब कबीर कौन रंग रलिया

रंग पे रंग न्यारा, मोपे साईं रंग डाला

मेरा नाथ तू है मेरा नाथ तू है
अकेला नहीं मैं मेरे साथ तू है - 2

1. चला जा रहा हूँ राह पर तुम्हारी
नहीं डर जो राह में है तूफान भारी
जो थामे हुए गर मेरा हाथ तू है मेरा नाथ
2. तू प्रीतम है मेरा, मैं तेरा पुजारी
तेरा खेल मैं हूँ तू मेरा खिलाड़ी
मेरी जिन्दगी की हरेक बात तू है मेरा नाथ
3. मैं तेरा हूँ तेरे सदा गीत गाऊँ
कभी भूल कर भी तुझे ना भूलाऊँ
तू ही मेरा बन्धु पिता मात तू है
मेरा नाथ तू है

मैं ओम में ऐसे रम जाऊँ
ऐसी निर्मल बुद्धि कर दो - 4

1. ये चंचल मन संकल्पों का, इक जाल विछाये रहता है - 2
है सत चित्त आनन्द रूप प्रभू, मेरे चित्त को चेतन कर दो
मैं ओम में ऐसे
2. मन चिन्ता करता रात दिवस, विषयों में आनन्द पाने की
इक झाँकी अपनी दिखा के प्रभू, मेरे मन को सोहम् कर दो
मैं ओम में ऐसे रम जाऊँ
3. पर दोष ना देखूँ आँखों से ना सुनूँ बुराई कानों से
सारा जग आत्म रूप बने, ऐसी मेरी दृष्टि कर दो
मैं ओम में ऐसे रम जाऊँ
4. मुख से गुणगान करूँ तेरा, सदा मीठे वचन उचारा करूँ
अमृत की धार पिलाकर के, इस वाणी में अमृत भर दो
मैं ओम में
5. ये अंग प्रतिअंग जो है मेरे, लग जाए सेवा में तेरे
जीवन अर्पण हो चरणों में, है नाथ कृपा ऐसी कर दो
- मुझे आत्म रूप दिखा के गुरु मेरे मोह का भ्रम मिटाये गुरु
इस रूप में ही रम जाऊँ, ऐसी मुझमें शान्ति भर दो-
मैं ओम में ऐसे

मेरा सतगुरु दीनानाथ वे, मेरे सिर उत्ते उसदा हाथ वे-2

1. कागा नैन निकाल के ले चल गुरु के पास

पहले वर्ष कराई के फिर लीजो तो खाए

मेरा सतगुरु दीनानाथ के

2. मेरी सी कोई नेक कमाई

जेझी ऐथे ले आई

अपने सारे छड़ गए, सतगुरु अपनी बाँह फड़ाई

मेरा सतगुरु

3. सतगुरु मेरया यज्ञ रचाया

इक आवे इक जावे

मेरा सतगुरु दीनानाथ वे

मन मत डुबोये, गुरु मत तारे
 तू चलना मेरे मन, गुरु के इशारे

1. रावण को दुनिया में कमी कुछ नहीं थी
 सभी कुछ था लेकिन गुरु मत नहीं थी
 जिज्ञासु का जीवन गुरु ही संवारे, मन मत
2. गुरु के वचन पे चलना है पुण्यिकल
 मगर चलने वालों ने पाई है मंजिल
 जो माने गुरु की बात, वो बाजी ना हारे
3. बड़ी सीधी सादी हैं बातें गुरु की
 हर इक वचन में है करामत गुरु की
 जो माने गुरु की बात वो प्रेमी ना हारे
4. जहाँ मन की मानी वहाँ धोखा खाया
 सही रास्ता तो गुरु ने सिखाया
 कोई भाग्यशाली ही समझे इशारे

मिला हमको प्यारा भगवन्, सीखा हमने मुस्कराना
उसकी भक्ति में बीते जीवन, सारी संगत दुआ करना

1. बरसो से सूने इस मन में, देखों आज बहारे आई है
अंधेरे दूर हुए गम के, ऐसी सच की ज्योति जलाई है
जलती रहे ज्योत हरदम, सारी संगत दुआ करना
2. कलियुग की काली रात गई, सतयुग का सवेरा आया है
ठोकर क्यों खाएं अब हम, सत का सूरज उग आया है
सच की राह दिखाएं वो किरण, सारी संगत दुआ करना
3. बीराने थे दीवाने हुए, खाली-खाली थे भरपूर हुए
प्रेम की बरखा बन बरसे, पतझड़ को सावन कर ही दिया
यूँ ही महके सारा चमन, सारी संगत दुआ करना
4. जैसा प्यार हमने तेरा पाया, सारे जग को
मिली तेरी छाया
बरसों से पुकारा अब पाया, मन का उपवन महकाया
यूँ ही महके सारा चमन, सारी संगत दुआ करना

मैं श्याम सुंदर नाल लाइया अखिया रस भरिया

मैं जरा भी ना शरमाइया अंखिया रस भरिया

1. किसी ने लाइया अंदर बै के, किसी ने लाइया बाहर बै के
मैं विच सभा दे लाइया अंखिया इस भरिया
मैं श्याम सुंदर
2. किसी ने लाइया विच जवानी, किसी ने लाइया विच बुढ़ापे
में बचपन तो ही लाइया अंखियाँ रसभरिया
3. किसी ने लाइया माँ तो चोरी, किसी ने लाइयाँ पियो तो चोरी
मैं विच सभा ते लाइयाँ अंखिया रस भरिया
4. किसी ने लाइया दही खवा के
किसी ने लाइया दूध पिला के
मैं मक्खन खवां के लाइया अंखियाँ

मेरे सतगुरु रंगरेज, चुनर मेरी रंग डारी
 मेरे सतगुरु रंगरंज

1. वो हरियारो छुड़ाई के, जी दियो मजीठा रंग
 धोये से अब ना छूटे दिन-2 होय सुरंग जी
 मेरे सतगुरु रंगरेज
2. सतगुरु ने चुनर रंगी जी, मेरे सतगुरु चतुर सुजान
 ओ सब कुछ उन पर बार दूँ मेरा तन मन धन और प्राण जी
 मेरे सतगुरु रंगरेज
3. कहे कबीर रंगरेज गुरु जी
 मुझ पर हुए दयाल और शीतल चुनरी
 ओढ़ के मैं मगन हुई निहाल जी
 मेरे सतगुरु रंगरेज

मेरा दिल तो दीवाना हो गया मुरली वाले तेरा
 ओ मुरली वाले तेरा, बंसी वाले तेरा
 नजरों का निशाना हो गया, मुरली वाले तेरा
 मेरा दिल तो

1. दीवानगी ने क्या-क्या सिखाया
 दुनिया छुड़ा के तुमसे मिलाया
 तेरा नजरे मिलाना गजब हो गया, मुरली
2. जब से नजर से नजर मिल गई है
 उजड़े चमन की कली खिल गई है
 दीवाना जमाना हो गया, मुरली वाले तेरा
3. प्राणनन के प्यारे कहाँ छुप गये थे
 नैनन के तोरे कहाँ छुप गये थे
 अब तो सारा जमाना हो गया मुरली वाले
4. तू मेरा प्यारा-प्यारा मैं तेरा पागल
 तिरछी नजर से है दिल मेरा घायल
 दीवाना जमाना हो गया मुरली वाले तेरा

यह मत कहाँ से पाई रे साधो,
बन्ध मोक्ष की कल्पना मिटाई रे साधो।

1. द्रष्टा, दर्शन, दृश्य त्रिपुटी से न्यारा हूँ
सब कुछ मैं ही, करने हारा हूँ
गुरु ने यह मत बताई रे साधो।
यह मत.....

2. गुरु की संगत प्यारे अजब निराली है
वो ही संगत कर सी जिसने हमता ममता मारी है
अलख निरंजन अविनाशी रे साधो
यह मत.....

3. मैंनू आत्म ब्रह्म, लखाया गुरां ने
वेदां विचों सार, पिलाया गुरां ने
पीके मैं तां होई हाँ निहाल मेरे साधो।
यह मत

ये सत्संग वाला प्याला कोई पियेगा किस्मत वाला

ये मीठा प्रेम प्याला कोई पियेगा किस्मत वाला

1. प्रेम गुरु है प्रेम ही चेला, प्रेम धर्म है प्रेम ही मेला
प्रेम की फेरो माला कोई फेरेगा किस्मत वाला।
2. प्रेम बिना प्रभु नहीं मिलता, मन का कष्ट कभी नहीं टलता
प्रेम करे उजियाला कोई करेगा...
3. प्रेम का गहना प्रेमी पाये, जन्म-मरण का दुख मिटाए
काटे कोटि कर्म जंजाला, कोई काटेगा.....
4. प्रेम ही सबका कष्ट मिटावे, लाखों से दुराचार छुड़ाये
प्रेम में हो मतवाला, कोई होएगा.....

ये भेद सनम मुझे आज मिला
तू और नहीं मैं और नहीं

1. जब दिल में तेरी झलक पड़ी
जो वहम हुआ था दूर हुआ!
अब तू ही तू दिल में बसा.....
2. कलियों को सुना के गुल ने कहा
मैं तुझ में छुपा था पहले से
तू न मुझ से जुदा, मैं न तुझ से जुदा....
3. दरिया के जोश से मौज उठी
वो उलट के सागर से कहने लगी
मैं तुझ से हुई और तुझ में फना....
4. मैं कस्तूरी तू खुशबू उसमें
मैं शीशा तू रुह उसमें,
मैं कण हूँ तू जलवानुमा...
5. था दिल में जो पर्दा गफलत का
वो झोंक के इश्क से दूर हुआ
फिर राम सनम से कहने लगा....

ये तन मन जीवन सुलांग उठे
कोई ऐसी आग लगा दे रे-2

1. दिन दुना हो विरह वेदना, पलभर चैन न आये रे
ऐसी लौ हरि नाम की लागी, रह न जाए मेरा नाम
मन वाणी से तुझे पुकारू तन से हो हरि भक्ति का काम
हरि का हो से रह जाए, मेरा सब जल जाये रे
2. मुझे पर्वत बनना पसन्द नहीं है, अभिमान मान हर लो मेरा
प्रेम नगर का वासी हूँ मैं -2 ज्ञान ध्यान हर लो मेरा
धरती के आंचल पर मेरी राख बिखेरी जाये रे.....
3. जीवन की इस कठिन डगर में तुझे पुकारू दीनानाथ
बड़े कठिन साधन से पाया-2 अब न छोड़ तेरा हाथ
चाहे दुनिया दो रंगी है, निर्दोष को दोष लगाये रे....
4. जीवन पथ पर थका है राही मार्ग चला नहीं जाता
एक तरफ जग एक तरफ प्रभु-2 मुझसे चुना नहीं जाता
हाथ पकड़ कोई मुझ अंधे को प्रभु की ओर झुका दे रे...

ये सैर क्या है अजब अनोखा, कि राम मुझमें, मैं राम में हूँ
बगैर सूरत अजब है जलवा, के राम मुझमें मैं राम में हूँ

1. मुरक्काए हुसनो इश्क हूँ मैं, मुझी में नाजो न्याज सब है
हूँ अपनी सूरत पे आप शैदा, के राम.....
2. जमाना आईना राम का है, हर एक सूरत से है वो पैदा
जो चश्मे हक भी खुली तो देखा, के राम
3. वो मुझसे हर रंग में मिला है, कि गुल से बू भी कभी जुदा है
हुबाबो दरयाह का है तमाशा, के राम
4. सबब बताऊँ मैं बजद का क्या, है क्या जो दर पर्दा देखता हूँ
सदा वो हर साज से है पैदा, के राम
5. बसा है दिल में तेरे वो दिलबर, है आईना में खुद आईना गर
अंजब तहव्युर हुआ ये कैसा, के राम
6. मुकाम पूछो तो ला मकां था, न राम ही था न मैं वहां था
लिया जो करवट तो होश आया के राम
7. अलल तवातुर है पाक जलवा, के दिल बना तुरें बकें सीना
तड़फ के दिल यू पुकार उठा के राम
8. जहाज दरिया में और दरिया जहाज में, भी तो देखिए आज
ये जिस्म कश्ती है राम दरिया के राम

ये मस्तो की महफिल में आकर तो देखो
जरा खुदी को अपनी मिटाकर तो देखो

1. भूलेंगे नशे माया के सारे
जरा गीत प्रेम के गाकर तो देखो
2. बैठा है दिल में तेरे ओ प्रेमी
जरा सिर को अपने झुका कर तो देखो
3. लहरें ये बन जायेंगी किनारे
तूफां से जरा टकरा कर तो देखो
4. खुलेंगे भण्डारे आनंद के तेरे
सतगुरु को अपना बना कर तो देखो
5. चढ़ती यहां पर है नाम खुमारी
इस सच की महफिल में आकर तो देखो।

ये जग दीवानों की वस्ती, देखा सोच विचार
देखा पागल सब संसार

1. कोई देखा धन का पागल, पूजा करता धन की
धन कारण सुख चैन गंवाया, शांति तज दी मन की-2
लाख-2 कर माया जोड़ी और जोड़-2 गया हार
2. कोई देखा रूप का पागल, यौवन का मतवाला
पल-2 जाये बीत जवानी, योवन है ढल जाना-2
जिस यौवन का मान करे, उस यौवन के दिन चार
3. कोई देखा सुख का पागल, सुख-2 करता जाए
हरि भजन बिन सुख नहीं पाए, मांगे हाथ न आए-2
जो सुख आए फिर न जाए, उसका करो विचार
4. हरि भगत भी पागल देखे, गोविन्द के मतवाले
पिये पिलाएँ प्रेम प्याला, बैठे जगत विसारे
मैं माँगूँ वो ही पागलपन, उतरे नहीं खुमार।

ये मोहब्बत की बाते हैं उदो बदंगी मेरे वश की नहीं है
यहां सिर देके होते हैं सौदे, आशकी इतनी सस्ती नहीं है।

1. इश्क वालो ने कब वक्त देखा,
तेरी पूजा में पाबंदियाँ हैं
यहाँ दम-2 पे होती है पूजा,
सिर उठाने की फुरसत नहीं है
2. आज दिल से जो मस्ती में ढूबे होश कब है उन्हें जिंदगी का
जो चढ़ती उतरी है मस्ती, वो हकीकत में मस्ती नहीं है।
3. यहां जाम बंदे रोज पीना मस्तों का यही है कहना
प्यार से जो इक बार पीले वो उमर भर उत्तरती नहीं है।
4. वो नजर क्या जमाने को देखे जिसकी नजरों में मालिक समाया
जो नजर देख लेती है उसको वो नजर फिर तरसती नहीं है।

यहाँ करने उद्धार भगवान आए हैं

हमें तारने को करुणानिधान आए हैं

1. सच्चा सौदा बेचते हैं लेने वाला कौन है
साथ अपने ये ज्ञान की दुकान लाए है।
2. है व्यापार ये निराला सदा लाभ मिलता
भरपूर प्रेम प्यार का सामान लाए है।
3. बदले में किसी से भी कुछ नहीं मागते
सदा बांटते हैं ज्ञान की ये खान लाए हैं
4. ऐसी मुरली बजाई मन मस्त हो गया
बजे प्रेम का संगीत ऐसी तान लाए है।
5. कैसे रहना खाना पीना कैसे जीना चाहिए
सदा जागते रहो ये फरमान लाए हैं
6. यहाँ दुखों का गमों का कोई काम ही नहीं
ऐसी होठों पे मधुर मुस्कान लाए हैं।
7. तन मन सर्वस्व जो लुटाएंगे यहाँ
वो ही पूरा भ० पहचान पाए हैं।

ये तो सच है कि भ. है
 मन ना माने तो नादान है
 धरती पर रूप साकार का उस नि. की पहचान है

1. उनकी वाणी सुने, उस पर अमल करें
 उनकी आशीष से सफल जीवन करे
 उनको महसूस करे उनको दिल में से
 उनके उपकार से मन को विजय करे
 दिया भ. ने ज्ञान है, उससे बढ़कर दिया प्यार है
 धरती पर रूप साकार
2. सबसे प्रेम करें उनसे ना द्वैष करें
 गुरु का ख्वाब है ये क्यों ना पूरा करे
 मोह माया से मन को मोड़ेगें हम
 मीठा बोलेंगे आज हम निश्चय करे
 इतने उपकार हैं क्या कहे रोम-रोम से
 महिमा बहे धरती पर
3. दादा के ज्ञान से आज होके पावन
 बनाया है हमने अपना ये जीवन
 नया जन्म मिला नयी राहें मिली
 जो सोची ना थी वो खुशियाँ मिली
 इतने उपकार हैं क्या कहे रोम-रोम से महिमा बहे

रिमझिम बरसे अमृत धारा

मन पीवे सुनं शब्द विचारा

1. सब कुछ घर में बाहर कछु नाही
बाहर डोले सो भ्रम भुलाई
गुरु प्रसादी जिन्ह अंदर जानया
सौ अंदर बाहर सुहेला जीयो
2. आनंद विनोद रहे दिन राती
सदा-2 हरि केला जियो,
जन्म-2 दा बिछिड़या मिलिया
साध कृपा ते सूखा हरिया
सुमति पाई नाम धियाई,
गुरु मुख होवे मेला जीयो
3. जल तरंग ज्यों जल माहि समाया
त्यों ज्योति संग ज्योति मिलाया
कहे नानक भरम कटे इक वारा
बहुरी ना होवे चोला जियो।

रुक सका ना मैं जमाना देखता ही रह गया
 ये जहान मेरा तमाशा देखता ही रह गया

1. जागने वाला उठा और उठ के चल दिया
 सोने वाला मीठा सपना देखता ही रह गया
2. त्याग से बंधन कटा और हो गया आजाद मन
 लोभ धन का कैद खाना देखता ही रह गया
3. जीने वाला जिंदगी को देके जीना पा गया
 मरने वाला जीना मरना देखता ही रह गया
4. हम किनारे का सहारा ले चले तूफान से
 दूर से कोई किनारा देखता ही रह गया
5. जिंदादिली में दिल हो रहा अपना जवान
 फिक्र में कोई बुढ़ापा देखता ही रह गया।
6. बात जो अच्छी लगी, हम तो लेकर चल दिये
 कोई बातों का खुलासा देखता ही रह गया.....
7. हमने प्रेम का बाना बुना और सी लिया
 कोई जग का ताना बाना देखता.....
8. हमने मंजिल को पाके आगे बनाई मंजिले
 कोई अपना घर पुराना देखता ही रह गया
9. जिंदगी लाई मुझे मैं जिन्दगी को ले चला
 जिंदगी को देने वाला देखता ही रह गयाए

ਰहਮतਾ ਕਰਦਾ ਏ ਝੋਲਿਯਾਂ ਭਰਦਾ ਏ ਪੀਰਾ ਵਾ ਪੀਰ ਮੇਰਾ ਸ਼ਾਹੀ ਫਕੀਰ
ਮੇਰਾ ਸਤਗੁਰ ਪਾਰਾ ਏ.....

1. ਜੋ ਇਸਦੀ ਸ਼ਾਰਨੀ ਆਵੇ ਕਰ ਦੇਂਦਾ ਮਾਲੋਮਾਲ
ਤੂਸੀ ਲੂਟ ਲੋ ਮੌਜ ਬਹਾਰਾ ਹੈ ਐਸਾ ਦੀਨਦਿਤਾਲ
ਕੇ ਸ਼ਾਰਨੀ ਆ ਜਾਓ ਭੂਲਾ ਬਕ਼ਖਾ ਜਾਓ
2. ਮੇਰਾ ਰਖ ਹੈ ਐਸਾ ਸਚਵਾ ਇਸੇ ਸਮਝੇ ਨ ਕੋਈ ਬਨਦਾ
ਮਿਨਟਾ ਦੇ ਵਿਚੇ ਕਟਵਾਂਦਾ ਚੌਰਾਸੀ ਵਾਲਾ ਫਂਦਾ
ਦੇਰ ਨ ਲਾਨਦਾ ਏ ਪਾਪ ਮਿਟਾਨਦਾ ਏ
3. ਮੇਰੇ ਸਤਗੁਰ ਜੀ ਕੇ ਢਾਰੇ ਜੇਡਾ ਆਕੇ ਅੰਗ ਗੁਜਾਰੇ
ਓ ਪ੍ਰੇਮਿਯਾਂ ਮੈਂ ਕਹਂਦੀ ਮੁੱਹ ਮੰਗਿਧਾਂ ਮੁਰਾਦਾ ਪਾਵੇ
ਸਾਰੇ ਧੂ ਕੈਨਦੇ ਨੇ ਭਰੇ ਭਣਡਾਰੇ ਨੇ

रंग वाले देर क्या है मेरा चोला रंग दे
 और सारे रंग धोके प्रेम रंग रंग दे
 राम रंग रंग दे श्याम रंग रंग दे

1. कितने ही रंगों में मैंने आज तक रंगा इसे
 पर वो सारे फीके निकले तू ही गूढ़ा रंग दे
2. मैं जिधर भी देखता हूँ रंग है तेरा दिखता
 मैं भी प्रेम रंग में ढूबा और गूढ़ा रंग दे
3. मैं तो जानूँगा तभी तेरी रंग अन्दाजियाँ
 जितना धोऊँ उतना चमके ऐसा गूढ़ा रंग हे....

राजी है हम उसी में जिसमें तेरी रजा है
हर बात में है वाह-वाह हर बात में मजा है

1. सुख दुख तो क्या प्रभु ने कुछ भी नहीं बनाया
मिलती हमें हमारे कर्मों की ये सजा है....
2. जो कुछ मिला है जग में कुछ भी नहीं मिला है
भगवान के सिवा तो सूनी हर इक फिजा है
3. जो तू है सो ही मैं हूँ जो मैं हूँ सो ही तू है
भौतिक उपाधियों का सब भेद अब तजा है...
4. मंदिर है मन के अंदर- मैं मूर्ति स्वयं हूँ
निर्वाण के शिखर पर लहरा रही ध्वजा है
5. मीनार रोशनी के भगवान के चरण है
रहना चरण शरण में इतनी सी इल्लज्जा है...

राम नाम की नैया लेकर सतगुरु करे पुकार
आओ मेरी नैया में ले जाऊंगा भव पार

1. इस नड़िया में जो कोई चढ़ जायेगा
जन्म-2 के पाप सभी धुल जायेगें
कटे चौरासी के बंधन और पड़े न यम की मार
2. पाप गठरिया सीस धरे कैसे आऊँ मैं
अपने ही अवगुणों से खुद शरमाऊँ मैं
नैया तेरी सांची भगवन, मेरे पाप हजार
3. जीवन अपना सौंप दो मेरे हाथों में
स्वास-2 को पोत दो मेरी यादों में
पाप पुण्य का बन कर आया मैं तेरा ठेकेदार
4. करके दया सतगुरु ने चुनरियाँ रंग डाली
जन्म-2 की मैली चादर धो डाली
दाग भरी थी मेरी चुनरियाँ करदी लालो लाल
5. बड़े भाग्य से सतगुरु जी का प्यार मिला
मुझे प्रेमी को जीन का आधार मिला
लगी झूबने बीच भंवर में आ गया खेवनहार

- रोम-रोम में लिखवा लो ओम हरि-2 ओम हरि
 तन के तंबूरे पर गा लो ओम हरि-2 ओम हरि
1. ज्ञान के बंध जो द्वारा घड़ी में खुल जायेंगे
 जो भी किये हैं पाप वो सारे धुल जायेंगे
 हर धड़कन में लिखवा लो ओम हरि...
 2. नाव जो है मझधार खैया मिल जायेगा
 पतझड़ घेरा बाग फलों से धिर जायेगा
 जीब के रस में मिलवा लो ओम हरि
 3. मन में जलेगा दीप अनोखी एक आस का
 सुर में बजेगा साज तुम्हारी हर स्वांस का
 रंग महल में मड़वां लो ओम हरि..
 4. आँख खुली जब हुआ सवेरा मिटा अंधेरा
 घर अपने का पता लगा हो गया बसेरा
 मन के भवन पर लिखवा लो ओम हरि...
 5. नाव जो है मझधार गुरु ने पार लगाया
 रंग बिरंगे फूलों से झंकार कराया
 नैन ज्योति में लिखवा लो ओम हरि
 6. मन में है भ० हमें बस वो ही चलाये
 भेद मिटाकर वो हमसे निष्काम कराये
 स्वांस-2 में लिखवा लो ओम हरि....

राम-राम कहते अब तो राम हो गया
रहा न कोई दूसरा श्याम हो गया

1. जिसको मैं जानता था बड़ी दूर रहता है
वो मुझ में ही मिला था मैं हँरान हो गया...
2. जब देखता था बाहर की नजरों से उसको मैं
कोसो हजारों से भी बड़ा दूर हो गया...
3. भूला था अपनी भूल में खोया था आप को
जब आप को जाना तो फिर मैं आप हो गया
4. ये जलवा है मेरा मैं जलबदार हो गया
कुछ भी बचा ना बाकि शेष मैं ही रह गया
मैं मुझ में खेलता हूं सारा विश्व मैं हुआ
अब किस को कहूँ कौन कहना खत्म हो गया
राम-2 कहते....

राधे कौन से पुण्य किए तुमने
हरि रोज तेरे घर आते हैं-2

1. राधे जब तू सावन में झूला झूले
हरि झूला आप झुलाते हैं.....
राधे कौन से.....
2. राधे जब तू भोजन-पान करे
हरि भोजन आप कराते हैं, राधे.....
3. राधे जब तू सोलह शृंगार करे
हरि दर्पण आप दिखाते हैं. राधे.....
4. राधे जब तू रास में नृत्य करे
हरि बांसुरी आप बजाते हैं, राधे.....
5. राधे जब तू पनिया भरन को चले
हरि गगरी आप उठाते हैं, राधे.....
6. राधे जब तू अकड़-अकड़ के चले
हरि नखरे आप उठाते हैं
हरि आप तुझे मनाते हैं।
राधे कौन से.....

राधिका गौरी से बृज की छोरी से
मैया करादे मेरो व्याह

1. उम्र तेरी छोटी है, नजर तेरी खोटी है
कैसे करादूँ तेरो व्याह
2. जो नहीं व्याह रचायों, तेरी गड़ियां नहीं चराऊँ
आज के बाद मेरी मैया तेरी दोहरी ना आऊँ
आयेगा रे मजा-2 मैया के दुलार का, राधिका
3. चंदन चौकी पे मैया तुझको बिठाऊँ
अपनी राधा से मैं चरण दबाऊँ
भोजन मैं बनवाऊँगा-2 छप्पन प्रकार के राधिका
4. छोटी ये दुल्हनियाँ जब अंगना में डोलेगी
तेरे सामने मैया जब घूंघट ना खोलेगी
दाऊ से जा कहा-2 बैठेंगे द्वारा पर, राधिका
5. यशोदा मैया जो मेरे लाला रुठे, मैं प्रेम से उसे मनाऊँ
अपने हाथों से मैं उसे माखन मिश्री खिलाऊँ
भानू किशोरी से लल्ला करादूँ मैं तेरो व्याह
6. छोटे से कान्हा को सुन्दर सा दुल्हा बनाऊँ
सिर पर मुकुट मणि में, मैं मोर पंख सजाऊँ
मोतीयन की लड़ीयां के मैं कुन्डल नये पहनाऊँ
राधिका गौरी
7. सुन बाते लला की मैया बैठी मुस्काये
लेके बलैया मैया हिवड़े से अपने लगाये
नजर कहीं लग ना जाए मेरे लल्ला को राधिका गौरी से

लोकी कंहदे ने हाँ, हाल की बनाया
कमली वाले ने कमली बनाया

1. बिना धुएं दे आग नहीं यो दुखदी
कोई पूछे कहानी मेरे दिल दी
मेरे होकया ने श्याम नू बुला लिया
कमली वाले ने.....

2. श्याम इक बारी मेरे घर आई वे
इस कमली दा हाल पूछ जाइवे
ऐने रोग जुदाई वाला ला लिया
कमली वाले

3. राती हंजुआ दे हार पिरोवा
नाले डर वी ते लुक लुक रोवा
तेरे प्यार ने ठाड़ा तड़पा लिया
कमली वाले

लगन सतगुरु से ला बैठे जो होगा वेखा जायेगा

उन्हें अपना बना बैठे, जो होगा वेखा जायेगा

1. कभी दुनिया से डरते थे कि छुप-2 प्यार करते थे
कि अब पर्दा उठा बैठे, जो होगा.....
2. किया कुर्बान अपना दिल प्रभु के कोमल वचनों में
जन्म की बाजी लगा बैठे.....
3. तुम्हारी बेबसी से दिल जो मेरा टूट जाएगा
रहेंगे हम न इस तन में, जो होगा....
4. तेरी लगन लगा करके, अनेकों पापी तरते हैं
कदम आगे बढ़ा बैठे, जो होगा.....
5. माया के जाल में फँसकर, अनेकों जन्म बीते हैं
कि अब बंधन छुड़ा बैठे, जो होगा.....

लूट लो जिसको जी चाहे मैं, शोर मचाऊँ गली-2

हरि नाम के हीरे मोती मैं बिखराऊँ गली-2

1. जिस-2 ने ये हीरे लूटे वो तो मालामाल हुए
इस जग में जो बने पुजारी आखिर वो कंगाल हुए
धन दौलत और मायाकालों तुम्हें जगाऊँ गली-2

2. जब तक आशा है दुनियाँ की तब तक है पहचान नहीं
रोम-2 में जो राम न जाने हे वो इन्सान नई
राम कृष्ण और नानक का इत्तहास सुनाऊँ गली-2

3. जिस-2 ने है लिया सहारा उसका तो उद्धार हुआ
सब में देखा प्रभु को जिसने उसका बेड़ा पार हुआ
सच्ची कहानी गा गाकर सब को सुनाऊँ गली-2

लगे जिन्दड़ी नू आन हुलारे
 जदो दा तेरा लड़ फड़या
 बेसहारया नू मिल गये सहारे, जदो दा तेरा....

1. जदो वी निहारी छवी तेरी तसबीर दी, हाँ तसबीर दी
 सुध बुध भुल गई अपने शरीर वी, हाँ शरीर दी
 ओ मेरा रोम-2 आरती उतारे, जदो दा.....
2. अखियां दे विच तेरा नूर समा गया हाँ नूर समा....
 मुदता दी सुति साड़ी आत्मा जगा गया हाँ जगा गया
 मेरी नस-2 आरती उतारे.....
3. चड़या जदो दा तेरे नाम वाला रंग जी, रग जी हाँ...
 नचदा प्यार विच मेरा अंग-2 जी हा अंग....
 बेसहारया नू मिल गये सहारे....
4. ऐसे छीटें मार दाता अपने प्यार दे हाँ प्यार दे
 भूल जान मैनु सारे सुख संसार दे हाँ संसार दे
 मैनु दुख वी लगन प्यारे जदो....

لیخن والیا تू ہوکے دیوال لیخ دے
میرے ہدیہ ویچ ساتگ魯 دا پ्यار لیخ دے

1. مथے تے لیخ دے ج्योति گु魯ان دی
نےنا ویچ اونا دا دیوار لیخ دے، میرے....
2. جیوا تے لیخ دے نام گुران دا
کانوں میں شब्द انکار لیخ دے، میرے ہدیہ
3. ہथاں تے لیخ دے سےوا گ魯 دی
تنان منان ڈن اودے ڈتو وار لیخ دے، میرے....
4. پئرا تے لیخ دے جانا گوران دے ڈارے
سارا ہی جیوان اودے نال لیخ دے، میرے ہدیہ.....
5. تری میری پربھو جی لگ گردی بآجی
میرے ہیسے ویچ بے شک ہار لیخ دے، میرے ہدیہ.....
6. ڈال دے بیٹ دے سوکت جاگ دے
میرا چوتے نا گوران نال پ्यار لیخ دے، میرے ہدیہ.....
7. انک ن لیخی تू بیٹھوڈا گوران دا
اپنے ہدیہ نال لگی رہے تار لیخ دے میرے ہدیہ...
8. دیل ڈتے لیخ دے تू نام گوران دا
میریاں آنخا ویچ ساتگ魯 دا دیوار لیخ دے، میرے
ہدیہ.....

लौकी मैंनू पूछ दे ने-2

एह गुरु की लगदे ने तेरे

नी लोका नू मैं दसदी फिरा....

एह तां सब कुछ लगदे ने मेरे.....

1. शरीर ते अंगा विच मस्तक प्रधान

मस्तक दी रचना ऐ दी महान है

नी लौका नू मैं दसदी फिरा

एहं ता सिर दे ताज ने मेरे

2. शरीर ते अंगा विच हृदय प्रधान है

हृदय दे विच मेरे गुरु दा स्थान है

लौका नू मैं दसदी फिरा

एहं ते हृदय विच वसदे ने मेरे.....

3. न ए तेरे न, ए मेरे, तेरे मेरे ने पाए बखेडे नी लोका नू मैं

एहं तां धूमदे ने चार चफेरे

4. गुरु मेरे दा नाम रंगीला, मैनू लगदा बड़ा रसीला

नी लौका नू मैं.....

एहं ता बन गया मेरा वसीला....

5. गुरु मेरा मैनू लगदा दे ए हूर

चेहरे दे इसदे बड़ा ही नूर, नी लोका नू मैं.....

ए मिलयां ते चढ़या सरूर.....

6. गुरु मेरा प्यार है ते गुरु मेरी आन

गुरु मेरा मान है ते गुरु मेरी शान

गुरु मेरा ज्ञान है ते गुरु मेरा ध्यान

नी लौका नू मैं दसदी फिरा

ए गुरु मेरा भगवान है.....

वचन गुरु के बोल मेरे मन काम तेरे ये ही आयेंगे
प्रभू के ध्यान में डोल मेरे मन.....

1. काम तेरा बस गुरु शरण में आना
पहले अपनी खुदी को मिटाना
यही संतो के बोल मेरे मन, काम.....
2. मन में मैलो का है अंधियारा
ज्ञान का कैसे हो उजियारा
मन गुरु से खोल मेरे मन..... काम
3. त्याग दे अपने मन की खुशी को
साथी बना ले अपना उसी को
जीवन व्यर्थ ना रोल मेरे मन..... काम
4. सतगुरु प्यारे ऐसे हमारे
लाख चौरासी काटे हमारे
है ये घड़ी अनमोल मेरे मन..... काम.....

वृन्दावन चिदिठयाँ पावांगी लूट के ले गया दिल मेरा
 मैं श्याम नू चिदिठयाँ पावांगी लूट
 लूट के लै गया-2 लूट के लै गया जी
 वृन्दावन

1. पहले कान्हू प्रेम बढ़ाया मथुरा जाके डेरा लाया
 मैं श्याम ते केस चलावांगी, लूट के
2. जद मेरे श्याम दी हुई गवाही
 विच कचहरी आन खलोही
 मैं सखीया संग लै आवांगी, लूट के लै गया
3. जद मेरे श्याम ने मंगीया सबूत
 मै फटे हुए चीर दिखावांगी, लूट
4. जद मेरे श्याम दा हो या राजी नामा
 मै तेरी तू मेरा श्यामा
 मैं चरणी शीश नवांवागी, लूट के ले

शुक्रानों के गीत हम गाये-2

गाते जाये जीवन में

कि वाह-2 की आदत ऐसी डालें-2

कि शिकवे ना हो जीवन में....

1. दुख से तेरा क्या है नाता,
सतगुरु हर दम हमें है समझाता
के दुनिया सपनों का है इक मेला, बड़ी मुश्किल से है
कोई जानता
कि सपनों से जाग हम जाये-2 तब है हमने जाना....
2. हालत आये चाहे जैसी, रुक ना पाये मन की मस्ती
रातें कितनी भी हो चाहे लंबी फिर भी आखिर सुबह तो होगी
कि मन से भाग अंधेरा जाये-2 रोशनी आये जीवन में.
3. जीवन नैया बड़ी कमजोर है पर साहिब मेरा बड़ा जोर है
रुकना कैसा डरना कैसा जब सतगुरु मेरा सिर मोर है
कि हर पल वो साथ मेरे आये-2
मंजिल पाये जीवन में, कि वाह-2 की आदत ऐसी डाले
शुक्रानों के गीत.....

श्याम दिता मैंनू मस्त बना, मस्तियाँ मैं बंडवी फिरा

1. मिट गये गम सारे चढ़ी मैंनू मस्ती ए
सिर दित्या वी मिले ता वी जाणा सस्ती ए
ऐने दिता मैंनू मस्त बना, मस्तियाँ...
2. प्रभु प्रेम वाला इक नशा ही अनोखा ए
इस जिन्दगी दे विच पल-2 धोखा ए
ए आनन्द मै किस तरह दसा, मस्तियाँ
3. मन में गोपाल अंदर मुरली बजावंदा
प्रेम दिया ताना छेड़े रुह नू नचावंदा
ऐने दिता मैंनू मस्त बना, मस्तियाँ.....
4. दुनिया दा वाली संझों अंधरों मैं पा लिया
नैना विच समा लिया, हृदय विच वसा लिया
रोम-रोम विच गया है समा मस्तियाँ....
5. प्रेम वाला सागर अंदर ठा-2 पया मारदा
रोम-2 मेरा हुण, तेनू ही पुकारदाँ
मैंनू सुध-बुध दिती ए भूला, मस्तियाँ
6. हरि-2 कह दिया हरि दी मैं हो गई
सागर की बूँद इक सागर विच खो गई
मैं मेरी दा झगड़ा मूका, मस्तियाँ....

शुक्राने गाये दिल घड़ी-2 आप का

आपने दिया है मुझे प्यार दो जहां का

1. अंखियों में तेरे मेरे प्यार के साथे है

अशको के पोती तेरी याद में बहाये हैं

गुण क्यों न गाऊँ मैं ऐसे मेहरबान का.....

2. दुनिया के प्यार की ना मुझको जरुरत है

दिल में बस गई तेरी प्यारी सूरत है

लब पर लिख दिया नाम मैंने आपका....

3. गुरु तेरा प्यार ही मेरा ईमान है

उसी के सहारे चल रहे मेरे प्राण है

रिशता हमारा जैसे शमा परवाने का.....

4. करता था तंग मन शाम सवेरे

अब मैं नहीं बो वश में है मेरे

कर दिया खात्मा उस ब्रेईमान का..

5. दुनिया की प्रीत को दिल से भूला के

खुश हूँ मैं दिल सतगुरु से लगा के

लिख दिया दिल पर नाम मैंने आपका....

श्याम राधा दे द्वारे उत्थे फुल बेच दां

ओ संयो फुल बेज दो

1. देदा बरसाने विच होका, मेरा फुल बड़ा अनोखा
ओ संयो फिर नहीं आना माँका श्याम फूल बेच दां
संयो राधा दे द्वारे उत्थे फुल बेच दां

2. ओ सुन के श्याम दी आवाज, राधा निकल आई ऐ बाहर
ऐ की कीता कृष्ण मुरार, सानू फुल बेचदां
श्याम राधा दे द्वारे

3. तेरे प्रेम दा सताया, मैं तां माली बन के आयां
तेरे नाम दा दीवाना, मैं तां फुल बेचदां
श्याम

4. सुन के राधा शरमाई, अखां नीर भर आई
ए की कीता कृष्ण मुरार सारा जग बेखदां
श्याम राधा दे

5. तेरे फुल दा रंग है पीला, तू है अजब रंगीला
आजा करिये रास लीला सानू फुल बेच दा
श्याम

सतगुरु मिले मेरे सारे दुख बिसरे
अंतर के पट खुल गयो रे

1. ज्ञान की ज्योति जली घट भीतर
कोटि करम सब जल गयो रे
2. बिन दीपक मेरे भयो उजाला
तामिर जाने कहां नस गयो री
3. त्रिवेणी से धार बहत है
अष्ट कमल दल खिल गयो रे
4. कोटि भानु मेरे भयो उजाला
ओर ही रंग बदल गयो रे
5. अड़सठ तीरथ हैं घट भीतर
आप से आप ही मिल गयो रे
6. गगन मंडल से वर्षा होई
अमृत के कुंड खुल गयो री
7. कहत कबीर सुनो भाई साधो
नूर से नूर जो मिल गयो रे

सतगुरु भगवान को प्यारे प्रीतम प्राण को
वंदना हमारी है, बार-बार वंदना हमारी है

1. सतगुरु मेरा बड़ा निराला, आला मेरे प्यार का
माया नाल बनाया नक्शा तू सारे संसार का
पत्ते-2 डाल-2, तू ही बसे प्यारे लाल
तेरा नाम उचारी है.....
2. वेद पुराणों ने यश गाया, नेती-2 बोल के
संत महात्मा ब्रदधि मुनि सतगुरु को मिलते डोल के
हो-2 के दयाल लाल सारे दुख दिये टाल
शरण तुम्हारी है.....
3. गंगन मंडल का थाल बनाया, सूरज चांद जगाया ज्योति
नाम तेरे की चुन-2 कलियाँ, तारों को मंगवाया मोती
जल मोती लगे बाल-2 प्रेमी है प्रेम नाल
आरती उतारी है.....

सत्संग में आने से ही मेरी दृष्टि बदल गई है
भगवान को सन्मुख पाकर मेरी सृष्टि बदल गई है...

1. था देह को अपना माना मिथ्या को सच्चा जाना
अब निज को है पहचाना हर पुष्टि बदल गई है
2. संसार वासनाओं में, इन व्यर्थ कल्पनाओं में
जग की सब तृष्णाओं में, संतुष्टि बदल गई है।
3. जग की ममता को छोड़ा भगवान से नाता जोड़ा
कर्तापन का भ्रम तोड़ा, करमुष्टि बदल गई है।
4. भगवान का मिला सहारा, विषयों का मिटा विष सारा
बरसाई अमृत धारा और दृष्टि बदल गई है।

सच का सौदा करने वाले, सच को तू ही जानेगा
मन को आत्मा की राह दिखादे, वरना मन नहीं मानेगा

1. क्या जाने वो सच को जिसने गुरु को नहीं पहचाना है
पतंगा बन कर नहीं जला जो, शमा का मोल न पाया है
मन के कहने पर ही चलता, खुद को जान न पाया है
प्रभू को जानेगा वो ही जो अंतर मुख हो जायेगा।
2. शमा जली है तेरे लिए अब, तुझको कुछ नहीं करना है
केवल अपने स्वरूप को जान ले, तू न जन्मा न मरना है
श्रद्धालु और विश्वासी का, बेड़ा जग से तरना है
साकार में प्रभु को जाने तब निराकार जानेगा
3. फिर पछताये क्या होगा जब, चिड़ियों ने चुग खेत लिया
रिश्तेदारी जग की यारी सब को, तूने देख लिया
निश्चय उसको होगा जिसने मन सतगुरु को बेच दिया
मतलब के है संगी साथी गुरु शरण बच जायेगा।

सफल हुआ है उसी का जीवन
 जो तेरे वचनो में आ चुके हैं-2
 उन्हीं को तेरा हुआ है दर्शन, जो

1. ना पाया तुझको अमीर बन के
 ना पाया तुझको फकीर बन के
 उन्हीं की पूजा हुई है पूरण.... जो
2. होशियार बन के तुम्हीं को खोया
 अनजान बन कर दिन रात रोया
 अपने को खोकर तुम्हीं को पाया
3. जहां भी जिसने तुझे पुकारा
 दिया है तूने उसे सहारा
 कटे हैं उनके दुःखों के बंधन जो.....

साथो सहज समाधि भली-2

गुरु कृपा जहां दिल से लागी, दिन-2 अधिक बढ़ी

1 जहाँ-2 डोलूँ जाऊँ सो परिक्रमा जो कुछ करु सो सेवा
जब सोऊँ तब करु दंडवत, पूजूँ और न देवा

2 कहूँ सो नाम, सुनूँ सो श्रवण खाऊँ पीऊँ सो पूजा
गृह उजाड़ एक सम देखु भाव मिटाऊँ दूजा

3. आँख न मूँदू कान न रुँदू तनिक कष्ट नहीं पाऊँ
खुले नैन पहचानु हंस-2, सुंदर रूप निहारूँ

4. शब्द निरन्तर से मन लागा, मलिन वासना त्यागी
उठत बैठत कबहूँ न छूटे, ऐसी ताड़ी लागी

5. कहत कबीर ये अनमनि रहनी, सो परगट कर गाई
दुखः सुख से जो परे परम पद, उस पर रहयो समाई

साँवरे से मिलने का, सत्संग ही बहाना है

सब गम भूल गये, दिल बना दीवाना है

1. कहाँ-कहाँ ढूँढ़ा तुझे, मथुरा में ढूँढ़ा तुझे
कण-2 में रग-रग में, मेरे राम का ठिकाना
2. राधा ने पाया तुझे मीरा ने पाया तुझे
मैंने तुझे पा ही लिया, मेरे दिल में ठिकाना
3. सत्संग में आ जाओ, भक्तों संग बैठ जाओ
भक्तों के हृदय में, मेरे श्याम का ठिकाना
4. सत्संग गंगा किनारा है, बहती निर्मल धारा है
दाता अब तेरे सिवाय, मेरा कोई न सहारा है।
5. जब से मदहोश हुए, तबसे बेहोश हुए
जग वाले क्या जाने हमें मिल गया ठिकाना है।

सबसे सुंदर सबसे प्यारा है तेरा दरबार

बना रहे यूँ हमसे प्रीतम्

सदा-2 तेरा प्यार, तेरा दरबार न छूटे

प्यार की तार न टूटे

1. तुझसे नेहा लगाके पाए सुख हम सारे
पिछले जन्म के कर्मों से जागे भाग्य हमारे
कहाँ मिलेगा ऐसा सच्चा बिना स्वार्थ का प्यार
2. तुम हो दीन दयाल रहमत तेरी क्या कहना
तुमने सिखाया जीना सच की राह पे चलना
बिना तुम्हारे सपने में भी जीना है बेकार
3. तेरे श्री चरणों में बहती प्रेम की धारा
इनमें है सब तीर्थ ये तीर्थ राज हमारा
यहाँ झुकाकर सर को हमने पाया शान्ति भण्डार
4. प्रेमी है हम तेरे सब कुछ तुझपे वारे
तुम हो संग, सदाई तुम भगवान हमारे
ये जीवन है नाम पे तेरे कर दे जीवन उद्धार

ਸਤਗੁਰੂ ਮੈਂ ਤੇਰੀ ਪਤਾਂਗ ਹਵਾ ਵਿਚ ਤੜ੍ਹ ਵੀ ਜਾਵਾਂਗੀ
ਓ ਝਧਾਮਾ ਡੋਰ ਹਾਥੋ ਛੜੀ ਨਾ ਮੈਂ ਕਟੀ ਜਾਵਾਂਗੀ

1. ਬਡੀ ਮੁਖਿਕਲ ਦੇ ਨਾਲ ਮਿਲਿਆ
ਮੈਨੂ ਤੇਰਾ ਦ੍ਰਵਾਰਾ ਐ-2
ਮੈਨੂ ਇਕੋ ਤੇਰਾ ਆਸਰਾ ਨਾਲ ਤੇਰਾ ਸਹਾਰਾ ਐ
ਹੁਨ ਤੇਰੇ ਹੀ ਭਰੋਸੇ ਹਵਾ ਵਿਚ ਤੜ੍ਹ ਵੀ ਜਾਵਾਂਗੀ
ਓ ਝਧਾਮਾ.....
2. ਹੁਨ ਚਰਣਾ ਕਮਲ ਨਾਲੋ ਮੈਨੂ ਦੂਰ ਹਟਾਈ ਨਾ
ਇਸ ਝੂਠੇ ਜਗ ਦੇ ਅੰਦਰ ਮੇਰਾ ਪੇਂਚਾ ਲਾਈ ਨਾ
ਜੇ ਕਟ ਗਈ ਤਾਂ ਸਤਗੁਰੂ ਫਿਰ ਮੈਂ ਲੁਟੀ ਜਾਵਾਂਗੀ
ਓ ਝਧਾਮਾ.....
3. ਹੁਣ ਮਲਿਆ ਕੁਆ ਆਕੇ ਮੈਂ ਤੇਰੇ ਦ੍ਰਵਾਰੇ ਦਾ
ਹਾਥ ਰਖ ਦੇ ਤੂ ਇਕ ਵਾਰੀ ਮੇਰੇ ਸਿਰ ਤੇ ਪਾਰ ਦਾ
ਫਿਰ ਜਨਮ ਮਰਣ ਦੇ ਫੇਰੇ ਤੋ ਮੈਂ ਬਚਦੀ ਜਾਵਾਂਗੀ
ਓ ਝਧਾਮਾ.....

सतगुरु पाया ते हो गईयां निहाल नी सइयों
 शीष निवाया ते सतगुरु मेरे नाल नी सइयों
 ओ तां रखदा है पल-2 दा ख्याल नी सइयों
 दर्शन पाया ते हो गईयां निहाल नी सईयों
 सतगुरु प्यारे दे नाल मेरा प्यार नी सइयों

1. नी मैं भजदी सा जंगला पहाड़ा
 नी मैं लबदी सा मंदिरा मसीदा
 ओ अंदर बैठे दा आया ना ख्याल नी सइयो
2. जदो पूछया ते कुछ बी ना बोल्या
 जदो बोलया ते भेद सारा खोलया
 ओ गला करदा ऐ हंस-2 मेरे नाल नी सइयो
3. ओखे वेले मैं जदो बी पुकारयां
 बांह पकड़ के पार उतारइया
 ओ ता रहदां ए अंग संग मेरे नाल नी सइयो

सतगुरु तुम तो हो मेरे कुम्हार
दाता प्यारे तुम तो हो मेरे कुम्हार

1. ये माटी भी क्या माटी थी रूलती थी जग माही
पांव तले आती थी सबके तूने लिया उठाये
हाथ बढ़ाकर कीनी गढ़ाई-2 और किया तैयार.....
2. भाव का जल डाला जब इसमें, माटी भई निहाल
चाक चढ़ाकर खूब उबारा कितनी की है संभाल
सम्भाल करके अंतर से तू-2 छोट करे तत्काल....
3. ज्ञान की अग्नि इस माटी को दिन-2 और पकाये
प्रेम से अपने अनुभव से भी और दिया है बढ़ाये
तपकर बनकर लागी है बोलन-2 तू मेरा करतार.....
4. ये माटी तो अब बन गई है फूलों का गुलदान
मेहकायेगी सबका जीवन देकर प्रेम का दान
धन्य है माटी धन्य है माली-2 धन्य है वो अवतार.....

सुनो मेरे प्यारे, सुनो मेरे प्रेमी
कबीरा बिगड़ गयो रे-2

1. दूध भी बिगड़यो दहिया के संग में

बिगड़-2 वो तो माखन भयो रे.....

2. लोहा भी बिगड़यो पारस के संग में

बिगड़-2 वो तो कंचन भयो रे.....

3. मैं भी बिगड़यो सन्तन के संग मे

बिगड़-2 मैं तो संतन भयो रे

जब मेरी प्रीत गुरु संग लागी

नाम खुमारी तब से चढ़ी है

कहत कबीर सुनो भई साधो, कबीरा.....

स्वासां दी माला नाल सिमरा मैं तेरा नाम-2

बन जावां बन्धा मैं तेरा हे कृपा निदान-2

1. संगता दी सेवा करदा रहा मैं-2

चरणा ते मस्तक धरदा रहा मैं-2.

मेरी खल दे जोड़े गुरु दे सिख हंडाण....

2. ठाड़ी हां मैं सतगुरु दे घर दा

चंगा या मंदा हा बन्दा मैं उसदा

मेरा है तन मन ओना तो कुरबान.....

3. ऐसी ही कृपा करो प्रभु मेरे

छड़िये झंझाला नू बन जाईये तेरे

जिस पल तू बिसरे निकल जाये मेरी जान....

4. गुरु मैनूं पिला दे अमृत दा प्याला

रंग दे मेरे दिल नू मैं हो जा मतवाला

मैनू ए सतगुरु जी तेरे दर्शन दी तांग.....

5. कोटा ब्रह्मांड दा मालिक तू स्वामी

सबना नू देदां तू अर्तयामी

तू देदां नहीं थकदा यूगो युग देदां ऐ दान....

6. सदा पकड़ो मेरी बाँह किथे रूल ना जावां

सुखा विच रह के तेनू भूल न जावां

चरणा नाल जोड़ों गुरु जी मैनू अपना जान....

सन्ता दे वसीले असां राम नाम पाया
 राम नाम पाया असां राम नाम पाया ए

1. सन्ता ने दसिया भेद निराला
 तेरे अंदर वसदा ए प्यारा
 अंदरो ही राम जगाया सन्ता
 जद मस्तक हथ लाया ए
2. प्यारे नू सब लभ-लभ थके
 ढूँढदे ने कोई गंगा ते मवक्के
 सोई किस्मत जागी
 अपने घर विच दर्शन पाया ए
3. धन्य धरती जहां सतगुरु आए
 थाह पवित्र चरण जहां पाए
 धन-2 भाग उन्हा दे
 जिन्हा गुरु चरणी चिन्त लाया ए

सतगुरु हो महाराज मोपे साई रंग डारा

1. शब्द की चोट लगी मोरे मन में
भेद गया तन सारा, मोपे साई रंग डारा।
2. ओषद मूल कछू नही लागे
क्या करे वैद विचारा मोपे साई रंग डारा
3. सूर नर मुनिजन पीर ओहलिया
कोई न पावे पारा, मोपे साई रंग डारा
4. साहिब कबीर कौन रंग रलिया
रंग पे रंग न्यारा, मोपे साई रंग डारा।

साडे वेडे विच पैन लश्कारे
 के साडे घर राम आ गये, कदी वेडे टप्पा-2
 टप्पा में चौबारे कि साडे घर....

1. सुन के आवाज मेरी आत्मा वी डोली ऐ
 मेरे घर उतरी अज संता दी टोली ऐ
 मै ते बेख रहीयां अजब नजारे, के साडे घर
2. आज साडे वेडे विच सतगुरु आये
 रहमतां ते खुशियां दा मीह बरसा ए
 आज हो रही लीला अपरम्पार, कि साडे घर....
3. आत्मा मेरी ने बर कर पाया ए
 मुदंता दा बिछड़ा होया श्याम घर आया ए
 मेरे जाग पये भाग सितारे, कि साडे घर....
4. गुरु महाराज मेरा कृष्ण मुरार ए
 नीवा-2 चोला उसदा जलवां कमाल ऐ
 सारी संगत बोले जय-2 कारे कि साडे घर....

ਸਈਧੋ ਨੀ ਸੋਹਨੀ ਸੂਰਤ ਵਾਲਾ
ਸਾਰੇ ਜਗ ਤੋ ਨਿਰਾਲਾ ਮੇਰਾ ਪੀ

1. ਚਨ ਜਥੁ ਮੁਖਡੇ ਤੋ ਵਾਰੀ ਮੈਂ ਜਾਵਾਂ

ਵਾਰਾ ਮੈਂ ਲਾਲ ਹੀ ਲਾਲ

ਸੌਦਾ ਰੁਹਾਂ ਦਾ ਇਕ ਦਾਰੂ ਮੇਰਾ ਸਤਗੁਰ

ਰਜ ਕੇ ਕਰ ਲੋ ਪਾਰ

ਸਈਧੋ ਨੀ ਮੇਰੇ ਮਨ ਦੇ ਅੰਦਰ

ਵਸ ਗਈ ਸੋਹਨੀ ਤਸਵੀਰ.....

2. ਅੰਘਰ ਇਸਦੀ ਆਰਤੀ ਕਰਦਾ,

ਲੇਕੇ ਸੂਰਜ ਤੋ ਤਾਪ

ਲੁਕ ਚੰਦਾ ਬਦਲਾ ਤੋ ਝਾਂਤਿਧਾਁ ਮਾਰੇ

ਪਾਂਦਾ ਏ ਪ੍ਰਭੂ ਨੂੰ ਝਾਤ

ਸਈਧੋ ਨੀ ਐਨਾ ਦਾ ਲਡ ਪਕਢ ਲਿਯੋ

ਕਰਦੇ ਨੇ ਭਵ ਤੋ ਪਾਰ.....

3. ਰਤਮਿਲ ਸਾਰੇ ਗੁਰੂ ਸ਼ਾਰਣੀ ਆਓ

ਅਪਨੇ ਮਨ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਜਗਾਓ

ਸਈਧੋ ਨੀ ਮੇਰਾ ਸਤਗੁਰ ਪਾਰਾ

ਲਾਂਦਾ ਏ ਹੁਦਾਇ ਦੇ ਨਾਲ

ਸਈਧੋ ਨੀ ਗੁਰੂ ਬਨਕੇ ਆਯਾ ਹੈ ਸਾਕਾਰ.....

सब दे अंदर राम दिल न दुखाई किसी दां

1. दिल न दुखाइए ते आनंद पाइए
भली करे करतार। दिल न दुखाई किसी दा
2. मैं मेरे दे वल ना जाइये
अंदर झाती मार। दिल न दुखाई.....
3. मीठा-2 बोलिये ते नींवा-2 चलिये
चित्त वचना दे नाल। दिल न
4. भला कहे कोई बुरा कहे जी
तू रहना खुशहाल। दिल न दुखाई....
5. सिमर-2 तू नाम हरि दां
हो जा मालामाल दिल न दुखाई.....
6. कहत कबीर सुनो रे लोई
जहां रहना दिन-चार। दिल न

ਸਾਨੁ ਤਾਰ ਦੇਵੇਗੀ ਤੇਰੀ ਮੇਹਰ ਦੀ ਨਜ਼ਰ
ਕਰ ਪਾਰ ਦੇਵੇਗੀ ਤੇਰੀ ਮੇਹਰ ਦੀ ਨਜ਼ਰ

1. ਮੈਂ ਤਾਂ ਲਡ੍ਹ ਤੇਰਾ ਹੁਨ ਫਡ਼ਧਾ
ਤੇਰੇ ਪ੍ਰੇਮ ਅੰਦਰ ਦਿਲ ਅੜਧਾ
ਮੇਲ ਕਰ ਤਾਰ ਦੇਵੇਗੀ ਤੇਰੀ ਮੇਹਰ ਦੀ ਨਜ਼ਰ
ਸਾਨੁ.....

2. ਇਕ ਦਿਲ ਹੋਧਾ ਮੇਰਾ ਵਿਵਾਨਾ
ਜਿਵੇ ਸ਼ਾਮਾ ਤੇ ਪਰਵਾਨਾ
ਮੇਰਾ ਮਨ ਹੋਧਾ ਮਸ਼ਤਾਨਾ
ਖੋਲ ਢਾਰ ਦੇਵੇਗੀ ਤੇਰੀ ਮੇਹਰ ਦੀ ਨਜ਼ਰ
ਸਾਨੁ

3. ਦਾਤਾ ਪ੍ਰੇਮ ਦੀ ਪਿੰਗ ਚਢਾਯੇ
ਸਾਨੁ ਲਾਲੋ ਲਾਲ ਬਨਾ ਦੇ
ਜੀਵ ਬਹੁ ਵਾ ਮੇਲ ਕਰਾ ਦੇ
ਕਰ ਤੱਢਾਰ ਦੇਵੇਗੀ ਤੇਰੀ ਮੇਹਰ ਦੀ ਨਜ਼ਰ
ਸਾਨੁ

4. ਤੇਰੀ ਨਜ਼ਰ ਵਿਚ ਜਾਦੂ ਭਰਧਾ
ਦਰਸ਼ਨ ਕਰਕੇ ਸੀਨਾ ਠਰਧਾ
ਜਿਸਨੇ ਕਿਤ ਓਡਿਧੋ ਤਰਧਾ
ਜੋਡੇ ਏ ਤਾਰ ਦੇਵੇਗੀ ਤੇਰੀ ਮੇਹਰ ਦੀ ਨਜ਼ਰ
ਸਾਨੁ

5. ਮੇਹਰਾ ਵਾਲਧਾ ਮੇਹਰਾ ਕਰ ਦੇ
ਏਸਾ ਇਸ ਰਸਨਾ ਵਿਚ ਭਰ ਦੇ
ਮੇਰੇ ਸਿਰ ਤੇ ਹਾਥ ਧਰ ਦੇ
ਖੁਦੀ ਨੁ ਮਾਰ ਦੇਵੇਗੀ ਤੇਰੀ ਮੇਹਰ ਦੀ ਨਜ਼ਰ
ਸਾਨੁ

साधो सोहम् सोहम् बोलो
 सतगुरु आज्ञा सिर धर के, भीतर पर्दा खोलो, साधो

1. सेवा से मन निर्मल करके
 सतगुरु शब्द को तोलो, साधो सोहम्
2. वेदों के महाकाव्य विचारों
 निज आनन्द में डोलो, साधो सोहम्
3. मन की मैल ज्ञान से जाये
 पावे लाल अमोलो, साधो
4. लख चौरासी में ना जाये
 आत्म भाव में डोलो, साधो
5. मेरी तेरी छूट गई है
 छुट गई काया चोलो, साधो
6. मन बुद्धि से परे जा के
 प्रेम से अमृत घोलो, साधो
7. तुम्हें क्या मतलब दुनिया से है
 आत्म हीरा मोलो, साधो
8. हरी भक्ति सदा निज रूप में
 तुम भी प्रेम में डोलो, साधो

ਸਤਸਾਂਗ ਵਾਲੀ ਨਗਰੀ ਚਲ ਰੇ ਮਨਾ
 ਪੀ ਪ੍ਰਭੂ ਨਾਮ ਕਾ ਜਲ ਰੇ ਮਨਾ

1. ਇਸ ਨਗਰੀ ਮੈਂ ਪ੍ਰੇਮ ਕੀ ਗੰਗਾ
 ਜੋ ਭੀ ਨਹਾਯੇ ਹੋ ਜਾਯੇ ਚੰਗਾ
 ਮਲ-ਮਲ ਕੇ ਹੋ ਨਿਰਮਲ ਰੇ ਮਨਾ, ਸਤਸਾਂਗ ਵਾਲੀ
2. ਸਤਸਾਂਗ ਕੇ ਹੈਂ ਅਜਥ ਨਜਾਰੇ, ਬਹੁਤ ਸੁਹਾਨੇ ਬਹੁਤ ਹੀ ਪਾਰੇ
 ਪਾ ਸੁਖ ਸ਼ਾਨਤਿ ਕਾ ਫਲ ਰੇ ਮਨਾ ਸਤਸਾਂਗ
3. ਸਤਸਾਂਗ ਕਾ ਧੇ ਅਸਰ ਹੁਆ ਹੈ
 ਬਾਹਰ ਸੇ ਸਥ ਬਦਲ ਗਿਆ ਹੈ
 ਅੰਦਰ ਸੇ ਤੂ ਬਦਲ ਰੇ ਮਨਾ, ਸਤਸਾਂਗ ਵਾਲੀ
4. ਸਤਸਾਂਗ ਕਾ ਤੋ ਫਲ ਹੈ ਨਿਰਾਲਾ
 ਮਨ ਮੰਦਿਰ ਮੈਂ ਕਰਕੇ ਉਜਾਲਾ
 ਕਰ ਜੀਵਨ ਕੋ ਸਫਲ ਰੇ ਮਨਾ, ਸਤਸਾਂਗ
5. ਕਿਸ਼ਮਤ ਕਾ ਚਮਕਾ ਹੈ ਸਿਤਾਰਾ
 ਤਦਦ ਹੁਆ ਹੈ ਭਾਗਿ ਹਮਾਰਾ
 ਅਵਸਰ ਜਾਧੇ ਨਾ ਨਿਕਲ ਰੇ ਮਨਾ, ਸਤਸਾਂਗ
6. ਚਲ ਰੇ ਪਥਿਕ ਸ਼ੁਭ ਕਰਮ ਕਮਾਲੇ
 ਇਸ ਅਵਸਰ ਸੇ ਲਾਭ ਉਠਾਲੇ
 ਦੇਰ ਨਾ ਕਰ ਇਕ ਪਲ ਰੇ ਮਨਾ, ਸਤਸਾਂਗ

सत्संग वाली नगरी चल रे मना
पी प्रभू नाम का जल रे मना

1. इस नगरी में प्रेम की गंगा
जो भी नहाये हो जाये चंगा
मल-मल के हो निर्मल रे मना, सत्संग वाली
2. सत्संग के हैं अजब नजारे, बहुत सुहाने बहुत ही प्यारे
पा सुख शान्ति का फल रे मना सत्संग
3. सत्संग का ये असर हुआ है
बाहर से सब बदल गया है
अदरं से तू बदल रे मना, सत्संग वाली
4. सत्संग का तो फल है निराला
मन मंदिर में करके उजाला
कर जीवन को सफल रे मना, सत्संग
5. किस्मत का चमका है सितारा
उदय हुआ है भाग्य हमारा
अवसर जाये ना निकल रे मना, सत्संग
6. चल रे पथिक शुभ कर्म कमाले
इस अवसर से लाभ उठाले
देर ना कर इक पल रे मना, सत्संग

सारे जहाँ के मालिक, तेरा ही आसरा है
राजी हैं हम उसी में, जिसमें तेरी रजा है

1. हम क्या बताए तुमको, सब कुछ तुम्हें खबर है
हर हाल में हमारी, तेरी तरफ नजर है
किस्मत है वो हमारी, जो तेरा फैसला है
राजी है हम
2. रोकर करे कटे या हँस कर, कटती है जिन्दगानी
तू गम दे या खुशी दे, सब तेरी मेहरबानी
तेरी खुशी समझकर, सब गम भुला दिया है
राजी है हम
3. दुनियाँ बनाने वाले, जाना कहाँ छिपा है
आता नजर तू है, बस एक ही निगाह है
भेजा है इस जहाँ में, जो तेरा शुक्रिया है
राजी हैं हम उसी में।

सुख आते हैं दुख आते हैं

इन आते जाते सुख दुख में हम मस्त रहते हैं

1. गाते-गाते फकीरा कह जाता

कोई पैदा हुआ कोई मर जाता

इस जन्म मरण के खेल में हम मस्त रहते हैं

सुख आते हैं

2. कभी मान मिला जी भर भर के

अपमान मिला जी भर-भर के

इस मान अपमान के खेल में हम मस्त रहते हैं

सुख आते हैं

3. यूँ जीना भी कोई जीना है

विष छोड़ दिया अमृत पीना है

हम अमृत पीते रहते हैं और मस्त रहते हैं

सुख आते हैं

4. गुरु ज्ञान पिटारा खोला है

यह जग सारा इक मेला है

क्षण-क्षण बदलते सुख-दुख में हम मस्त रहते हैं

सुख आते हैं

सदके मैं जावां ओन्हा तो साहिबा
जिन्हां नू तेरियाँ लोड़ा ओ साहिबा

1. होके निमाने रहदें, मीरा वांग सब कुछ सहदें
चंगा मंदा कुछ ना बोलदे ओ साहिबा जिन्हां नू
2. कडयां दे विच मुस्कादें
प्रेम वाली पींग चढांदे
प्रेम दे हुलारे खांदे ओ सहिबा, जिन्हा नू
3. बड़े ना बोल बोलन
बोलन तो पहले तोलन
निश्चय तो कदे वी ना डोलदे ओ साहिबा
4. तेरे दरबार आंदे, श्रद्धा दे फूल चढादे
खुद खुदी नू मिटादें ओ साहिबा
जिन्हो नू तेरियाँ लोड़ा
5. हो मैं दी राख बनादे
विषया नू मार भगांदे
केवल भक्ति चाहदे ओ साहिबा

साधों चुप का है विस्तारा

चुप है ये आलम सारा, साधो चुप का है

1. धरती चुप है पवन चुप है, चुप है चाँद सितारा

अग्नि चुप है, गगन चुप है, चुप है सुजन हारा

साधो चुप का है विस्तारा

2. मंदिर चुप है मस्जिद चुप है, चुप है मंदिर मीनारा

वेद पुराण ग्रन्थ सब चुप है, चुप है जहान/सारा

साधो चुप है

3. पहले चुप थी पीछे चुप है, जाने जानन हारा

ब्रह्मा चुप है विष्णु चुप है चुप है शंकर प्यारा

साधो चुप का है

4. पर्वत चुप है नदिया चुप है, चुप है गुरु का द्वारा

ब्रह्मानंद जो चुप में चुप है, मिल जाये सुख सारा

साधो चुप का है

सत ज्ञान की निर्मल गंगा में आकर रोज नहाया कर
तेरे पाप सभी कट जायेंगे, कुछ गोते रोज लगाया कर

1. इस पवित्र पावनी गंगा में

जिसने भी डुबकी मारी है

उसने अपने अर्तमन की फिर सारी मैल उतारी है

सत ज्ञान की इस गंगा जल में, जन्मों की प्यास बुझाया कर

2. इस ज्ञान की बहती गंगा में आकर जो नित्य नहाता है

सब पाप-पंथ घुल जाते हैं वो भी निर्मल हो जाता है

इस ज्ञान की निर्मल धारा में नित जीवन पर चमकाया कर

तेरे पाप

3. गंगा निकली गंगोत्री से सीमित धरती पर बिखरी है

जो दसों दिशाएँ पावन करती भ. के मुख से निकली है

भ. शरण में आकर के नित अपना ज्ञान बढ़ाया कर

तेरे पाप

4. यहाँ ज्ञान की पावन गंगा का जिसने भी अमृत पान किया

उसने निज को है जान लिया परमपद को पा ही लिया

अज्ञान अंधेरे मिट जायेंगे अब ज्ञान के दीप जलाया कर

तेरे पाप

सुख सागर में आय के मत जाओ रे प्यासा प्यारे
निज सुख निर्मल सोई पाये जो मन को मोड़े-मोड़े

1. उठ जाग प्यारे कर आत्म मेला
पी-पी प्यारे अमृत प्याला
2. गफलत छोड़ कर संतन मेला
आया है जग में तू ही अकेला
3. रोज बहत है अमृत धारा
तो भी प्यासा सकल संसारा

है कृपा तेरी मेरे सतगुरु तूने जीवन मेरा बना दिया
मैं भटक रहा था जहान में, तूने ज्ञान अमृत पिला दिया

1. तेरी वाणी में है वो असर
जिसे सुन के खिलता है हर बशर
हर बशर के दिल में ज्ञान का
दीपक है तूने जला दिया, है कृपा तेरी.....
2. मैंने ढूँढा तुझ को जहान में
पर पता तेरा मुझे ना मिला
जब पता तेरा मुझे मिल गया
तो अपना पता ही भुला दिया.....
3. तेरे दर्श की लगी मुझे प्यास है
तेरे दर पे आऊँ, ये आस है
इसी आस ने, मेरे हृदय में
उमंगों का दीपक जला दिया.....

हम तो तेरे दीवाने हैं, हम ज्ञान ध्यान को क्या जानें
 हम तो तेरे मस्ताने हैं हम जेर जबर को क्या जाने

1. ये रंग जो तेरी माया का भूले जीवों को सताता है
 हम रंग हुए तेरे रंग में है माया के रंग को क्या जाने
2. वेदों का हमको ज्ञान नहीं क्यों आता हमारे ध्यान नहीं
 जब समदर्शी है नाम तेरा अपने से जूदा फिर क्या माने
3. हम आनंद रस के भोगी हैं नहीं जन्म मरण के रोगी हैं
 हम निर्मल निश्चल योगी हैं कलयुग सतयुग को क्या जाने
4. हम खुद मस्ती में रहते हैं नहीं ऊंच नीच को सहते हैं
 जो बन आए सो सहते हैं ये दुनिया हम को क्या जाने...
5. जो देह दृष्टि में रहते हैं, वो तीन गुणों को कहते हैं
 माया के रूप में बहते हैं, वो निज आनंद को क्या जाने
6. हमने निज स्वरूप को जाना है माया का पता क्या पाना है
 वहां अहं ब्रह्म का बाना है वो काम क्रोध को क्या जाने....

हर वक्त हँसी, हर वक्त खुशी
 हर वक्त अमीरी है बाबा
 जब आशिक मस्त फकीर बना
 फिर क्या दिलगिरी है बाबा-2

1. दिन को सूरज की महफिल है
 रात तारों की बारात बाबा-2
 हर रोज मेरे लिए होली है
 हर रात मेरी दीवाली है.....
2. हर रोज मेरे लिए शादी है
 हर रोज मुबारक वादी है
 हर रोज नई गुलजारी है
 ये ज्ञान की इक फुलवारी है.....
3. हम आशिक उसी सनम के हैं
 जो दिलबर सबसे आला है
 दिल उसका ही दीवाना है
 मन उसका ही मस्ताना है
4. धरती मेरा ये बिस्तर है
 आसमान मेरे लिए चादर है
 हर रोज मेरे लिए आजादी है
 हर रोज सुनहरी रात बाबा.....

हो जाये बंद आँखे तेरा ध्यान करते-2

इक साथ ये ही देगा गुरु ज्ञान चलते-2

1. यश आपका मैं गाऊँ दुनिया से चला जाऊँ

हो जाये बंद वाणी गुणगान करते-2

2. सुध तन की भूल जाऊँ, कभी होश में न आऊँ

प्रभु प्रेम वाले अमृत का पान करते-2

3. देखा करु मैं राहे जब तक न आप आये

तुब तक न तन से निकले ये प्राण चलते-2

4. तेरे ध्यान में रहूँ मैं हर श्वास ही जपु मैं

यश प्रेम सतगुरु का बस बयान करते-2

5. तेरे धाम पहुंच जाऊँ या किसी के काम आऊँ

शुभ कर्म पाठ पूजा बस बयान करते-2

हमने देखा है प्यार आँखों में

इक उठता नशा सा आँखों में

1. कैसी खुशबू सी छोड़ दी तुमने

छा रहा है खुमार आँखों में....

2. दूर रह करके पास रहते हो,

आता ऐसा विचार आँखों में....

3. लगते तुम मुझको आइने जैसे

जिन्दगी लू सवार आँखों में....

4. देख कर तुमको फूल हँसते हैं

मिलती उनको बहार आँखों में....

5. घर जो आए है प्रेम के बादल

अश्क है बेशुमार आँखों में

6. दिल भी बेचैन हो रहा अब तो

बाकी थोड़ा करार आँखों में....

हम अपनी झाँकी देख चुके
 फिर दूसरी झाँकी क्या देखें
 जब अमर निशानी आ चमकी
 फिर फानी दुनिया क्या देखें?

1. सड़को पे रूले चाहे महलों में पले
 पर चाहे यहां कुछ मिले न मिले
 दीदार जो शहनशाह का हुआ
 तस्वीर गुलामों की क्या देखें.....
2. जब समझ गये फिर उलझे क्यों
 जो खोया था सो पा ही लिया
 जब दिल की गली में रौनक है
 बाजार में जाकर क्या देखें?
3. हसरत भरे लोगों की खुशी
 पल-2 में रंग बदलती है
 हम आत्म रस में डुबे हुए
 फिर रूप बनावट क्या देखें..
4. इन्सान सभी की आँखों में
 अपनी ही सूरत दिखती है
 मतलब तो हम सब एक ही हैं
 फिर भेद की दृष्टि क्या देखें

हरि ओम शिवोहम ब्रह्मस्मि तत्त्वमसि-3

1. कौन है वैरी वैर करे

द्वैत है वैरी वैर करे, चाह है वैरी वैर करे
कौन है मित्र भला करे, ज्ञान है मित्र भला करे
गुरु है मित्र भला करे

दूजों के जो दोष देखे मूर्ख हैं वही-2

सतगुरु को जो साथी बनाए सच्चा है वही-2

2. मकड़ी ने है जाल बिछाया चैन की खातिर ही
नादा है मूर्ख है मौत का कारण ही
अपने बाहर सुख जो ढूढ़े मूर्ख है वही-2

3. तू साखी है तू दृष्टा है उसमें टूट के रहना
इसमें जो बाधा पहुंचाएँ भ्रम वो दूर तू करना
ब्रह्म बनने का भ्रम है जिसको मूर्ख है वही-2
शुद्ध स्वरूप प्राप्त जो जाने सच्चा है वही-2

4. कल के कर्म के फेरे आज पुरुषार्थ है कहता
आज है दुख के जन्म चक्र में कल का बीज वो बोता
छोटी सी पहेली जो न बूझे मूर्ख है वही-2
सत और बद में जो निर्लेप सच्चा है वही-2

हे गुरु हे दयाल मेरे साहिब आप है

आप माने या न माने मेरे खातिब आप है

1. स्वांस लेती हूँ तो यू महसूस होता हैं मुझे
जैसे मेरे दिल की हर धड़कन में शामिल आप है
2. गम नहीं जो लाख तूफानों से टकराना पड़े
मैं वो कश्ती हूँ जिस कश्ती के साहिल आप है
3. जन्म नहीं मरन नहीं मैं तो आनंद रूप हूँ
सच का ये रूप तूने दिखाया तू तो बेमिसाल है।

ਹੁਕਮੇਂ ਅੰਦਰ ਸਾਬ ਕੋਈ ਬਾਹਰ ਹੁਕਮ ਨਾ ਕੋਈ
ਨਾਨਕ ਹੁਕਮ ਜੋ ਬੁੜੇ ਹੋ ਮੈਂ ਕਰੇ ਨਾ ਸੋਏ

1. ਹੁਕਮ ਸੇ ਰੋਤਾ ਹੈ ਕੋਈ, ਹੁਕਮ ਸੇ ਗਾਧੇ ਗੀਤ
ਹੁਕਮ ਸੇ ਰੁਠਾ ਹੈ ਕੋਈ ਹੁਕਮ ਸੇ ਹੋਵੇ ਪ੍ਰੀਤ
2. ਹੁਕਮ ਸੇ ਸੋਧਾ ਹੈ ਕੋਈ, ਹੁਕਮ ਸੇ ਜਾਗਾ ਕੋਧ
ਹੁਕਮ ਸੇ ਬਿਛੜਾ ਹੈ ਕੋਈ, ਹੁਕਮ ਸੇ ਹੋਵੇ ਮੀਤ
3. ਹੁਕਮ ਸੇ ਮੁਰਝਾਵਾ ਕੋਧ ਕੋਈ, ਹੁਕਮ ਸੇ ਖਿਲਤਾ ਕੋਧ
ਹੁਕਮ ਪਹਚਾਨਾ ਹੈ ਤਭੀ, ਦੁਖ ਸੁਖ ਪਾਸ ਨਾ ਹੋਧ
4. ਹੁਕਮ ਸੇ ਸਤਗੁਰ ਭੈਰਧਾ, ਹੁਕਮ ਸੇ ਸਤਗੁਰ ਜਾਨ
ਹੁਕਮ ਸੇ ਸਤਗੁਰ ਬੋਲਧਾ ਹੁਕਮ ਹੀ ਹੁਕਮ ਪਹਚਾਨ

ज्ञान गुरु का हृदय से न भूलो
 ये भुलाने के काबिल नहीं हैं
 बड़ी मुश्किल से नर तन मिला है
 यह गंवाने के काबिल नहीं है

1. चोला अनमोल तुझको मिला है
 जिसमें जीवन का फूल खिला है
 श्वास गिन-2 के तुझको मिला है...
 ये गंवाने के काबिल नहीं हैं
2. बात मानो तो बिल्कुल सही है
 आत्मा में ही शान्ति सच्ची है
 जिसको आत्मा का बोध नहीं है
 बुद्धिमानों के काबिल नहीं है.....
3. जिसने नर तन को पाकर कुछ न किया
 अपना जीवन व्यर्थ गवां ही दिया
 जिस मुख से नाम न उचरा
 मुँह दिखाने के काबिल नहीं है.....
4. जिसने हीरा जन्म ऐसा पाकर
 खोज अपनी न की मन लगा कर
 भिक्षु सन्यासी बन मन न जीता
 संत कहाने के काबिल नहीं है.....
 नी लौका नू मैं दसदी फिरा
 ए गुरु मेरा भगवान है.....



अखियों करो दर्शन, सतगुरु आये
सतगुरु आए मेरे भाग्य जगाए....

मैं मर जावाँ, मेरिया जीवन अखिया
ऐ अखियाँ गुरु दर्शन लई रखियाँ।

ऐना अखियाँ तो मैं जिंद जान वाराँ
..... मैं गुराँ नू निहाराँ।

ऐना अखियाँ ने कर्म बनाया
जग दा वाली अज साडे घर आया।

दुनिया नू वेख-वेख थक गईयाँ अखियाँ
दर्शन कीते अज, रज गई अखियाँ।

आँखें बंद करूँ या खोलूँ
दर्शन तेरा ही पाऊँ

जैसे लहरें नदिया संग,
हंस खेल सागर मिल जाए
ऐसे ही मेरे सदगुरु प्यारे
प्रभु से मुझे मिलाये।

जैसे पानी दूध संग
घुल मिल एको हो जाए
ऐसे ही मेरे सतगुरु प्यारे,
प्रभु से एकाकार करायें।

जैसे ज्योति दीपक संग
ऊपर की ओर उठ जाए
ऐसे ही मेरे सतगुरु प्यारे
जीव से ब्रह्म बनाये।

इबादत कर, इबादत करन दे नाल गल बनदी ए,
किसी दी अज बनदी ए, किसी दी कल बनदी ए।

ऊँची सोच सिर नीवाँ, यार तू क्यों
ओ ये सागर जिन्हा गहरा, उन्हीं ही फल लगदी ए।

जो अहं करदा है, वे इक दिन खाक हो जाना
तेरे तो जानवर चंगे, जिन्हा दी खल बनदी ए।

के पीतल ओ वी है जिसदी हथियार बनदे ने,
पर वो असली पितल, जो मंदिर दा टल बनदी ए।

जेकर मुश्किलाँ आवन तेरे रस्ते, तू डोली न,
के मुसीबत ही दुखाँ दा हल बनदी ए।

इक बारी दिल नाल तू अरदास ताँ कर दे,
के वेखी फेर तेरी गल उसी पल बनदी ए।

इन्हा रस्तयाँ तैनू बंदेवा पार नहीं लाना,
ओही पगड़ंडी फड़ जेड़ी गुराँ दे घर जांदी ए।

ऐ हवा ले चल मुझे साईं की नगरी में

ऐ हवा ले चल मुझे सतगुरु की नगरी में।

उलझ कर मैं ना रह जाऊँ कहीं माया की नगरी में

घटा अब तो उड़ा ले चल मुझे घनधोर बदली में

मैं बन कर बूँद जब बरसूँ वहीं साईं की नगरी में

ऐ हवा ले चल मुझे साईं की नगरी में।

तेरा एहसान मैं मानूँ उड़ाकर मुझको तू ले जा

पड़ूँ मैं साईं के चरणों में मुझे बादल के संग ले जा

कहीं यूँ ही ना रह जाऊँ मैं माटी की नगरी में

ऐ हवा ले चल मुझे साईं की नगरी में।

मुझे मोती नहीं बनना जो मुँह में सीप के जाऊँ

मैं बरसूँ तो वहीं बरसूँ मधुर सतगुरु की नगरी में

ऐ हवा ले चल मुझे साईं की नगरी में।

उलझ कर मैं ना रह जाऊँ कहीं माया की नगरी में

ऐ हवा ले चल... ऐ हवा ले चल... ऐ हवा ले चल।

ऐसी पोशाक मेरे थार ने पहनाई है
जर्रे-जर्रे में तेरी शक्ल नजर आई है
मैं बार-बार यही सोचता हूँ रह रह कर
मैं क्या था और मुझे क्या बना दिया तुमने। ऐसी....

ये क्या सिखा दिया है, तुमने मेरी नजर को
सजदा कर दिया, तुमने मेरी नजर को
पहले तो चूमता था, पर्दे को मैं नजर से
अब चूमने लगा है, ये पर्दा मेरी नजर को। ऐसी....

दिल में, जिगर में आँख में बस तू ही तू रहे
इसके सिवा न और कोई आरजू रहे
मेरा सनम हमेशा मेरे रूह बरू रहे
जनत है मेरी रूह को तूने जो बक्षा दी
मेरे दिल में ऐ खुदा बस तू ही तू रहे। ऐसी....

गैर मुमकिन है तेरा मुझसे अलग हो जाना
तेरी तस्वीर मेरे दिल में उत्तर गई है। ऐसी....

कौन-सा काम तेरे जात ने पूरा न किया
तेरी नसीहत मेरे - हर हाल में काम आई है। ऐसी....

दुनिया सलाम करती है, हैरत की बात है
मैं कुछ भी नहीं, सब तेरी रहमत की बात है। ऐसी....
[5]

ऐसा माँग गोविंद से
 प्रीत सत्संग की, संग साधु का
 हरि नाम जप होये परम गते।
 हंरि की पूजा, आत्म शरणा
 ओहि चंगा जो प्रभु जिओ करना।
 ऐसी....

सफल होये ऐ मानव देहि
 जाको सतगुरु कृपा करे ही
 ऐसी...

अज्ञान भ्रम बिन से दुख डेरा
 जाके हृदय बसे गुरु पैरा
 ऐसी...

साध संग रंग प्रभु ध्याया
 कहो नानक तिन पूरा पाया
 ऐसी...

प्रीत सत्संग की, संग साधु का
 हरि नाम जप होये परम गते।
 ऐसी...

क्या कहें कौन-सी दौलत है गुरु,
मेरा जीवन, मेरी दुनिया, मेरी जन्त है गुरु।

बनाया इसी ने जीवन हमारा
अंग-अंग में है इसी का ही साया
साया ही नहीं, काया है मेरी
उपकार है इनका श्वासों पर,
मेरी बरकत, मेरी पूजा है गुरु, मेरा...

हम सबको इक प्यार से सींचा
ना कोई ऊँचा, ना कोई नीचा
महिमा ही नहीं, गरिमा है तेरी
करे प्रेम शमा संग परवाना
जन्मों-जन्मों की इबादत है गुरु, मेरा...

अंश में सारी सृष्टि समेटी
सुख-दुख को सम करके दिखाया
आँचल के तले, कई जीव पले
वो नर नहीं, नारायण है,
शब को शिव करने की ताकत है गुरु, मेरा...

क्या जाने-जाने दम कोई को यार
क्या जाने दम कोई-कोई

अपने अंदर साजन मिलया,
खुशियाँ भर-भर सोई,
उठ बाहर मैनू नजर न आवे
मैं ढूढ़न शहर सबोई-सबोई। क्या...

चोले अंदर जो कोई बोले, यार ताँ मेरा सोई
जिदे नाल मैं नेहा लाया, मैं भी जोगन होई।

बुल्लेशाह नू शाह इनायत, शौक शराब बितोई
मैं भी पीवन मस्त जो थीवन,
साफो साफ जो होई।

सपने अंदर सेज सजाई, प्रीतम संग मैं सोई
प्रीतम ने मैनू अंग लगाया, सुध-बुध सारी खोई।

कागा सब तन खाइयो,
 मेरा चुन-चुन खाइयो माँस,
 दो नैना मत खाइयो,
 इन्हें पिया मिलन की आस,
 नी मैं जाना, जाना जोगी दे नाल।

राँझा-राँझा करदी नी, मैं
 आपे राँझा होई,
 राँझा मैं विच, मैं राँझे विच,
 होर ख्याल न कोई, नी मैं जाना...

हाजी लोग मब्के नू जाँदे,
 मैं जाना तख्त हजारे,
 जित वल यार उत वल काबा
 भाँवे खोल किताबाँ चार,
 नी मैं...

गल सुन मनवा मेरे, वे सतगुरु अंग-संग तेरे
वे लाई चरणी तेरे।

वे गुरु मेरे हीरे मोती, के उस थाह जगदी ज्योति
वे दर्शन पांदे लोकी।

वे गुराँ दे दर ते जाइये, ते चरणी शीष झुकाइये
वे रब नू सामने पाइये।

वे गुराँ दियाँ ऊचियाँ थावाँ, ते संगताँ देन दुवावाँ
वे गुराँ दीयाँ मेहराँ पावाँ।

वे गुरु मेरे अंतर्यामी, के सच्चे मन नाल ध्यावीं
वे गुराँ दीयाँ मेहराँ पावीं।

वे ओ थाँ करमाँ वाली, के जिथे संत पधारे
वे महिमा रब दियाँ गावें।

गुरु ज्योत से ज्योत जगाए,
हर रूप में आए नारायण-नारायण, हरि ओम...

गुरु करना कल्याण ही जाने,
जाति कुल और भेद न जाने
हर सत्य को वो अपनाए, हर रूप में...

अविद्या मिटे गुरु वचनों से
आनंद अनुभव हो दर्शन से
हर घट में अलख जगाए, हर रूप में...

योग क्षेम का भार उठाए
अपना सुख और चैन लुटाए
हर जीव को ब्रह्म बनाए, हर रूप में...

साथ न छोड़े, हाथ न छोड़े
झूठी कल्पना बंधन तोड़े
साईं सम रहना सिखलाएँ, हर रूप में...

शरणागत हो कुछ नहीं करना
गुरु वाणी में जीना मरना
साईं अपना लक्ष्य बनाए, हर रूप में...

गुरुदेव मेरे-घर आए, मिल गईयाँ मौज बहाराँ,
मैं क्यों न वारी जावाँ, मिल गईयाँ मौज बहाराँ।

ऐदी मीठी-मीठी वाणी, ऐदा रूप है नूरानी,
ऐदा मुखड़ा ऐवें चमके,
जींवे चमके चन्न असमानी। मैं...

ऐदे बचनाँ उत्ते चलके, मैं जीवन सफल बनावाँ,
नाल साध संगत विच बैके,
मैं भव सागर तर जावाँ। मैं क्यों...

मैं दर तेरे ते आवाँ, मुँह मंगियाँ मुरादाँ पावाँ,
तेरा दर्श मनोहर पाके,
मैं दिल दा हाल सुनावाँ। मैं क्यों...

मैं इक वर तेरे तो मंगां, मेरे सतगुरु दिलबर जानी
मैंनूँ चरणाँ विच रख लो,
जद तक मेरी जिंदगानी। मैं क्यों...

ऐ ऊच्चे सिंहासन सजदा, ऐनू वेख के मन नहींयो रजदा,
तेरे दर ते आके जमाना,
है खाली झोलियाँ भरदा। मैं क्यों...

चरणाँ विच लाया ए, चरणाँ विच रूल जावाँ,
कीता है जो मेरे ते, उपकार न भुल जावाँ।

तू मान निमाने दा, बिगड़े दा सहारा तू
असी पल-पल भुलदे हाँ, ते बक्शनहारा तू
तेरी इक-इक तकनी दा, किस तरह मैं मुल पावाँ।

असी गलियाँ च रूलदे साँ, तुसाँ गल नाल लाया है
सुखाँ नू तरसदे साँ, तुसाँ तख्त बिठाया ऐ
पाके ऐ तेरी रहमत, किथे तैनू ना भुल जावाँ।

निकका जया कतरा हाँ, सागर दी थाह नहीं
नहीं मेरी कोई हस्ती, आंदा सत्कार नहीं
जीवन ऐ बना ऐसा, तेरे चरणाँ वे डुल जावाँ।

हर पल गुरु तेरे अगे, अरदास ऐ करदे हाँ
हुन तोड़ निभा देवीं, एक आस ऐ रखदे हाँ
सतगुरु तेरी याद कदी, भुलके वी न भुल जावाँ।

चारों पासे सुख होवे, किसे नू न दुख होवे
 तू आंवी बाबा नानका, ऐहो जईयाँ...
 ऐहो जईयाँ खुशियाँ ले आई बाबा नानका। ऐहो जईयाँ...

जिस घर छाँव नहीं, उस घर रुख होवे
 तार-तार जुड़ी रहे, न ही भुल-चुक होवे
 चारें पासे ठंड बरसाई बाबा नानका। ऐहो जईयाँ...

किसे घर विच बाबा, कोई न कलेश होवे
 सब घर विच तेरी पूजा ही हमेशा होवे
 ऐहो जया रस्ता वखाई बाबा नानका। ऐहो जईयाँ...

माला तेरे नाम वाली सबना ने फड़ी होवे,
 मीरा वांगू मस्ती वी, सबना नू चढ़ी होवे
 ऐहो जेई कोई कला वीं, वखाई बाबा नानका। ऐहो जईयाँ...

तेरे चरणाँ दे दाता, हर कोई करीब होवे
 ऐसा ना कोई होवे, जिनु प्यार न नसीब होवे
 सबनाँ दी झोली भर जाई बाबा नानका। ऐहो जईयाँ...

जिंदगी दे साज उत्ते, तेरा ही संगीत होवे
 रोम-रोम विच बाबा, वजदा संगीत होवे
 रुहाँ दी ए तार नू वजाई बाबा नानका। ऐहो जईयाँ...

जुड़ी रहे मेरी तार गुराँ नाल जुड़ी रहे

जद ताराँ नाल तार है जुड़दी
सुरति अपने घर वल मुड़दी
हो जांदा दीदार, गुराँ...

ताराँ नू तुसी जोड़ के देखो
सुरति अंदर मोड़ के देखो
तवानु मिल जाये करतार, गुराँ...

जद ताराँ नाल, तार है जुड़दी
अंदर ही अंदर मुरली वजदी
मधुर-मधुर झंकार, गुराँ...

सतगुरु इतनी कृपा करदो
ऐ झोली भक्ति नाल भरदो
मेरे सतगुरु दीन-दयाल, गुराँ...

जे इक तेरा प्यार, मेरे दिलदार, सावलयार
 मैंनू मिल जाए, मैं दुनिया तो की लैना।

सारे छोड़ सहारे तेरा दर लिया मल
 तेरे बिना न गुजारा, मेरी सखी सुन गल
 ये तेरा दरबार, ओ मेरे यार,
 मैंनू मिल जाए, मैं दुनिया तो की लैना।

तेरे चंद जये मुखड़े तो वारी-वारी जावाँ
 तेरे चरणाँ विच सर रख, मैं मर जावाँ
 ये तेरा दीदार, ओ मेरे यार,
 मैंनू मिल जाए, मैं दुनिया तो की लैना।

मेरी अंत समय विच फड़ लई बाँह
 मेरी इस वृद्धावन विच थोड़ी जई थाँह
 ये तेरा उपकार, ओ मेरे यार,
 मैंनू मिल जाए, मैं दुनिया तो की लैना।
 ओ बाँकेयार...

जे तू बेलिया, तन मन दे नाल सेवा करदा जावेंगा
 सतनाम् वाहेगुरु करदा भवसागर तो तरदाँ जायेंगा
 सतनाम् वाहेगुरु...

सेवा है स्वर्गी दी पौड़ी, कर सेवा लखवार
 बिना गुराँ दी सेवा कीते, नईयो मिलदा करतार
 जे बाबे दे, हुक्म नू साथी, मथे धरदा जावेंगा
 सतनाम् वाहेगुरु...

वेला बैके फेर न ऐंवे, तू माला दे मनके
 गुराँ दी महिमा तकनी है वे, तक ले चाकर बनके
 जे तू हानियाँ, गुरु चरणाँ विच, शीष झुकांदा जावेंगा,
 सतनाम् वाहेगुरु...

साला दे पिछो मिलयाई, सेवा दा ए वेला
 रब कहंदा हुन फिर लगनाई, संगता दा ऐ मेला
 जे झोली विच सेवा वाला, मेवा पांदा जावेंगा,
 सतनाम् वाहेगुरु...

अब्बल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत दे सब बंदे
 एक नूर से सब जग उपजे, कौन भले कौन मंदे
 जे झोली विच सेवा वाला, मेवा पांदा जावेंगा
 सतनाम् वाहेगुरु...

तुमको माँगते हैं तुमसे
 मेरे सत्तगुरु मुझको ये सौगात दे दो,
 तुमको...

तुमको ना माँगा तो माँगा भला क्या,
 तुमको जो माँगा तो बाकी रहा क्या
 माँगा तुमको, माँगा सारे जगत को। तुमको...

मीरा ने जैसे अपने श्याम को माँगा
 शबरी ने जैसे अपने राम को माँगा
 माँगे पल-पल, जैसे प्रेमी प्रीतम। तुमको...

भक्ते ने जैसे पल-पल फूल को माँगा
 पपीहे ने जैसे स्वाति बूँद को माँगा
 माँगे पल-पल, जैसे मछली जल को। तुमको...

तू माने या ना माने दिलदारा
 असाँ ते तेनू रब मनया
 दसो होर केड़ा रब दा द्वारा। असाँ ते तेनू...

तुझ बिन जीना भी क्या जीना
 तेरी चौखट मेरा मदीना
 नहीं और कहीं सजदा गवाराँ। असाँ ते तेनू...

जब इस तन दी खाक उड़ाई
 तब इस इश्क दी मंजिल पाई
 मेरी साँसों का बोले इक तारा। असाँ ते तेनू...

तू मिल्या ते मिल गई खुदाई वे
 हथ जोड़ के मैं कोल तेरे आई वे
 मैं ताँ मर जाँगी, ओ मैं ताँ मर जाँगी
 न अख मेरे तो मोड़ी। असाँ ते तेनू...

दिता जदो दा तू मेनू ऐ सहारा
 मैं ताँ भूल गई आँ जग सारा
 ऐ हो खुशी है मैनू बहुतेरी। असाँ ते तेनू...

दसों होर केड़ा रब ता द्वारा असाँ ते तेनू...
 ओ किते होर होवे रब दा द्वारा...
 ओ कहीं होर नहीं सजदा गवाराँ,
 नहीं और कहीं सजदा गवाराँ असाँ ते तेनू...

तू ही तू ही, तू ही तू ही
साहिब मेरा, साहिब मेरा।

तू सजन मेरा, तू प्रीतम मेरा
तू मेरा मीत, सखा हरि मेरा। तू...

तन-मन तेरा, धन वी तेरा
तू ठाकुर स्वामी, तू प्रभु मेरा। तू...

तू मेरा ओट, तू मेरा महारा
तू मेरी शोभा, तू मेरा आगा। तू...

तू मेरा दरिया, हम मीन तुम्हारे
तू मेरा ठाकुर, हम तेरे द्वारे। तू...

जहाँ देखूँ तुम ही बसना
निर्भो नाम जपे हर रसना। तू...

तू मेरा प्राण, प्राणाधार
तू मेरा जीवन, तू पालनहार। तू...

सिमर-सिमर, सिमर सुख पावाँ,
आठ पहर तेरे गुण गावाँ। तू...

तेरे दर आके गुरुजी, हरि ओम गाके गुरुजी,
रब नाल होइयाँ मुलाकाताँ, तेरे दर...

अंदर होवाँ बाहर होवाँ, गुरु मेरे नाल वे
सखियों मैं की दसाँ, ऐना दे कमाल वे,
के हुन ताँ शाम सवेरे, ने दिल विच सतगुरु मेरे,
करदे ने मेरे नाल बाताँ, तेरे दर...

मीरा वागूँ, धने वागूँ, नाल मेरे हंसदे
रोम-रोम विच मेरे सतगुरु वसदे,
के चरणा दी धूल जो पावे, कदी ना शीश उठावे
पा जाँदा कीमती सौगाताँ, तेरे दर...

कीमती है हीरा लब्धाँ, रखाँ साम्भ-साम्भ के,
कुर्बान ए रुह होंदी, सतगुरु आपने
के हुन ते तन मन वाराँ, के नाले जीवन संवाराँ
खुशी च गुजाराँ दिन राताँ, तेरे दर...

खिड़ियाँ ने रुहाँ दाता, इस दर आके
मन वी सकून पाये, दर्श तेरा पाके
के हर पल शुक्र मनावाँ, तेरी ही सिफ्ताँ गावाँ
प्यार दी होइयाँ ने बरसाताँ, तेरे दर...

जेड़ा तेरे दर ते आवे, अनमोल दात ओ पावे
उसदा वजूद ना रहदाँ – होश तो बेहोश हो जावे
दिल दी लगी न करदा, बंदगी दे मार्ग चलदा,
साहिब दीयाँ करदा गुलामाता, तेरे दर...

तेरे संग में रहूँगे ओ मोहना,
 तेरे संग में चलेंगे ओ मोहना।
 तुम दीपक बनो मैं बाती बनूँ
 ज्योति में मिलेंगे, ओ मोहना...

तुम चंदन बनो मैं पानी बनूँ
 मस्तक पर मिलेंगे, ओ मोहना...

तुम मोती बनो मैं धागा बनूँ
 माला में मिलेंगे, ओ मोहना...

तुम मुरली बनो मैं तान बनूँ
 अधरों पे मिलेंगे, ओ मोहना...

तुम वक्ता बनो, मैं श्रोता बनूँ
 सत्संग में मिलेंगे, ओ मोहना...

तुम ज्ञान बनो, मैं वाणी बनूँ
 सत्संग में मिलेंगे, ओ मोहना...

मैं गोपी बनूँ तुम श्याम मेरे
 रास रचेंगे, ओ मोहना...

तुम ओऽम् बनो, मैं सोऽम् बनूँ
 आनंद से रहेंगे, ओ मोहना
 तेरे बनके रहेंगे, ओ मोहना...

तुमको माँगते हैं तुमसे
 मेरे सतगुरु मुङ्गको ये सौगात दे दो,
 तुमको माँगते...

तुमको ना माँगा तो माँगा भला क्या,
 तुमको जो माँगा तो बाकी रहा क्या
 माँगा तुमको, माँगा सारे जगत को।
 तुमको माँगते...

मीरा ने जैसे अपने श्याम को माँगा
 शबरी ने जैसे अपने राम को माँगा
 माँगे पल-पल, जैसे प्रेमी प्रीतम।
 तुमको माँगते...

भवरे ने जैसे पल-पल फूल को माँगा
 पपीहे ने जैसे स्वाति बूँद को माँगा
 माँगे पल-पल, जैसे मछली जल को।
 तुमको माँगते...

दाता तेरा नाम लिखिया ऐ, मेरियाँ साहाँ ते
नाम लिखिया ऐ, दिल ते, निगाहाँ ते, दाता...

गुरु चरणा विच हर खुशी मेरी
आसरा तेरा जिंदगी मेरी
ऐहो चर्चा ऐ चाराँ दिशावाँ ते, दाता...

दीद तेरी जे सानूँ मिल जावे
दिल दी क्यारी बी, आपे खिल जावे
गौर फरमाई, मेरियाँ दुवावाँ ते, दाता...

गलतियाँ करके माफियाँ मँगियाँ
दितियाँ दाता ने, नेमताँ चँगियाँ
परदे पाये ने मेरयाँ गुनाहाँ ते, दाता...

सेवा संगता दी हरदम करदाँ रहाँ
मस्तक चरणाँ ते हरदम धरदाँ रहाँ
निगाहाँ पाई तू मेरियाँ, चावाँ ते, दाता...

दिलक्षण है तेरा नक्शा, सूरत वी निराली है
हो नजरें करम जिस पर, जो जाँ से बाली है।

क्या पेश करें तुमको,
क्या चीज हमारी है,
ये दिल भी तुम्हारा है, ये जाँ भी तुम्हारी है...

तुम पीर हमारे हो,
हम मुशिद तुम्हारे हैं,
हम लाख बुरे ही सही,
पर कहलाते तुम्हारे हैं
इक नजरें कर्म कर दो, क्या शान तुम्हारी है।

साये में तुम्हारे हैं,
किस्मत ये हमारी है,
हमें दिल में सजाये रखना,
आरजू ये हमारी है। दिलक्षण...

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात
 इस नशे दे सामने होर नशे सब मात
 नाम..., सतनाम..., वाहेगुरु... जी जपो....

हथ जोड़ के गुराँ तो, मँगा मैं खैरात
 दे दुनियाँ दे मालिका, नाम दान दी दात
 रात है उजली नाम जपके, उजली है प्रभात
 नाम खुमारी....., सतनाम.....

सुरत गुराँ दे चरणा च, चढ़दी जाये आकाश
 शब्द हजाराँ करन पये, दुख हजाराँ नाश
 कीर्तन, सिमरण करदेयाँ, जम तो मिले निजात
 नाम खुमारी....., सतनाम.....

गुरुवाणी विच सैंकड़ो, हैं सुखाँ दा वास
 वचन गुरु दे पढ़दैयाँ, जीवन आवे रास
 हल हो जावे मुश्किल जेकर, सतगुरु पावे झात
 नाम खुमारी....., सतनाम.....

नामदेव ने नाम दा पीता निर्मल नीर
 जपेया नाम कबीर ने, होई कबीर
 सतगुरु कृपा दे नाल बनदी, सबदी बिगड़ी बात
 नाम खुमारी....., इस नशे....., सतनाम.....

निराकार जया सजया सवारेया
 के तेरे विचो रब बोलदा
 रज लेंदिया ने अंखियाँ प्यासियाँ
 जदो दा ऐदा भेद खोलया, निराकार...

तेरे नाल सोहणा होर चंद नहियो सजना
 कोई तेरे तो वखरा पसंद नहियो सजना
 रब विट-विट तकदा है तेनूँ,
 जदोदा ऐदा भेद खोलया, निराकार...

दिल दी सितार उले गीत तेरा वजदा
 सारी कायनात तेरा करदी ऐ सजदा
 ओ आ जाँदियाँ ने हवा नू तरेलियाँ
 जदो दा सचो-सच बोलदा, निराकार...

जमाने दी जमीं तेरा भार नहियों सहार दी
 फिर भी ऐ मेहर तेरी, दुनिया नूँ तारदी
 ओ हार जाँदियाँ ने तुफाँ दियाँ ताकताँ
 तेरा नहियों वजूद डोलदा, निराकार...

रब-रब करदी रब दी हो गई, तेरे प्यार दे रंग विच खो गई
 तेरे रंग विच सुध-बुध खो गई, सुध-बुध खोकर कमली हो गई
 तेरे प्यार विच सब कुछ खो गई, लोकी कैंदे कमली हो गई
 सारी सुध-बुध मैनूँ भुल गई, जदों दा तेरा लड़ फड़या

पीता भी रहूँ और प्यास भी हो
कुछ ऐसी हमारी किस्मत हो।

परदे में छिपा हो लाख मगर
जलवा भी दिखाई देता रहे
इस आँख-मिचौली खेल में
कुछ दूर भी हो, कुछ पास भी हो
कुछ इश्क खुदा में चुप भी रहूँ
कुछ इश्क खुदा में बात भी हो
धरती तो बसे आँखों में मगर
प्यारा ये खुला आकाश भी हो। पीता...

मस्ती में महकता दिल भी रहे
और होश भरा उल्लास भी हो
मिट जाए मेरी हस्ती के निशाँ
मौजूद भी लेकिन पूरा रहूँ
ये घर ही मंदिर बन जाये
संसार भी हो, संन्यास भी हो। पीता...

जीवन का सफर यूँ ही बीते अगर
कुछ धूप भी हो कुछ छाँव भी हो

मिलता तो रहे चलने का मजा
मंजिल का सदा एहसास भी हो। पीता...

हो चुप्पी मगर गाती-सी हो
संगीत हो मौन में डूबा हुआ
रोदन भी जले कुछ मुस्कराता
कुछ अश्रु बहाता हास भी हो। पीता...

सनाटा कभी तूफान-सा हो
चुपचाप से गुजरे आँधी कभी
मझदार भी हो साहिल जैसा,
जो डूब सके, वो पार भी हो। पीता...

अतीत से होकर शून्य जहाँ
संकल्प सहित हम चलते चलें
लेकिन जब मंजिल मिल जाये
प्रभु कृपा हुई एहसास भी हो। पीता...

प्रभु के दर पे आना चाहता हूँ
 लौट के फिर न जाना चाहता हूँ
 मुझे इक बूँद अमृत की पिला दो
 मैं सब कुछ भूल जाना चाहता हूँ, प्रभु...

तेरी ही याद में मेरा जीवन बीते
 तेरे ही प्यार में मेरे आँसू निकले
 मैं सिर्फ तुझको रिझाना चाहता हूँ, प्रभु...

बंदा सच्चा मैं आशिक तेरे दर का
 करूँ सज्जदा हमेशा तेरे दर का
 मैं तन-मन-धन लुटाना चाहता हूँ, प्रभु...

लग्न गुरुवर मुझे ऐसी लगा दी
 प्रभु के चरणों में मुझको बिठा दो
 मैं घर वापिस न जाना चाहता हूँ, प्रभु...

करो अज्ञानता को दूर दिल से
 जला दो ज्योति ज्ञान की हृदय में
 मैं सीधे पथ पे चलना चाहता हूँ, प्रभु...

प्रेम जब अनंत हो गया, रोम-रोम संत हो गया,
देवालय बन गया बदन, संत तो महंत हो गया।

प्रेम...

पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पर पंडित भया न कोय,
ढाई अक्षर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होए।

प्रेम...

कागा सब तन खाइयो, मेरा चुन-चुन खाइयो मास,
दो नैना मत खाइयो, इन्हें पिया मिलन की आस।

प्रेम...

लाली मेरे लाल की, जिथ देखूँ तिथ लाल,
लाली देखन मैं चली, मैं भी हो गई लाल।

प्रेम...

हस-हस कुंत न पाया, जिन पाया तिन रोय,
हसी खेड़े पिया मिले, तो कौन सुहागन होय।

प्रेम...

प्रेम हमारी साधना है, प्रेम हमारा पंथ है,
जो भरा हो प्रेम से, वो ही सच्चा संत है।

प्रेम मंदिर, प्रेम मूरत, प्रेम ही भगवान है,
प्रेम ही के थाल में, सब पूजा का सामान है
प्रेम दीपक, प्रेम बाती, प्रेम पावन मंत्र है
जो भरा हो प्रेम से, वो ही सच्चा संत है।

प्रेम के बल पे टिके, यह धरती आसमान है
रटें अक्षर सीखा जिसने, उसका रूप महान है
प्रेम की महिमा सनातन, आदि है न अंत है
जो भरा हो प्रेम से, वो ही सच्चा संत है।

वेद हो या वीर वाणी, रामायण या गीता हो,
वो ना समझेगा इसे, जो प्रेम से अंजान हो,
प्रेम का जो पाठ पढ़ाये, वो ही सच्चा ग्रंथ है,
जो भरा हो प्रेम से, वो ही सच्चा संत है।

प्रीतम मतवाले हो, भगताँ दी आत्मा दे,
 तुसी रखवाले हो।
 बस रूप बटाया ऐ, सजना,
 गोविंद गोकुल दा, सतगुरु बन आया है।
 मेरे मीत मेरे सजना, हाणियाँ,
 विनती कराँ ऐहो हर श्वाँस विच तुसी बसना।
 कुछ ऐसा कर जावाँ माहिया,
 मेरेया साहिबा दे, चरणाँ च ही मर जावाँ।
 बस इश्क तेरा ही रहे,
 नजराँ विच तू ही रहे, रूह मेरी ऐहो कहे।
 जनत सानू मिल गई ए, माहिया,
 तेनूं पाके मेरे साहिबा, रूह मेरी खिल गई ऐ।
 तेरी प्रीत प्यारी ऐ,
 तेरे उत्तों मेरे हाणियाँ, रूह जांदी वारी ऐ।
 ऐ रहमत तेरी है - सजना,
 पीड़ मेरी तेरे इश्क दी, जागीर ऐ तेरी ऐ।
 दीवा बलदा बनेरे ते, हाणियाँ,
 तेरी गली मैं फिरदा, वे मैं आशिक तेरे ते।
 पींगा प्यार दी पावाँगे प्रीतमा,
 हुण असी मिल गए हाँ, गीत प्रेम दे गावाँगे।

बहुत जन्म बिछड़े थे माधव (माधो)
एह जन्म तुम्हारे लेखे।

हम सर दीन दयाल न तुम सर
अब पतियार क्या कीजै। बहुत...

वचनी तौर मोर मन माने
जन को पूरन दीजे। बहुत...

हठ बलि जाऊँ, रमैव्या कारने
कारण क्वल अबोल। बहुत...

कह रविदास आस लग जीवो
चिर भयो दर्शन देखे। बहुत...

बार-बार बोलो ओम, हर पल बोलो ओम
ओम ही ओम है, शांति का सार, बार-बार...

जीवन है कुछ पल का, वृथा यूँ न गवाँ
इवाँसों की ये लड़ियाँ, प्रेम के दीप जला
ऐसी हो मेरी उसको पुकार, बार-बार...

भूल हुई जो तुझसे, सपना-सा उसको जान
मान न मान ओ प्राणी, तू तो है भगवान
ऐसा है मेरे गुरु का ज्ञान, बार-बार...

सत्तगुरु चरणों में आके, अपना शीश झुका
तेरे अंदर ज्योति, उसको तू आज जगा
फिर तू बनेगा, शाहों का शाह, बार-बार...

साफ कर दिल का वर्पण, फिर होगा दीदार
ज्योति जगेगी अपरम्पार, बार-बार...

ऐसी हो मेरी...
ऐसा है मेरे गुरु...
फिर तू बनेगा...

मेरा जीवन तेरी शरण
 सारे राग-विराग हुए अब
 मोह सारे त्याग हुए अब
 एक यही मेरा वंदन, मेरा जीवन...

अविरत रहा भटकता अब तक
 भटकूँ और अकेला कब तक
 पालूँ केवल तुझको ही माँ
 एक यही है मेरी लग्न। मेरा...

तेरे चरणों पर हो अर्पण
 मेरे जीवन के गुण अवगुण
 सारी व्यथाएँ दूर करो माँ
 हो कुसुमित मेरा नंदन। मेरा...

मेरी हीरिये फक्कीरिये नी सोनिये
तेरी खुशबू नशीली मन मोहनिये

याद आवे तेरी, जदो देखाँ चंद मैं
तू ही दिसे जदो, अखाँ कराँ बंद मैं
मैंनू लगे राधा तू ते लाल नंद मैं
काश तैनू वी होवाँ ऐदा पसंद मैं
कदो नींद तो जगाया नी परोनिये, तेरी...

देख गल तेरी करदे ने तारे वी
नाले मेरे बल करदे ने इशारे वी
ऐही यार मेरे, ऐही ने सहारे नी
पर चंगे तेरे लगदे नी लारे नी
सानू राहाँ च ना रोल, लारे लोनिये, तेरी...

फेढ़ा पाया ऐ प्यार वाला जाल नी
जिथे जावाँ तेरी याद जाँदी नाल नी
ऐं ता रोग मैं अबलङ्घा लया पाल नी
शाम पैंदे ए देंवा दीवे बाल नी
ऐकी किता वेख दिलदा तू हाल नी
मेरे मन अरजोई अग लोनिये, तेरी...

मैं ताँ चिड़ियाँ नू पुछाँ कुज बोलो नी
कदो आओ मेरी हीर भेद खोलो नी
तुसी जाओ, सधी जाओ, आनो टोली नी
जाके फुलाँ वाला बाग फरोलो नीं
ओ गुलाब दियाँ पतियाँ च होनी ए, तेरी...

पहले भोले बन चैन तू चुरा लिया,
फिर नींव नू ख्वाबाँ दे लेखे ला लिया,
साडा दुनिया तो साथ वी छुड़ा लिया,
फिर झलक जयी देके मुँह घुमाँ लिया,
किवें पुनाँ जजबात साढे पोणियें, तेरी...

ऐ दिल जो गांदा ए ऐनूं गान दे
ऐ ताँ हो गया शुदाई रौला पान दे
बस प्यार वाली छत्तरी तू तान दे,
बाकी रब जो करेंदा, करी जान दे,
मैनू दिल च वसा ले, पटोनिये, तेरी...

मेरे साहिब तू मैं माण निमाणी
 अरदास करीं प्रभु अपने आगे
 सुन-सुन जीवाँ तेरी वाणी, मेरे साहिब...

तुद चित आवे, महा आनंदा
 जिस बिसरे सो मर जाई
 दंयाल होवे जिस ऊपर स्वामी
 सो तुद सदा ध्याई, मेरे साहिब...

चरण धूल तेरे जन की होंवा
 तेरे दर्शन को बल जाई
 अमृत वचन हृदय उर धारी
 लो कृपा ते संग पाई, मेरे साहिब...

अंतर की गत तुद पे सारी
 तुद जेवड अवर न कोई
 जिसनूँ लाये, लहे सो लागे
 भगत तुम्हारा सोई, मेरे साहिब...

दुई कर जोड़ माँगू इक दाना
 साहिब तुठे पावाँ
 श्वाँस-श्वाँस नानक आराधे, (आठ पहर गुण गावाँ)

मेरे सच्चे साहिबा, सब तेरा ही तेरा
 सब कुज तेरा सच्चे साहिबा
 इक तू है मेरा। मेरे...

तू ते कोट ब्रह्मण्ड दा मालिक
 सानू तेरा सहारा,
 तेरा हुक्म सदा सिर रखिए,
 तेरा हुक्म प्यारा
 तेरी रोशनी पाके साहिबा
 दूर होया है अँधेरा। मेरे...

आपे मिटाँदा आपे बनाँदा
 तेरा खेल निराला
 तेरी करनी सदा भली है
 तू जग दा रखवाला
 ऐसी कृपा करो मेरे साहिबा
 रहे सदा ही सवेरा। मेरे...

इस जीवन दो आली तू है
हर बूटा तैनू प्यारा
हर बूटे विच रस है इको
इको सुजनहारा
तेरी खुशबू सदा ही महके
तू ही करे बसेरा। मेरे...

रे मन ऐसा करो संयासा
मन विच साहिब समाइये
तेरी छत्र-छाया के तले
सिमरण जीवन बिताइये
तेरी ओट सदा सुखदाई
तुझ विच सुख घनेरा। मेरे...

ये कैसी कसक तूने, मेरे दिल में जगा दी है
 सोचा था प्यास बुझे, तूने और बढ़ा दी है
 सतगुरु को मोहब्बत है, लेकिन वो छुपाते हैं
 ये बात मुझे उनकी नजरों ने बता दी है।
 ये कैसी...

मैखाने क्यूँ जायें, हम पीकर क्यूँ आएँ
 मेरे सतगुरु प्यारे ने, नजरों से पिला दी है।
 ये कैसी...

तकदीर बदलने का, ये ढंग ही निराला है
 मेरे मीत, मेरे सजना, तूने रुह जो खिला दी है।
 ये कैसी...

तेरी वाणी सुनने को, मेरा दिल जो तरसता है
 ये प्रीत भी क्या दाता, तूने चीज बनाई है।
 ये कैसी...

जब नजर मिली मेरी, मदहोश हुआ मैं तो
 अब तक न संभल पाया, तूने इतनी पिला दी है।
 ये कैसी...

बडे मेरे साहिबा, गहर गंभीरा, गुणी गहीरा
कोय न जाने तेरा किता केवड चीरा।

सुन वडा आखे सब कोय, एवड वडा डीठा कोय
कीमत पाये न कहया जाये
कहने वाले तेरे रहे समाये। बडे...

सब सूरत में सूरत समायी
सबकी मत मिलके मत माई
ज्ञानी ज्ञान गुरु-गुरु गाई
कहना जाई तेरी तिल वडियाई। बडे...

सिद्धाँ पुरखाँ कीयाँ वडियाईयाँ
सब सत् सब जप सब वडियाईयाँ
तुझ बिन सिद्धि किने ना पाइयाँ
कर्म मिले नाहि ठाकुर माइयाँ। बडे...

आखण वाला क्या बेचारा
सिफती करे तेरे गुण गाया
जिस तू देवे तिसे क्या चारा
नानक सच संवारन हारा। बडे...

हर श्वास में हो स्थिरण तेरा,
 यूँ बीत जाये जीवन मेरा,
 ऐसा सुंदर न्यारा-प्यारा जीवन हो मेरा
 वंदना तेरी में बीते साँझ और सवेरा, यूँ...

नैनों की खिड़की से तुझे पल-पल मैं निहारूँगी
 मन में बिठाकर तेरी आरती उतारूँगी
 डाले रहूँ तेरे चरणों में डेरा। यूँ...हर...

प्यार हो सत्कार हो, एतबार बस तुम्हारा हो
 सुख-दुख आयें जायें, तेरी याद का सहारा हो
 हो आ, पे तेरा ही डेरा। यूँ...हर...

मोहनी मुस्कान वाला, मेरे दिल का प्यारा है
 मेरे सिर का ताज, मेरी आँखों का तारा है
 सबमें निहारूँ रूप मैं तेरा। यूँ...हर...

हरि ओम, हरि ओम गाइये
 किना सोहणा मुख है दित्ता
 गुरु दी महिमा गाइये...हरि ओम...
 किनी सोणी अखाँ दितियाँ
 गुरु का दर्शन पाइये
 किने सोणे कान है दित्ते
 अनहद नाद सुनाइये
 किने सोणे पैर है दित्ते
 गुरु दे द्वारे जाइये
 किने सोणे हथ है दित्ते
 गुरु दी सेवा करिये
 किना सोणा मन है दित्ता
 ज्योत से ज्योत जगाइये
 किना सोणा हृदय दित्ता
 गुरु नू विच बिठाइये
 किना सोणा जीवन दित्ता
 जीवन मुक्ति पाइये
 किनी सोणी श्वाँसा दितियाँ
 सिमर-सिमर सुख पाइये
 किनी सोणी संगत दित्ती
 ज्योत से ज्योत जगाइये
 किना सोणा सतगुरु दित्ता
 सदके-सदके जाइये।